प्रकाशक
श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन साहित्योद्धारक फंड-कार्यालय
अमरावती (बरार)

मुद्रक-
टी एम् पाटील,
मैनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती (बरार)

THE

ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. II

SATPRARŪPAṆĀ

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, M.A., LL.B.

C. P. Educational Service, King Edward College, Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra Siddhanta Shastri ✲ Pandit Hiralal Siddhanta Shastri Nyayatirtha

With the cooperation of

Pandit Devakinandana Siddhanta Shastri ✲ Dr. A. N. Upadhye M.A., D.Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,

AMRAOTI (Berar).

1940

Price rupees ten only

प्राक् कथन

श्रीधवलसिद्धान्त प्रथम विभागके प्रकाशित होनेसे हमें जो आशा थी, उ
आने पूर्ति हुई। हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष और संतोष है कि मूडबिद्री
की हुई शास्त्राकार और पुस्तकाकार प्रतियोंके वहां पहुंचनेपर उन्हें विमानमें विराज
जुलूस निकाला गया, श्रुतपूजन किया गया और सभा की गई, जिसमें वहांके प्रमुख स
विद्वानोंद्वारा हमारी संशोधन, सम्पादन और प्रकाशन व्यवस्थाकी बहुत प्रशंसा की गई
मत प्रगट किया गया कि आगे इस सम्पादन कार्यमें वहांकी मूल प्रतिसे मिलानकी सुवि
जाना चाहिये, नहीं तो ज्ञानावरणीय कर्मका बंध होगा। यह सभा मूडबिद्री मठके भट्टा
श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्यके ही सभापतित्वमें हुई थी।

उक्त समारंभके पश्चात् स्वयं भट्टारकजीने अपना अभिप्राय हमें सूचित किया और
मिलानकी व्यवस्थादिके लिये हमें वहां आनेके लिये आमंत्रित किया। इसी बीच गोम्मटस्वाम
महामस्तकाभिषेकका सुअवसर आ उपस्थित हुआ। यद्यपि सुविधा न होनेके कारण हम उ
महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये नहीं जा सके, किन्तु हमारे कार्यमें अभिरुचि रखने और सहाय
पहुंचानेवाले अनेक श्रीमान् और धीमान् वहां पहुंचे और उनमेंसे कुछने मूडबिद्री जाकर धवला
महाबंधकी भी प्रतिलिपि कराकर प्रकाशित करानेके लिये भट्टारकजी व पंचोंकी अनुमति प्राप्त
कर ली। समयोचित उदारता और सद्भावनाके लिये मूडबिद्री मठका अधिकारी वर्ग अभिनन्दनीय
है और उस दिशामें प्रयत्न करनेवाले सज्जन भी धन्यवादके पात्र हैं। अब हम उस सम्बन्धमें
पत्र व्यवहार कर रहे हैं, और यदि सब सुविधाएं मिल सकीं, जिनके लिये हम प्रयत्नशील हैं,
तो हम शीघ्र ही मूडबिद्रीके समस्त धवलादि श्रुतोंकी प्रतियोंकी (फोटोस्टाट मशीन या माइक्रो
फिल्मिंग मशीन द्वारा) प्रतिलिपियां कराकर उनका चिरस्थायी उद्धार करनेमें सफलीभूत
हो सकेंगे। इस महान् कार्यके लिये समस्त जैन समाज और साहित्यप्रेमी सज्जनोंकी सहानुभूति
और क्रियात्मक सहायताकी आवश्यकता है, जिसके लिये हम समाजभरका आह्वान करते हैं।

प्रथम विभागका प्रकाशन ता. ८ नवम्बर सन् १९३९ को किया गया था। तबसे आज
ठीक आठ मास हुए हैं। [illegible] द्वितीय विभागका सम्पादन [illegible] होकर मुद्रण भी
पूरा हो रहा है, यद्यपि [illegible] कठिनाइयां अनेक उपस्थित होती रहती हैं। [illegible]
[illegible] और [illegible] प्रयत्न करते हुए [illegible] है। [illegible]
रही तो आगे प्रायः [illegible] भागोंका प्रकाशन करनेका प्रयत्न किया जायगा।
इस [illegible] [illegible] [illegible], अतः

इस विभागके संशोधनमें भी हम अमरावती जैनमन्दिरकी प्रतिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्त भवन तथा कारंजाके महावीरब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका लाभ मिलता रहा तथा सहारनपुरकी प्रतिके जो कुछ पाठभेद पहलेसे नोट थे उनसे लाभ उठाया गया है। अतएव इन सब प्रतियोंके अधिकारियोंके हम अनुगृहीत हैं।

श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी और जैन साहित्योद्धारक फंडकी ट्रस्ट कमेटीके अन्य सब सदस्योंका इस कार्यको प्रगतिशील बनाये रखनेमें पूरा उत्साह है, और इस कारण हमें व्यवस्थामें किसी विशेष कठिनाईका अनुभव नहीं हुआ, बल्कि आगे सफलताकी पूरी आशा है।

यूरोपीय महासमरके कारण इस खंडके लिये यथेष्ट कागज आदिका प्रबंध करनेमें बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई, जिसको हल करनेमें हमारे निरन्तर सहायक पंडित नाथूरामजी प्रेमीका हमपर बहुत उपकार है।

जैनसाहित्यकी कदर करनेवाले मर्मज्ञ पाठकोंने प्रथम जिल्दका जो स्वागत किया है और उसके लिये हमारी ओर जो प्रशंसाके भाव व्यक्त किये हैं, उसके लिये हम उनकी गुणग्राहकताके कृतज्ञ हैं। पर हम यह फिर भी व्यक्त कर देते हैं कि इस महान् कठिन कार्यमें यदि हमें सचमुच कुछ सफलता मिल रही है तो उसका श्रेय हमें नहीं, किन्तु समाजकी उस सद्भावना और समयकी प्रेरणाको है जो उचित कालमें उचित कार्य किसी न किसीसे करा लेती है। इस सम्बन्धमें हमारी तो, महाकवि कालिदासके शब्दोंमें, यही धारणा है कि—

सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः सम्भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।
किं वाभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्॥

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती
१५।७।४०

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

of the soul qualities words have frequently been used without inflections In fact abbreviated forms with dots are also met with all over in the Mss but since the Mss used by us were not uniform on the point we preferred to give the fuller forms and have also taken the liberty to complete the enumerations where omissions in the Mss were obvious But we have not attempted to make the words inflected for fear of changing the entire character of the authors style which is so natural in its own way under the circumstances

The number of older verses found quoted in this volume is thirteen all in Prakrit One of them (No 2[illegible]8 on page 783) is said to have been taken from 'Pindha' a work which is otherwise unknown

As before I have, in this brief survey, avoided details which the interested reader would find in the Hindi translation.

---

१ ताडपत्रीय प्रतिके लेखनकालका निर्णय

सत्प्ररूपणाके अन्तकी प्रशस्ति

धवल सिद्धान्तकी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियोंमें सत्प्ररूपणा विवरणके अन्तमें निम्न कनाडी पाठ पाया जाता है[१]—

सवणगोलभावनद पावनभोगनियोग वाकतिय चित्तवृत्तियळवि मळळळन गरूत पदिदं गर्व पारिपालेव सोमनपसमदिनिसिद्धांतमुनींद्रचन्द्रतुरय बुधकरवपदमनन मवणमेगोसुरगुणगणक भेदबुद्धि अनन्तनोन[२] वाक्कांतेय चित्तवल्लीय पदप्रिय[३]दर्पवुधाळि[४]हंसरोजांतररागरंजितदिन कुलभूषम[५]दिव्यसैद्धान्त मुनींद्रगुणवलयशोजगमसीमनहरु[६] सतत कालकायमतिसचरित दिनदिं दिनक्के धीर्य वडविदुरव विषम हमैमेयो लोकविद्वमोहदाह वबे वतु मुन्नुगिदे सचरित कुलचन्द्रदवसैद्धान्तमुनीन्द्रस्थ्रवयशोगवक्षंगमसीर्थ-महरू[७]

मैंने यह कनाडी पाठ अपने सहयोगी मित्र डाक्टर ए. एन्. उपाध्याय प्रोफेसर राजाराम कालेज कोल्हापुर, जिनकी मातृभाषा भी कनाडी है, के पास संशोधनार्थ भेजा था। उन्होंने यह कार्य अपने कालेजके कनाडी भाषाके प्रोफेसर श्री के. जी. कुन्दनगार महोदयके द्वारा करा कर मेरे पास भेजनेकी कृपा की। इसप्रकार जो संशोधित कनाडी पाठ और उसका अनुवाद मुझे प्राप्त हुआ, वह निम्न प्रकार है। पाठक देखेंगे कि उक्त पाठ परसे निम्न कनाडी पद्य सुसंशोधित-कर निकालनेमें संशोधकोंने कितना अधिक परिश्रम किया है।

१

सवणगोलभावनेय पावनभोगनियोग (वाणि) वा-
क्कांतेय चित्तवृत्तियोळविं मळ (विं गळ माइनो) गरू-
प तळद गळ मधुरपकजशोभितपद्मणदिनि-
द्धान्तमुनीन्द्रचन्द्रतुरय बुधकैरवचन्द्रमदनम् ॥ १ ॥

२

मवणमामरसद्गुणगणवविधिय मृदिगे चन्द्रनव वा-
क्कांतेय चित्तवल्लिगदरजमञ्जुधाळिहंसरो-
जांतररागरंजितमन कुलभूषणदिव्यसैद्धान्त
द्धांतमुनीन्द्रसुकंजयशोगवश्चजगमर्दीधेक्कनाद ॥ २ ॥

---

१ प्राप्त प्रतियोंमें इस प्रशस्तिमें अनेक पाठभेद पाये जाते हैं। यहां पर बहुमतानुसारी शुद्ध व अशुद्ध पाठ रखा गया है जिसका मिलान हमें मोडबिद्रीके अधिकाश व ... द्वारा ... हो सका। केवल हमारी अ प्रतिमें जो अधिक पाठ पाये जाते हैं व टिप्पणमें दिये गये हैं। २ अनन्तबाराम। ३ पदप्रियमदर्प। ४ मदर। ५ दिव्यतम। ६ हीर्घदरददस्ते। ७ महरूह।

शिष्य कुलभूषण और उनके शिष्य कुलचन्द्रका भी उल्लेख पाया जाता है। वह उल्लेख इसप्रकार है—

> अविद्धकर्णादिकपद्मनन्दी सैद्धान्तिकाख्योऽजनि यस्य लोके।
> कौमारदेवव्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तु सो ज्ञाननिधिः सधीरः ॥
> तच्छिष्यः कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रवारांनिधि-
> स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्मो महान्।
> शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः प्रभा-
> चन्द्राख्यो मुनिराजपण्डितवरः श्रीकुन्दकुन्दान्वयः ॥
> तस्य श्रीकुलभूषणाख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
> स्सद्वृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।

यहां पद्मनंदि, कुलभूषण और कुलचन्द्रके बीच गुरु शिष्य परम्पराका स्पष्ट उल्लेख है। पद्मनंदिको सैद्धान्तिक ज्ञाननिधि और सधीर कहा है। कुलभूषणको चारित्रवारांनिधि और सिद्धान्ताम्बुधिपारग, तथा कुलचन्द्रको विनेय, सद्वृत्त और सिद्धान्तविद्यानिधि कहा है। इस परम्परा और इन विशेषणोंसे उनके धवला-प्रतिके अंतर्गत प्रशस्तिमें उल्लिखित मुनियोंसे अभिन्न होनेमें कोई संदेह नहीं रहता। शिलालेखद्वारा पद्मनंदिके गुणोंमें इतना और विशेष जाना जाता है कि वे अविद्धकर्ण थे अर्थात् कर्णछेदन संस्कार होनेसे पूर्व ही बहुत बाल्यपनमें वे दीक्षित होगये थे और इसलिए कौमारदेवव्रती भी कहलाते थे। तथा यह भी जाना जाता है कि उनके एक और शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जो शब्दाम्भोरुहभास्कर और प्रथित तर्कग्रन्थकार थे।

इसी शिलालेखमें इन मुनियोंके संघ व गण तथा आगे पीछेकी कुछ और गुरु परम्पराका भी ज्ञान हो जाता है। लेखमें गौतमादि, भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्तके पश्चात् उसी अन्वयमें हुए पद्मनंदि, कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, उनके शिष्य बलाकपिच्छ, उसी आचार्य परम्परामें समन्तभद्र, फिर देवनंदि जिनेन्द्रबुद्धि पूज्यपाद और फिर अकलंकके उल्लेखके पश्चात् कहा गया है कि उक्त मुनीन्द्र सन्ततिके उत्पन्न करनेवाले मूलसंघमें फिर नंदिगण और उसमें देशीगण नामका प्रभेद हो गया। इस गणमें गोल्लाचार्य नामके प्रसिद्ध मुनि हुए। वे गोल्लदेशके अधिपति थे। किन्तु, किसी कारण वश संसारसे भयभीत होकर उन्होंने दीक्षा धारण करली थी। उनके शिष्य श्रीमत् त्रैकाल्ययोगी हुए और उनके शिष्य हुए उपर्युक्त अविद्धकर्ण पद्मनन्दि सैद्धान्तिक कौमारदेव, जो इसप्रकार मूलसंघ नंदिगणान्तर्गत देशीगणके सिद्ध होते हैं।

लेखमें पद्मनंदि, कुलभूषण और कुलचन्द्रसे आगेकी परम्पराका वर्णन इसप्रकार किया गया है —

कुलचन्द्रदेवके शिष्य माघनंदि मुनि हुए, जिन्होंने कोल्लापुर (कोल्हापुर) में तीर्थ स्थापित किया। वे भी राद्धान्तार्णवपारगामी और चारित्रचक्रेश्वर थे, तथा उनके अनेक शिष्य थे

सामन्त केदार नाकरस, सामन्त निम्बदेव और सामन्त कामदेव। माघनन्दिके शिष्य हुए-गंडविमुक्तदेव, जिनके एक छात्र सेनापति भरत थे, व दूसरे शिष्य भानुकीर्ति और देवकीर्ति। गंडविमुक्तदेवके सधर्म भूतकीर्ति त्रैविद्यमुनि थे, जिन्होंने विद्वानोंको भी चमत्कृत करनेवाले अनुलोम-प्रतिलोम काव्य राघव-पाण्डवीयकी रचना करके निर्मल कीर्ति प्राप्त की थी और देवेन्द्र जैसे विपक्ष वादियोंको परास्त किया था। श्रुतकीर्तिकी प्रशंसाके ये दोनों पद्य कनाडी काव्य पम्परामायणमें भी पाये जाते हैं। विपक्ष सैद्धान्तिकसे समय है उन्हीं देवेन्द्रसे तात्पर्य ने वि० सं०

११८

सद्धर्मकर्णिकामणिर्जिनपतेर्भव्यैकचिन्तामणि स श्रीमान् शुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तविद्यानिधिः ॥१॥

२

शब्दाधिष्ठितभूतले परिलसत्साहित्यसत्तमके (?)
साहित्यस्यधिकारमभिविरचिते (?) ज्योतिर्मये मण्डले ।
सद्रत्नत्रयमूलतत्त्वकलनो स्याद्वादहर्म्ये मुदा,
यो (?) देवेन्द्रसुराधिपैर्विविधैस्सन्निर्धिरःशुक्लु (?) तद् ॥ २ ॥

३

देवेन्द्रसिद्धान्तमुनीन्द्रपादपङ्केजभृङ्गः शुभचन्द्रदेवः ।
यदीयनामापि विनेयचेतोजात तमो दुर्मल समथः ॥ ३ ॥

४

परमजिनेश्वरविरचितवरसिद्धान्ताम्बुराशिपारगरेंद्री ।
धरे बरिगमुगु गुणगणधरर शुभचन्द्रदेवसिद्धान्तिकर ॥ ४ ॥

५

श्रीमज्जिनेन्द्रपदपद्मपरागभृङ्गः श्रीजैनशासनसमुद्धतवार्धिचन्द्रः ।
सिद्धान्तशास्त्रविहिताहितदिव्यवाणी धर्मप्रबोधमुकुरः शुभचन्द्रसूरिः ॥ ५ ॥

६

चित्तोद्भूतमदेभकन्दलनप्रोत्कण्ठकण्ठीरवो भव्याम्भोजकुलप्रबोधनकृते विद्वज्जनानन्दकृत् ।
स्थेयात्कुन्दहिमेन्दुनिर्मलयशोवल्लीसमालम्बन स्तम्भ श्रीशुभचन्द्रदेवमुनिप सिद्धान्तरत्नाकरः ॥ ६ ॥

७

कुवलयकुलबन्धुर्ध्वस्तमीहातमिस्रे विकसितमुनिवर्ये सज्जनानन्दवृत्ते ।
विदितविमलनानासत्कलान्वितमूर्तिः शुभमतिशुभचन्द्रो राजवद्राजतेऽयम् ॥ ७ ॥

८

दिग्वासिद्धान्तवर्णचक्रीश रत्नत्रयालङ्कृतचारुमूर्त ।
जीयाच्चिरं श्रीशुभचन्द्रदेवो भव्याब्जिनीराजितराजहंस ॥ ८ ॥

९

श्रीमान् भूपालमौलिस्फुरितमणिगणज्योतिरद्योतिताङ्घ्रि,
भव्याम्भोजातजातप्रमदकरनिधिस्सत्कलाधामयादि ।
दर्पाकन्दर्पदर्पप्रबलितगिलितस्तूर्णितश्चार्यशास्य ,
जीयाज्जैनाब्जभास्वाननुपमविनयो श्रीतसिद्धान्तदेव (?) ॥ ९ ॥

१०

जीयादसावनुपम शुभचन्द्रदेवो भावोद्भवोद्भवविनाशनमूलमन्त्र ।
निस्तन्द्रसान्द्रविबुधस्तुतिभरिपात्र त्रैलोक्यगेहमणिदीपसमानकीर्तिः ॥१०॥

११

मूर्तिश्शमस्य नियमस्य विभूषणाम क्षेत्रं श्रुतस्य यशसोऽनवजन्मभूमिः ।
भूविश्रुतभितवताम्बुरभोजकाननभानुधाविमसताच्छुभचन्द्रदेवः ॥११॥

३

भूलोकचैत्यालयचैत्यपूजा-व्यापारकृत्यान्यमनोऽनुरागी ।
स्वर्गीस्सुरश्रीति विलोक्यमाना पुण्येन लावण्यगुणेन यात्र ॥ १ ॥

४

आहारशास्त्राभयभेषजानां दात्रीयमत्र वर्णचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रियया मृदुत्व स्वस्थानमस्य प्रविवेश पार्श्वे ॥ ७ ॥

८

सद्धर्मतत्र कलिकालराजं निरस्य व्यवस्थापितधर्मतृष्या ।
तस्या जयस्तम्भनिभ शिलाया स्तम्भ व्यवस्थापयति स्म लक्ष्मी ॥ ८ ॥

लेखके अन्तमें उनके सन्यासविधिसे देहत्यागका उल्लेख इसप्रकार है—

श्री मूलसघद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर् गुड्डि सक वर्ष १०४२ नेय विकारि सवत्सरद फाल्गुण ब ११ बृहवार द दु सन्यासन विधियि देमियक्क मुडिपिदळु ।

अर्थात् मूलसघ, देशीगण, पुस्तकगच्छके शुभचन्द्रदेवकी शिष्या देमियक्कने शक १०४२ विकारिसवत्सर फाल्गुन ब ११ बृहस्पतिवारको सन्यासविधिसे शरीरत्याग किया ।

उक्त परिचय परसे समझ तो यही जान पडता है कि धवलाकी प्रतिका दान करनेवाली धर्मिष्ठा साध्वी देमियक्क ये ही होंगीं, जिन्होंने शक १०४२ में समाधिमरण किया । तथा उनके भतीजे भुजबलि× गगपेर्माडिदेव जिनका धवलाकी प्रशस्तिमें उल्लेख है उनके भ्राता बूचिराजके ही सुपुत्र हों तो आश्चर्य नहीं । उस व्रतोद्यापनके समय बूचिराजका स्वर्गवास हो चुका होगा, इससे उनके पुत्रका उल्लेख किया गया है । यदि यह अनुमान ठीक हो तो धवलाकी प्रति जो समवत मूडबिद्रीकी वर्तमान ताडपत्रीय प्रति ही हो और जो शक ९५० के लगभग लिखाई गई थी, बूचिराजके स्वर्गवासके पश्चात् और देमियक्कके स्वर्गवासके पूर्व अर्थात् शक १०३७ और १०४२ के बीच शुभचन्द्रदेवके सुपुर्द का गई, ऐसा निष्कर्ष निकलता है । पर यह भी समव है कि श्रीमती देमियक्कने पुरानी प्रतिकी नवीन लिपि कराकर शुभचद्रको प्रदान की और उसमें पूर्व प्रतिके बीच-बीचके पद्य भी लेखकने कापी कर लिये हों ।

प्रशस्तिके अतिम भागमें तीन कनाडाके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम पद्य 'श्री कुपण' आदिमें कोपण नामके प्रसिद्ध पुरकी कीर्ति और शेष दो पद्यों में जिन नामके किसी श्रावकके यशका वर्णन किया गया है । कोपण प्राचीन कालमें जैनियोंका एक बडा तीर्थस्थान रहा है ।

× भुजबलि गगपेर्माडि नरेशोंकी उपाधि पाई जाती है । देखो शिलालेख नं० १३८, १४२ ४९१, ४९४, ४९७

है। इनमेंसे चार खंडोंके सम्बधमें तो कोई मतभेद नहीं है, किन्तु वेदना और वर्गणा खंडकी सीमाओंके सम्बंधमें एक शंका उत्पन्न की गई है जो यह है कि " धवलग्रंथ वेदना खंडके साथ ही समाप्त हो जाता है-वर्गणाखंड उसके साथमें लगा हुआ नहीं है "। इस मतकी पुष्टिमें जो युक्तियां दी गई हैं वे संक्षेपतः निम्न प्रकार हैं—

१. जिस कम्मपयडिपाहुडके चौबीस अधिकारोंका पुष्पदन्त-भूतबलिने उद्धार किया है उसका दूसरा नाम 'वेयणकसिणपाहुड' भी है जिससे उन २४ अधिकारोंका 'वेदनाखंड' के ही अन्तर्गत होना सिद्ध होता है।

२. चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार भी नहीं है। एक अवान्तर अनुयोगद्वारके भी अवान्तर भेदान्तर्गत संक्षिप्त वर्गणा प्ररूपणाको 'वर्गणाखंड' कैसे कहा जा सकता है?

३. वेदनाखंडके आदिके मंगलसूत्रोंकी टीकामें वीरसेनाचार्यने उन सूत्रोंको ऊपर कहे हुए वेदना, बंधसामित्वविचय और खुद्दाबंधका मंगलाचरण बतलाया है और यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है उपलब्ध धवलाके शेष भागमें सूत्रकारकृत कोई दूसरा मंगलाचरण नहीं देखा जाता, इससे वह वर्गणाखंडकी कल्पना गलत है।

४. धवलामें जो 'वेयणाखंड समत्ता' पद पाया जाता है वह अशुद्ध है। उसमें पड़ा हुआ 'खंड' शब्द असंगत है जिसके प्रक्षिप्त होनेमें कोई सन्देह मालूम नहीं होता।

५. इन्द्रनन्दि व विबुधश्रीधर जैसे ग्रंथकारोंने जो कुछ लिखा है वह प्रायः किंवदन्तियों अथवा सुने सुनाये आधारपर लिखा जान पड़ता है। उनके सामने मूल ग्रंथ नहीं थे, अतएव उनकी साक्षीको कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

६. यदि वर्गणाखंड धवलाके अन्तर्गत था तो यह भी हो सकता है कि लिपिकारने शीघ्रता वश उसकी कापी न की हो और अधूरी प्रतिपर पुरस्कार न मिल सकने की आशंकासे उसने ग्रंथकी अंतिम प्रशस्तिको जोड़कर ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया हो। ×

अब हम इन युक्तियोंपर क्रमशः विचार कर ठीक निष्कर्ष पर पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे।

१ वेयणकसिणपाहुड और वेदनाखंड एक नहीं हैं।

यह बात सत्य है कि कम्मपयडिपाहुडका दूसरा नाम वेयणकसिणपाहुड भी है और यह गुण नाम भी है, क्योंकि वेदना कर्मोंके उदयको कहते हैं और उसका निरवशेषरूपसे जो वर्णन

× जैनसिद्धान्त भास्कर ६, १ पृ. ४२; अनेकान्त ३, १ पृ. १

करता है उसका नाम वेयणकसिणपाहुड (वेदनकृत्स्नप्राभृत) है। किन्तु इससे यह आवश्यक नहीं हो जाता कि समस्त वेयणकसिणपाहुड वेदनाखण्डके ही अन्तर्गत होना चाहिये, क्योंकि यदि ऐसा माना जावे तब तो छह खण्डोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी और समस्त षट्खण्ड वेदनाखण्ड के ही अन्तर्गत मानना पड़ेंगे चूंकि जीवट्ठाण आदि सभी खण्डोंमें इसी वेयणकसिणपाहुडके अंशों का ही तो संग्रह किया गया है जैसा कि प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये गये मानचित्रों तथा सत्प्ररूपणा पृ. ७४ आदिके उल्लेखोंसे स्पष्ट है। यह खण्ड-कल्पना कम्मपयडिपाहुड या वेयण कसिणपाहुडके अवान्तर भेदोंकी अपेक्षासे की गई है किसी एक खण्डको समूचे पाहुडका अधि-कारी नहीं बनाया गया। स्वयं धवलाकारने वेदनाखण्डको महाकम्मपयडिपाहुड समझ लेनेके विरुद्ध पाठकोंको सतर्क कर दिया है। वेदनाखण्डके आदिमें मंगलके निबद्ध अनिबद्धका विवेक करते समय वे कहते हैं—

ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं, अवयवस्स अवयविसंविरोहाइ। ’

अर्थात् वेदनाखण्ड महाकर्मप्रकृतिप्राभृत नहीं है, क्योंकि अवयवको अवयवी मान लेनेमें विरोध उत्पन्न होता है। यदि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके चौबीसों अनुयोगद्वार वेदनाखण्डके अन्तर्गत होते तो धवलाकार उन सबके समूहको अवयव एवं अवयवी क्यों मानते? इससे बिल्कुल स्पष्ट है कि वेदनाखण्डके अन्तर्गत उक्त चौबीसों अनुयोगद्वार नहीं हैं।

२ क्या वर्गणा नामका कोई पृथक् अनुयोगद्वार न होनेसे उसके नामपर खंड संज्ञा नहीं हो सकती?

कम्मपयडिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वग्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार नहीं है, यह बिल्कुल सच है, किन्तु किसी उपभेदके नामसे कोई खण्ड नाम रखना कोई असाधारण घटना तो नहीं कही जा सकती। यथार्थतः अन्य खंडोंमें एक वेदनाखण्डको छोड़कर अन्य शेष सब खंडोंके नाम या तो विषयानुसार कल्पित हैं, जैसे जीवट्ठाण, खुद्दाबंध, व [illegible]। या किसी अनुयोगद्वारके, उपभेदके नामानुसार हैं, जैसे बंधसामित्तविचय। इसीप्रकार [illegible] नामक उपविभाग पहले उसके महत्वके कारण एक विभागका नाम [illegible] इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। चौबीस अधिकारोंमेंसे जिस अधिकार का [illegible] पाया गया उसीके नामसे तो खंड संज्ञा दी गई है, जैसा कि [illegible] कहा है कि कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृतिका भी यहां प्ररूपण [illegible] केवल तीन ही खंड कहे जाते हैं क्योंकि [illegible] नहीं है [illegible] प्ररूपणासे आता जाता है ×। [illegible]

× देखो षट्खण्डागम [illegible] भूमिका पृ. ६५ [illegible]

३. वेदनाखण्डके आदिका मंगलाचरण और कौन कौन खंडोंका है ?

वेदनाखण्डके आदिमें मंगलसूत्र पाये जाते हैं। उनकी टीकामें धवलाकारने खंडविभाग व उनमें मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी जो सूचना दी है उसको निम्न प्रकार उद्धृत किया जाता है—

'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं? तिण्णं खंडाणं। कुदो? वग्गणा-महाबंधाणमादीए मंगलकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तप्पसंगादो। कदि-पास-कम्म-पयडि-अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडग्गंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति किमट्ठं उच्चदे? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे? संखेवेण परूवणादो।'

वर्गणाखण्डको धवलान्तर्गत स्वीकार न करनेवाले विद्वान् इस अवतरणको देकर उसका यह अभिप्राय निकालते हैं कि—"वीरसेनाचार्यने उक्त मंगलसूत्रोंको ऊपर कहे हुए तीनों खंडों वेदना, बंधसामित्तविचओ और खुद्दाबंधो-का मंगलाचरण बतलाते हुए यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखण्डके आदिमें तथा महाबंधखण्डके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है, मंगलाचरणके बिना भूतबलि आचार्य ग्रन्थका प्रारंभ ही नहीं करते हैं। साथ ही यह भी बतलाया है कि कदि, फास, कम्म, पयडि (बंधण) अनुयोगद्वारोंका भी यहाँ (एत्थ)-इस वेदनाखण्डमें प्ररूपण किया गया है उन्हें खंडग्रंथ संज्ञा न देनेका कारण उनके प्रधानताका अभाव है, जो कि उनके संक्षेप कथनसे जाना जाता है। उक्त फास आदि अनुयोगद्वारोंमेंसे किसीके भी शुरूमें मंगलाचरण नहीं है और इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखण्डमें की गई है, तथा इनमेंसे किसीको खंडग्रंथकी संज्ञा नहीं दी गई यह बात ऊपरके शंका समाधानसे स्पष्ट है।"

अब इस कथनपर विचार कीजिये। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ किया गया है 'ऊपर कहे हुए तीन खंड, अर्थात् वेदना, बंधसामित्त और खुद्दाबंध'। हमें यहाँपर यह याद रखना चाहिये कि खुद्दाबंध और बंधसामित्त खंड दूसरे और तीसरे हैं जिनका प्रकरण हो चुका है, और अभी वेदनाखंडके केवल मंगलाचरणका ही विषय चल रहा है, जिसका विषय आगे कहा जायगा। 'उवरि उच्चमाण' की संस्कृत छाया, जहाँतक मैं समझता हूँ 'उपरि उच्यमान' ही हो सकती है, जिसका अर्थ 'ऊपर कहे हुए' कदापि नहीं हो सकता। 'उच्यमान' का तात्पर्य केवल प्रस्तुत या आगे कहे जानेवालेसे ही हो सकता है। फिर भी यदि 'ऊपर कहे हुए' ही मानलें तो उससे ऊपरके दो और आगेके एक का समुच्चय कैसे हो सकता है? 'ऊपर कहे हुए तीन खंड तो जीवट्ठाण आदि तीन हैं, बाकी तीन आगे कहे जानेवाले हैं। इसलिये उपर्युक्त वाक्यका जो अर्थ लगाया गया है वह बिलकुल ही असंगत है।

अब आगेका शंका-समाधान देखिये। प्रश्न है कि यह कैसे जाना कि यह मंगल 'उवरि

उच्यमाण' तीनों खंडोंका है? इसका उत्तर दिया जाता है 'क्योंकि वर्गणा और महाबंधके आदिमें मंगल किया गया है'। यदि यहां जिन खंडोंमें मंगल किया गया है उनको अलग निर्दिष्ट कर देना आचार्यका अभिप्राय था तो उनमें जीवट्ठाणका भी नाम क्यों नहीं लिया, क्योंकि तभी तो तीन खंड शेष रहते, केवल वर्गणा और महाबंधको अलग कर देनेसे तो चार खंड शेष रह गये। फिर आगे कहा गया है कि मंगल किये बिना भूतबलि भट्टारक ग्रंथ प्रारंभ ही नहीं करते, क्योंकि उससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है। पर उक्त व्यवस्थाके अनुसार तो यहां एक नहीं, दो दो खंड मंगलके बिना, केवल प्रारंभ ही नहीं, समाप्त भी किये जा चुके, जिनके मंगलाचरणका प्रबंध अब किया जा रहा है, जहां स्वयं टीकाकार कह रहे हैं कि मंगलाचरण आदिमें ही किया जाता है, नहीं तो अनाचार्यत्वका दोष आ जाता है। इसमें तो धवलाकारका मत स्पष्ट है कि प्रस्तुत ग्रंथरचनामें आदि मंगलका अनिवार्य रूपसे पालन किया गया है। हमने आदिमंगलके अतिरिक्त मध्यमंगल और अंतमंगलका भी विधान पढ़ा है। किंतु इन प्रकारोंमेंसे किसी भी प्रकार द्वारा वेदनाखंडके आदिका मंगल खुद्दाबंधका भी मंगल सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसप्रकार यह शंका समाधान विषयको समझानेकी अपेक्षा अधिक उलझनमें ही डालने वाला है।

आगेके शंका समाधानकी और भी दुर्दशा की गई है। प्रश्न है कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां प्ररूपित हैं, उनकी खंडसंज्ञा न करके केवल तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं? यहां स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यहां कौनसे तीन खंडोंका अभिप्राय है? यदि यहां भी उन्हीं खुद्दाबंध, बंधसामित्त और वेदनाका अभिप्राय है तो यह बतलानेकी आवश्यकता है कि प्रस्तुतमें उनकी क्या अपेक्षा है। यदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे उत्पत्तिकी यहां अपेक्षा है तो जीवस्थान, वर्गणा और महाबंध भी तो वहींसे उत्पन्न हुए हैं, फिर उन्हें किस विचारसे अलग किया गया? और यदि वेदना, वर्गणा और महाबंधसे ही यहां अभिप्राय है तो एक तो उक्त क्रममें भंग पड़ता है और दूसरे वर्गणाखंडके भी इन्हीं अनुयोगद्वारोंमें अंतर्भावका प्रसंग आता है। जिन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत उठायी गई है उनमें वेदनाका नाम नहीं है। इससे जाना जाता है कि इसी वेदना अनुयोगद्वार परसे वेदनाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है। पर यदि 'एत्थ' का तात्पर्य "इस वेदनाखंडमें" ऐसा लिया जाता है तब तो यह भी मानना होगा कि वे तीनों खंड जिनका उद्धार किया गया है, वेदनाखंडके अन्तर्गत हैं। यदि ऐसा था तो वह क्यों अपनी तरफसे जोड़ा गया जबकि वह सूत्रमें नहीं है, यह भी कुछ समझमें नहीं आता। इसप्रकार यह प्रश्न भी वृथा गड़बड़ी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है।

अब वेदनाखंडके आदिमें आए हुए मंगलाचरणका खुद्दाबंध और बंधसामित्तका भी सिद्ध

करना तथा इति आदि वाक्योंसे अनुयोगद्वारोंको वेदनाखंडान्तर्गत बतलाना बड़ा चतुका, वे आधार और सारे प्रमाणको गम्भीरतामें डालनेवाला है। यह सब कल्पना किन भूलोंका परिणाम है और उन अवतरणोंका सच्चा रहस्य क्या है यह आगे चलकर बतलाया जायगा। उससे पूर्व शेष तीन पुष्पिकाओंपर और विचार करना ठीक होगा।

४ वेदनाखंड समाप्तिकी पुष्पिका

धवलामें जहां वेदनाका प्ररूपण समाप्त हुआ है वहां यह वाक्य पाया जाता है—

एव वयण-[illegible]समत्त वयणाखंड समत्ता।

इसके आगे कुछ नमस्कार वाक्योंके पश्चात् पुनः लिखा मिलता है 'वेदनाखंड समाप्तम्'। ये नमस्कार वाक्य और अन्तकी पुष्पिका तो स्पष्टतः मूलग्रथके अंग नहीं हैं, वे लिपिकार द्वारा जोड़े गये जान पड़ते हैं। प्रश्न है प्रथम पुष्पिकाका जो मूल ग्रथका आवश्यक अंग है। पर उसमें भी 'वेयणाखंड समत्ता' वाक्य व्याकरणकी दृष्टिसे अशुद्ध है। वहां या तो 'वेयणाखंडो समत्तो' या 'वेयणाखंड समत्त' वाक्य होना चाहिये था। समालोचकका यह भी अनुमान गलत नहीं कहा जा सकता कि इस वाक्यमें खंड शब्द संभवतः प्रक्षिप्त है, उस शब्दको निकाल देनेसे 'वेयणा समत्ता' वाक्य भी ठीक बैठ जाता है। हो सकता है यह लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त हुआ हो। पर विचारणीय बात यह है कि यह कब और किस लिये प्रक्षिप्त किया गया होगा। इस प्रक्षेपको आधुनिक लिपिकारकृत तो समालोचक भी नहीं कहते। यदि वह प्रक्षिप्त है तो उसी लिपिकारकृत हो सकता है जिसने मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रति लिखी। हम अन्यत्र बतला चुके हैं कि यह प्रति संभवतः शककी ९ वीं १० वीं शताब्दिका, अर्थात् आजसे कोई हजार आठसौ वर्ष पुरानी है। उस प्रक्षिप्त वाक्यसे उस समयका कमसे कम एक व्यक्तिका यह मत तो मिलता ही है कि वह वहां वेदना खंडकी समाप्ति समझता था। उससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि उस लिपिकारकी जानकारीमें वहींसे दूसरा खंड अर्थात् वर्गणाखंड प्रारंभ हो जाता था, नहीं तो वह वहां वेदनाखंडके समाप्त होनेकी विश्वासपूर्वक दो दो बार सूचना देनेकी धृष्टता न करता। यदि वहां खंडसमाप्ति होनेका इसके पास कोई आधार न होता तो उसे जबर्दस्ती वहां खंड शब्द डालनेकी प्रवृत्ति ही क्यों होती? समालोचक लिपिकारकी प्रक्षेपक-प्रवृत्ति को दिखलाते हुए कहते हैं कि अनेक अन्य स्थलोंपर भी नानाप्रकारके वाक्य प्रक्षिप्त पाये जाते हैं। यह बात सच है, पर जो उदाहरण उन्होंने बतलाया है वहां, और जहांतक मैं अन्य स्थल देख पाया हूं वहां सर्वत्र यही पाया जाता है कि लेखकने अधिकारोंकी संधि आदि पाकर अपने गुरु या देवता का नमस्कार या उनकी प्रशस्ति संबंधी वाक्य या पद्य इधर उधर डाले हैं। यह पुराने लेखकोंकी शैली ही रही है। पर ऐसा स्थल

एक भी देखनेमें नहीं आया जहां पर लेखकने अपनी तरफ [illegible] पूरा [illegible] ओरसे जोड या घटा दी हो। अतएव चाहे यह गाथा शब्द मौलिक हो और चाहे किसी लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त, उससे केवल गाथाके यहां मान्य होनेकी एक पुरानी मान्यता तो प्रमाणित होती ही है।

५ इन्द्रनन्दिकी प्रामाणिकता

इन्द्रनंदि और विबुध श्रीधरने अपने अपने श्रुतावतार कथानकोंमें षट्खण्डागमकी रचना व धवलादि टीकाओंके निर्माणका विवरण दिया है। विबुध श्रीधरका कथानक तो बहुत कुछ काल्पनिक है, पर उसमें भी धवलान्तर्गत पांच या छह भट्टारकोंके नामोंमें कुछ अविश्वसनीयता नहीं दिखती। इन्द्रनंदिने प्रकृत विषयसे संबंध रखनेवाली जो वार्ता दी है उसको हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें पृ. ३० पर लिख चुके हैं। उसका संक्षेप यह है कि वीरसेनने उपरितन निबंधनादि अठारह अधिकार लिखे और उन्हें ही सत्कर्मनाम छठवां खंड संक्षेपरूप बनाकर छह खंडोंकी बहत्तर हजार ग्रंथप्रमाण, प्राकृत संस्कृत भाषा मिश्रित धवलटीका बनाई। उनके शब्दोंका धवलाकारके उन शब्दोंसे मिलान कीजिये जो इसी संबंधके उनके द्वारा कहे गये हैं। निबंधनादि विभागको वहां भी 'उवरिम गंथ' कहा है और अठारह अनुयोगद्वारोंको संक्षेपमें प्ररूपण करनेकी प्रतिज्ञा की गई है। धरसेन गुरुद्वारा श्रुतोद्धारका जो विवरण इन्द्रनंदिने दिया है वह प्रायः ज्यों का त्यों धवलाकार के वृत्तान्त से मिलता है। यह बात सच है कि इन्द्रनंदि द्वारा कही गयीं कुछ बातें धवलान्तर्गत बातोंसे किंचित् भेद रखती हैं। किन्तु उनपरसे इन्द्रनंदिको सर्वथा अप्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता, विशेषतः खंडविभाग जैसे स्थूल विषयपर। यद्यपि इन्द्रनन्दिका समय निर्णीत नहीं है, पर उनके संबंधमें पं. नाथूरामजी प्रेमीका मत है कि ये वे ही इन्द्रनन्दि हैं जिनका उल्लेख आचार्य नेमिचन्द्रने गोम्मटसार कर्मकाण्डकी ३९६ वीं गाथामें गुरुरूपसे किया है जिससे वे विक्रमकी ११ हवीं शताब्दिके आचार्य ठहरते हैं *। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। वीरसेन व धवलाकी रचनाका इतिहास उन्होंने ऐसा दिया है जैसे मानो वे उससे अच्छी तरह निकटतासे सुपरिचित हों। उनके गुरु एलाचार्य कहां रहते थे, वीरसेनने उनके पास सिद्धान्त पढ़कर कहां जाकर, किस मंदिरमें बैठकर, कौनसा ग्रंथ साम्हने रखकर अपनी टीका लिखी यह सब इन्द्रनंदिने अच्छी तरह बतलाया है जिसमें कोई बनावट व कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं होती, बल्कि बहुत ही प्रामाणिक इतिहास जचता है। उन्होंने कदाचित् धवला जयधवलाका सूक्ष्मावलोकन भले ही न किया हो और शायद नोट्स ले रखनेका भी उस समय रिवाज न हो, पर उनकी सूचनाओंपरसे यह बात सिद्ध नहीं होती कि धवल

* मा. दि. जै. ग्रंथमाला नं. ११ भूमिका पृ. १

जयधवला ग्रंथ उनके साम्हने मौजूद ही नहीं थे। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी जिसकी इन ग्रंथोंकी बातोंसे इतनी भिन्नता हो जो पश्चात् पीछे स्मृतिके सहारे लिखनेवाले द्वारा न की जा सकती हो। इसके अतिरिक्त उनका ग्रंथ अभीतक प्राचीन प्रतियोंपरसे सुसंपादित भी नहीं हुआ है। किसी एकाध प्रतिपरसे कभी छाप दिया गया था, उसीकी कापी हमारे साम्हने प्रस्तुत है। उन्होंने जो वार्ता किंवदन्तियों व सुने सुनाये आधारपरसे लिखी हो वह भी उन्होंने बहुत कुछ कल्पित करके, भरसक जांच पड़तालके पश्चात्, लिखी है और इसीतरह वे बहुतसी ऐसी बातों-पर प्रकाश डाल सके जो धवलादिमें भी व्यवस्थित नहीं पायी जाती, जैसे धवलाके पूर्वकी टीकायें व टीकाकार आदि। वे कैसे प्रामाणिक और निर्भीक तथा अपनी कमजोरियोंको स्वीकार करनेवाले निष्पक्ष ऐतिहासिक थे यह उनके उस वाक्य परसे सहज ही जाना जा सकता है जहां उन्होंने साफ साफ कह दिया है कि गुणधर और धरसेन गुरुओंकी पूर्वापर आचार्य परम्परा हम नहीं जानते क्योंकि न तो हमें यह बात बतलानेवाला कोई आगम मिला और न कोई मुनिजन ×। कितनी स्पष्टवादिता, साहित्यिक सचाई और नैतिकबल इस अज्ञानकी स्वीकारतामें भरी हुई है? क्या इन वाक्योंको लिखनेवालेकी प्रामाणिकतामें सहज ही अविश्वास किया जा सकता है?

६ मूडबिद्रीमें प्रतिलिपि करनेवाले लेखककी प्रामाणिकता

जिस परिस्थितिमें और जिस प्रकारसे धवला और जयधवलाकी प्रतियां मूडबिद्रीसे बाहर निकली हैं उसका हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें विवरण दे आये हैं। उस परसे उपलब्ध प्रतियोंकी प्रामाणिकतामें नाना प्रकारके सन्देह करना स्वाभाविक है। अतएव जो धवलाके भीतर वर्गणाखंडका होना नहीं मानते उन्हें यह भी कहनेको मिल जाता है कि यदि मूल धवलामें वर्गणाखंड रहा भी हो तो उक्त लिपिकारने उस अपना परिश्रम बचानेके लिये जानबूझकर छोड़ दिया होगा और अंतिम प्रशस्ति आदि जोड़कर अपने ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया होगा ताकि उसके पुरस्कारादिमें फरक न पड़े। इस कल्पनाकी सचाई झुठाई का पूरा निर्णय तो तभी हो सकता है जब यह ग्रंथ ताडपत्रीय प्रतिसे मिलाया जा सके। पर उसके अभावमें भी हम इसकी सत्यासत्यकी जांच दो प्रकारसे कर सकते हैं। एक तो उस लेखकके कार्यकी परीक्षा द्वारा और दूसरे विद्यमान धवलाकी रचना की परीक्षा द्वारा। धवलाके संशोधन संपादन संबंधी कार्यमें हमें इस बातका बहुत कुछ परिचय मिला है कि उक्त लेखकने अपना कार्य कहांतक ईमानदारीसे किया है। हमें जो प्रतियां उपलब्ध हुई हैं वे मूडबिद्रीसे आई हुई कनाड़ी प्रतिलिपिकी नागरी प्रतिकी कापी की भी कापियां है। वे बहुत कुछ स्खलन-प्रचुर और अनेक प्रकारसे दोष पूर्ण हैं।

× षट्खण्डागम जिल्द १ भूमिका पृ. १५

पर तो भी तीन प्रतियोंके मिलानसे ही पूरा और ठीक पाठ बैठा लेना संभव हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जो स्खलन इन आगेकी प्रतियोंमें पाये जाते हैं वे उस कनाडी प्रतिलिपिमें नहीं हैं। यद्यपि कुछ स्थल इन सब प्रतियोंके मिलानसे भी पूर्ण या निस्संदेह निर्णीत नहीं हो पाते और इसलिये संभव है वे स्खलन उसी प्रथम प्रतिलिपिकार द्वारा हुए हों, पर इस ग्रंथकी लिपि, भाषा और विषय संबंधी कठिनाइयोंको देखते हुए हमें आश्चर्य इस बातका नहीं है कि वे स्खलन हैं, किन्तु आश्चर्य इस बातका है कि वे बहुत ही थोड़े और मामूली हैं, जो किसी भी लेखकके द्वारा अपनी शक्तिभर सावधानी रखनेपर भी, हो सकते हैं। जो लेखक एक खंडके खंडको छोड़कर प्रशस्ति आदि मिलाकर ग्रंथको पूरा प्रकट करनेका दुःसाहस कर सकता है उसके द्वारा शेष लिखाई भी ईमानदारीके साथ किये जानेकी आशा नहीं की जा सकती। पर उक्त लेखकका अभी तक हम जो परिचय धवलापर परिश्रम करके प्राप्त कर सके हैं, उसपरसे हम दृढ़ताके साथ कह सकते हैं कि उसने अपना कार्य भरसक ईमानदारी और परिश्रमसे किया है। उसपरसे उसके द्वारा एक खंडको छोड़कर ग्रंथको पूरा प्रकट कर देने जैसे छल कपट किये जानेकी शंका करनेको हमारा जी बिलकुल नहीं चाहता।

पर यदि ऐसा छल कपट हुआ है तो धवलाकी जांच द्वारा उसका पता लगाना भी कठिन नहीं होना चाहिये। धवलाकी कुल टीकाका प्रमाण इन्द्रनंदिने बहत्तर हजार और ब्रह्महेमने सत्तर हजार बतलाया है। हमारे सन्मुख धवलाकी तीन प्रतियां मौजूद हैं, जिनकी श्लोक संख्याकी हमने पूरी कठोरतासे जांच की। अमरावतीकी प्रतिमें १४६५ पत्र अर्थात् २९३० पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठपर १२ पंक्तियां लिखी गई हैं। प्रत्येक पंक्तिमें ६२ से ६८ तक अक्षर पाये जाते हैं जिससे औसत ६५ अक्षरोंकी ली जा सकती है। तदनुसार कुल ग्रंथमें २९३० × १२ × ६५ × = २२८५४०० अक्षर पाये जाते हैं जिनकी श्लोकसंख्या ३२ का भाग देकर ७१,४१५ आई। इसे सामान्य लेखेमें चाहे आप सत्तर हजार कहिये, चाहे बहत्तर हजार। कारंजा व आराकी प्रतियोंकी भी उक्त प्रकारसे जांच द्वारा प्रायः यही निष्कर्ष निकलता है। इससे तो अनुमान होता है कि प्रतियोंमेंसे एक खंडका खंड गायब होना असंभवसा है, क्योंकि उस खंडका प्रमाण और सब खंडोंको देखते हुए कमसे कम पांच सात हजार तो अवश्य रहा होगा। यह कमी प्रस्तुत प्रतिमें दिखाई दिये बिना नहीं रह सकती थी।

विषयके सम्बन्धकी दृष्टिसे भी धवला अपने प्रस्तुत रूपमें अपूर्ण कहीं नजर नहीं आती। प्रस्तुत ग्रंथ खंड या पूर्ण है ही। चौथे वेदना खंडके आदिसे कृति आदि अनुयोगद्वार प्रारम्भ हो जाते हैं। इनमें प्रस्तुत खंड कृति, वेदना, फास, कम्म, पयडि और बंधन स्वयं भगवान् भूतबलि द्वारा प्रकाशित हैं। इस बातमें धवलाकारने कहा है—

भूदबलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सूचिद-सेस-अट्ठारस-अणियोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो (धवला अ. पत्र १३३१)

पर तो भी तीन प्रतियोंके मिलानसे ही पूरा और ठीक पाठ बैठा लेना सभव हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जो स्खलन इन आगेका प्रतियोंमें पाये जाते हैं वे उस कनाडी प्रतिलिपिमें नहीं हैं। यद्यपि कुछ स्थल इन सब प्रतियोंके मिलानसे भी पूर्ण या निस्सन्देह निर्णीत नहीं हो पाते और इसलिये सभव है वे स्खलन उसी प्रथम प्रतिलिपिकार द्वारा हुए हों, पर इस ग्रंथकी लिपि, भाषा और विषय सबंधी कठिनाइयोंको देखते हुए हमें आश्चर्य इस बातका नहीं है कि वे स्खलन हैं, किन्तु आश्चर्य इस बातका है कि वे बहुत ही थोडे और मामूली हैं, जो किसी भी लेखकके द्वारा अपना शक्तिभर सावधानी रखनेपर भी, हो सकते हैं। जो लेखक एक खड़के खडको छोडकर प्रशस्ति आदि मिलाकर ग्रंथको पूरा प्रकट करनेका दु साहस कर सकता है, उसके द्वारा शेष लिखाई भी इमानदारीके साथ किये जानेकी आशा नहीं की जा सकती। पर उक्त लेखकका अभी तक हम जो परिचय धवलापर परिश्रम करके प्राप्त कर सके हैं, उससे हम दृढताके साथ कह सकते हैं कि उसने अपना कार्य भरसक ईमानदारी और परिश्रमसे किया है। उसपरसे उसके द्वारा एक खडको छोडकर ग्रथको पूरा प्रकट कर देने जैसे छल कपट किये जानेकी शका करनेको हमारा जी बिलकुल नहीं चाहता।

पर यदि ऐसा छल कपट हुआ है तो धवलाकी जाच द्वारा उसका पता लगाना भी कठिन नहीं होना चाहिये। धवलाकी कुल टीकाका प्रमाण इन्द्रनन्दिने बहत्तर हजार और ब्रह्महेमने सत्तर हजार बतलाया है। हमारे सन्मुख धवलाकी तीन प्रतिया मौजूद हैं, जिनकी श्लोक सख्याकी हमने पूरी कठोरतासे जाच की। अमरावतीकी प्रतिमें १४६५ पत्र अर्थात् २९३० पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठपर १२ पक्तिया लिखी गई हैं। प्रत्येक पक्तिमें ६२ से ६८ तक अक्षर पाये जाते हैं जिससे औसत ६५ अक्षरोंकी ली जा सकती है। तदनुसार कुल ग्रथमें २९३० × १२ × ६५ × = २२८५४०० अक्षर पाये जाते हैं जिनकी श्लोकसख्या ३२ का भाग देनेसे ७१,४१५ आती है। इस सामान्य लेखेमें चाहे आप सत्तर हजार कहिये, चाहे बहत्तर हजार। आरा व कारंजाकी प्रतियोंकी भी उक्त प्रकारसे जांच द्वारा प्राय यही निष्कर्ष निकलता है। इससे तो अनुमान होता है कि प्रतियोंमेंसे एक खडका खड गायब होना असभवसा है, क्योंकि उस खडका प्रमाण और सब खडोंको देखते हुए कमसे कम पाच सात हजार तो अवश्य रहा होगा। वह कहीं प्रस्तुत प्रतियोंमें दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता था।

विषयकी व्यवस्थाकी दृष्टिसे भी धवला अपने प्रस्तुत रूपमें अपूर्ण कहीं नजर नहीं आती। [illegible] हैं ही। [illegible] वेदना [illegible] आदिमें कृति आदि अनुयोगद्वार प्रारम्भ होते हैं। इनमें [illegible] कृति, वेदना, फास, कम्म, पयडि और बधन स्वरूप भागवार [illegible] [illegible] है। [illegible] —

[illegible] ([illegible] १३३१)

इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आचार्य भूतबलिकी रचना यहीं तक है। किन्तु उक्त प्रतिज्ञा वाक्यके अनुसार शेष निबन्धनादि अठारह अधिकारोंका वर्णन धवलाकारने स्वयं किया है और अपनी इस रचनाको उन्होंने चूलिका कहा है—

एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम।

इन्हीं अठारह अनुयोगद्वारोंकी वीरसेनद्वारा रचनाका निर्देश इतिहास इन्द्रनन्दिने अपने श्रुतावतारमें दिया है *। इसी चूलिका विभागको उन्होंने छठवां खंड भी कहा है। इसप्रकार चौबीसों अनुयोगद्वारोंके वर्णनके साथ ग्रंथ अपने स्वाभाविक रूपसे समाप्त होता है। अब यदि इन्हीं अनुयोगद्वारोंके भीतर वर्गणाखंड नहीं माना जाता तो उसके लिये कौनसा विषय व अधिकार शेष रहा और वह कहांसे छूट गया होगा? लेखकद्वारा उसके छोड़ दिये जानेकी आशंकाको तो इस रचनामें बिलकुल ही गुंजाइश नहीं रही।

वेदनाखंडके आदि अवतरणोंका ठीक अर्थ

वेदनाखंडके आदि मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी सूचनाका जो अर्थ लगाया जाता है और उससे जो गड़बड़ी उत्पन्न होती है उसका हम ऊपर परिचय करा चुके हैं। अब हमें यह देखना आवश्यक है कि उक्त भूलोंका क्या कारण है और उन अवतरणोंका ठीक अर्थ क्या है। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ 'ऊपर कहे हुए तीन खंड' तो हो ही नहीं सकता। पर ऐसा अर्थ किये जानेके दो कारण मालूम होते हैं। प्रथम तो 'उवरि' से सामान्य ऊपर अर्थात् पूर्वोक्त का अर्थ ले लिया गया है और दूसरे उसकी आवश्यकता भी यों प्रतीत हुई क्योंकि आगे वर्गणा और महाबंधमें अलग मंगल करनेका उल्लेख पाया जाता है। पर खोज और विचारसे देखा जाता है कि 'उवरि' शब्दका धवलाकारने पूर्वोक्तके अर्थमें कहीं उपयोग नहीं किया। उन्होंने इस शब्दका प्रयोग सर्वत्र 'आगे' के अर्थमें किया है और पूर्वोक्तके लिये 'पुव्व' या पुव्वुत्त का। उदाहरणार्थ सत्प्ररूपणा, पृष्ठ १३० पर उन्होंने कहा है—

> अथाह पुव्व उत्त पयडिसमुक्कित्तणा ... एदाणं पंचण्हमुवरि सव्वहि पुव्वुत्त अट्ठण्हाहिडि य पक्खित्त चूलियाए णव अहियारा भवंति।

अर्थात् पूर्वोक्त प्रकृति समुत्कीर्तन ... पांचोंके ऊपर अभी कह गये जघन्यस्थिति आदि जोड़ देनेपर चूलिकाके नव अधिकार हो जाते हैं। यहां ऊपर कहे जा चुकेके लिये 'पुव्व उत्त' व 'पुव्वुत्त' का प्रयोग हुआ है और 'उवरि' से आगेका तात्पर्य है।

पृ. ७३ पर 'उवरि ... ' [illegible] 'उवरि' अव्ययका प्रयोग देखिये। आचार्य कहते हैं—

* [illegible] ६७

पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरण 'उसहमजियं च वंदे'। इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरण—एस करेमि य पणमं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिवसुहकंखा विलोमेण॥

यहां यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चात्की ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार'। पर जहां नीचे या पश्चात्से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूं और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी। यहां 'उवरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेट्ठा [अध] शब्दका प्रयोग किया गया है।

धवलामें आगे बंधन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है 'एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम'। अर्थात् यहांसे ऊपरके ग्रंथका नाम चूलिका है। यहां भी 'उवरिम' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रंथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे।

और भी धवलामें सैकड़ों जगह 'उवरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इसप्रकार आया है "उवरि भण्णमाणणियोगद्दारो," 'उवरिमसुत्तं भणदि' आदि। इनमें प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट ग्रन्थ आगे दिया गया पाया जाता है। उवरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उवरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रस्तुतमें तो 'उवभाग' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे बढ़े उक्त तीन खंडोंका यह मत है तो इस बातका वर्गणा और महाबंधके अर्थसे [illegible] कैसे समन्वय बैठ सकता है? यही एक विकट स्थल है जिसने [illegible] निर्णयमें उलझन की है। समस्त प्रकरणपर सब दृष्टियोंसे विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें यहां पाठकी अशुद्धि है। मेरे विचारसे '[illegible] [illegible]' की जगह 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलाइरियादो' पाठ होना चाहिये। और 'णा' के स्थानपर अल्प 'थ' की मात्रा की अशुद्धियां तथा अन्य [illegible] इन प्रतियोंमें भर पड़े हैं। हमें अपने संशोधनमें [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] नहीं किया जा सका ×। हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पूरे

× [illegible], पृ. ८।

पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं 'उसहमजियं च वंदे'। इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—एस करेमि य पणमं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिवसुहकंखा विलोमेण॥

यहां यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चातकी ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार'। पर जहां नीचे या पश्चात्से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूं और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी। यहां 'उवरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेट्ठा [अधः] शब्दका प्रयोग किया गया है।

धवलामें आगे बंधन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है 'एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम'। अर्थात् यहांसे ऊपरके ग्रंथका नाम चूलिका है। यहां भी 'उवरिम' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रंथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे।

और भी धवलामें सैकड़ों जगह 'उवरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इसप्रकार आया है "उवरि भण्णमाणचुण्णिसुत्तादो," 'उवरिमसुत्तं भणदि' आदि। इनमें प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट सूत्र आगे दिया गया पाया जाता है। उवरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उवरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रकृतमें तो 'उच्चमाण' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे कहे जानेवाले तीन खंडोंका यह मंगल है तो इस बातका वर्गणा और महाबंधके आदिमें मंगलाचरणकी सूचनासे कैसे सामञ्जस्य बैठ सकता है? यही एक विकट स्थल है जिसने उपर्युक्त सारी गड़बड़ी विशेषरूपसे उत्पन्न की है। समस्त प्रकरणपर सब दृष्टियोंसे विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें यहां पाठ की अशुद्धि है। मेरे विचारसे 'वग्गणमहाबंधाणमादीए मंगल करणादो' की जगह 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो' पाठ होना चाहिये। दीर्घ 'आ' के स्थानपर ह्रस्व 'अ' की मात्रा की अशुद्धियां तथा अन्य स्थलोंमें भी ह्रस्व दीर्घके व्यत्यय इन प्रतियोंमें भरे पड़े हैं। हमें अपने संशोधनमें इसप्रकारके सुधार सैकड़ों जगह करना पड़े हैं। यथार्थतः प्राचीन कनड लिपिमें ह्रस्व और दीर्घ स्वरोंमें बहुधा विवेक नहीं किया जाता था×। हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पढ़नेसे पूर्वोक्त

समस्त प्रकरण व शंका-समाधानक्रम ठीक बैठ जाता है। उससे उक्त दो अवतरणोंके बीचमें आये हुए उन शंका समाधानोंका अर्थ भी सुलझ जाता है जिनका पूर्वकथित अर्थसे बिलकुल ही सामञ्जस्य नहीं बैठता बल्कि विरोध उत्पन्न होता है। वह पूरा प्रकरण इस प्रकार है—

उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं? तिण्णं खंडाणं। कुदो? वग्गणा-महाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तप्पसंगादो। कधं वेयणाए आदीए उत्तं मंगलं सेस दो खंडाणं होदि? ण, कदीए आदिम्हि उत्तस्स एदस्सेव मंगलस्स सेसतेवीसअणियोगद्दारेसु पउत्तिदंसणादो। महाकम्मपयडिपाहुडत्तणेण चउवीसण्हमणियोगद्दाराणं भेदाभावादो एगत्तं, तदो एगस्स एयं मंगलं तत्थ ण विरुज्झदे। ण च एदेसिं तिण्हं खंडाणमेयत्तमेगखंडत्तप्पसंगादो त्ति। ण एस दोसो, महाकम्मपयडिपाहुडत्तणेण एदेसिं पि एगत्तदंसणादो। कदि-पास-कम्म-पयडि-अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडगंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति किमट्ठं उच्चदे? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे? संखेवेण परूवणादो।

इसका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका—आगे कहे जाने वाले तीन खंडों (वेदना वर्गणा और महाबंध) में से किस खंड का यह मंगलाचरण है?

समाधान—तीनों खंडोंका।

शंका—कैसे जाना?

समाधान—वर्गणाखंड और महाबंध खंडके आदिमें मंगल न किये जानेसे। मंगल किये बिना तो भूतबलि भट्टारक ग्रंथका प्रारंभ ही नहीं करते क्योंकि इससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है।

शंका—वेदनाके आदिमें कहा गया मंगल शेष दो खंडोंका भी कैसे हो जाता है?

समाधान—क्योंकि कृतिके आदिमें किये गये इस मंगलकी शेष तेवीस अनुयोगद्वारोंमें भी प्रवृत्ति देखी जाती है।

शंका—महाकर्मप्रकृतिप्राभृतत्वकी अपेक्षासे चौबीसों अनुयोगद्वारोंमें भेद न होनेसे उनमें एकत्व है, इसलिये एकका यह मंगल शेष तेवीसोंमें विरोधको प्राप्त नहीं होता। परन्तु इन तीनों खंडोंमें तो एकत्व है नहीं, क्योंकि तीनोंमें एकत्व मान लेनेपर तीनोंके एक खंडत्वका प्रसंग आजाता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतत्वकी अपेक्षासे इनमें भी एकत्व देखा जाता है।

शंका—कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां (प्रकृत ग्रन्थमें) प्ररूपित किये गये हैं, उनकी भी खंड ग्रंथ संज्ञा न करके तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं?

पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरण 'उसहमजियं च वंदे'। इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरण—एस करेमि य पणमं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिवसुहकंखा विलोमेण॥

यहां यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चात्‌की ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार'। पर जहां नीचे या पश्चात्‌से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूं और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी। यहां 'उवरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेट्ठा [अधः] शब्दका प्रयोग किया गया है।

धवलामें आगे बंधन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है 'एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम'। अर्थात् यहांसे ऊपरके ग्रंथका नाम चूलिका है। यहां भी 'उवरिम' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रंथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे।

और भी धवलामें सैकड़ों जगह 'उवरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इसप्रकार आया है "उवरि भण्णमाणचुण्णिसुत्तादो," 'उवरिमसुत्त भणदि' आदि। इनमें प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट सूत्र आगे दिया गया पाया जाता है। उवरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उवरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रकृतमें तो 'उच्चमाण' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे कहे जानेवाले तीन खंडोंका यह मंगल है तो इस बातका वर्गणा और महाबंधके आदिमें मंगलाचरणकी सूचनासे कैसे सामञ्जस्य बैठ सकता है? यही एक विकट स्थल है जिसने उपर्युक्त सारी गड़बड़ी विशेषरूपसे उत्पन्न की है। समस्त प्रकरणपर सब दृष्टियोंसे विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें वहां पाठ की अशुद्धि है। मेरे विचारसे 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगल करणादो' की जगह 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो' पाठ होना चाहिये। दीर्घ 'आ' के स्थानपर ह्रस्व 'अ' का मात्रा की अशुद्धियां तथा अन्य स्वरोंमें भी ह्रस्व दीर्घके व्यत्यय इन प्रतियोंमें भरे पड़े हैं। हमें अपने संशोधनमें इसप्रकारके सुधार सैकड़ों जगह करना पड़े हैं। यथार्थतः प्राचीन कनड़ लिपिमें ह्रस्व और दीर्घ स्वरोंमें बहुधा विवेक नहीं किया जाता था ×। हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पढ़नेसे पूर्वोक्त

× डा. उपाध्ये, परमात्मप्रकाश, भूमिका, पृ. ...

समाधान—भूतबलिको गौतम माननेका प्रयोजन ही क्या है ?

६ शंका—यदि भूतबलिको गौतम न माना जाय तो मंगलको निबद्धपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान—क्योंकि भूतबलिके खंडग्रंथके प्रति कर्तापनेका अभाव है। कुछ दूसरे के द्वारा रचे गये ग्रंथाधिकारोंमेंसे एक देशका पूर्व प्रकारसे ही शब्दार्थ और सदर्भका प्ररूपण करनेवाला ग्रंथकर्ता नहीं हो सकता क्योंकि इससे तो अतिप्रसंग दोष अर्थात् एक ग्रंथके अनेक कर्ता होनेका प्रसंग आ जायगा। अथवा, दोनोंका एक ही अभिप्राय होनेसे भूतबलि गौतम ही है। इसप्रकार यहां निबद्ध मंगलत्व भी सिद्ध हो जाता है।

यहांपर प्रथम शंका समाधानमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत पूरा महाकम्मपयडिपाहुडका विषय नहीं है—वह उस पाहुडका एक अवयव मात्र है, अर्थात् उसमें उक्त पाहुडके चौबीसों अनुयोगद्वारोंका अन्तर्भाव नहीं किया जा सकता। महाकर्मप्रकृतिपाहुड अवयवी है और वेदनाखंड उसका एक अवयव।

वेदना और वर्गणा-खंडोंकी सीमाओंका निर्णय

दूसरे शंका समाधानसे यह सूचना मिलती है कि कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें अकेला वेदनाखंड नहीं फैला है, वेदना आदि खंड हैं अर्थात् वर्गणा और महाबंधका भी अन्तर्भाव वहीं है। तीसरे शंका समाधानमें कर्मप्रकृतिपाहुड के कृति आदि अवयवोंमें भी एक दृष्टिसे पाहुडपना स्थापित करके चौथेमें स्पष्ट निर्देश किया गया है कि वेदनाखंडमें गौतमस्वामीकृत बडे विस्तारवाले वेदना अधिकारका ही उपसंहार अर्थात् संक्षेप है। यह वेदना धवलाकी अ प्रतिमें पृ ७५६ पर प्रारम्भ होती है जहां कहा गया है—

> कम्मट्ठजणियवेयण उवहि-समुत्तिण्णए जिणे णमिउं।
> वेयणमहाहियारं विविहहियारं परूवेमो ॥

और वह उक्त प्रतिके ११०६ वें पत्रपर समाप्त होती है जहां लिखा मिलता है—

' एवं वेयण-अप्पाबहुगाणिओगद्दारे समत्ते वेयणाखंड समत्ता।

इसप्रकार इस पुष्पिकावाक्यमें अशुद्धि होते हुए भी वहां वेदनाखंडकी समाप्तिमें कोई शंका नहीं रह जाती।

पांचवें और छटवें शंका समाधानमें भूतबलि और गौतममें ग्रंथकर्ता व अभिप्रायकी अपेक्षा एकत्व स्थापित किया गया है जो सहज ही समझमें आजाता है। इसप्रकार उक्त मंगल निबद्ध भी सिद्ध करके बता दिया गया है।

इसप्रकार उक्त शंका समाधानसे वेदनाखंडकी दोनों सीमायें निश्चित हो जाती हैं। कृति तो वेदनाखंडके अन्तर्गत है ही क्योंकि उक्त शंका समाधानकी सूचनाके अतिरिक्त मंगलाचरणके साथ ही वेदनाखंडका प्रारंभ माना ही गया है।

वेदनाखंडके विस्तारका एक और प्रमाण उपलब्ध है। टीकाकारने उसका परिमाण सोलह हजार पद बतलाया है। यथा, 'खंडगंथं पडुच्च वेयणाए सोलसपदसहस्साणि'। यह पद-संख्या भूतबलिकृत सूत्र-प्रथकी अपेक्षासे ही होना चाहिये। अतएव जबतक यह न ज्ञात हो जावे कि पदसे यहां धवलाकारका क्या तात्पर्य है तथा वेदनादि खंडोंके सूत्र अलग करके उन पर वह माप न लगाया जावे तबतक इस सूचनाका हम अपनी जांचमें विशेष उपयोग नहीं कर सकते। तो भी चूंकि टीकाकारने एक अन्य खंडकी भी इसप्रकार पद संख्या दी है और उस खंडकी सीमादिके विषयमें कोई विवाद नहीं है इसलिये हमें उनकी तुलनासे कुछ आपेक्षिक ज्ञान अवश्य हो जायगा। धवलाकारने जीवट्ठाण खंडकी पद संख्या अठारह हजार बतलाई है-' पद पडुच्च अट्ठारहपदसहस्स ' (सत प पृ ६०) इससे यह ज्ञात हुआ कि वेदनाखंडका परिमाण जीवट्ठाणसे नवमांश कम है। जीवट्ठाण के ४७५ पत्रोंका नवमांश लगभग ५३ होता है, अत साधारणतया वेदनाखंडकी पत्र संख्या ४७५-५३=४२२ के लगभग होना चाहिये। ऊपर निर्धारित सीमाके अनुसार वेदनाकी पत्र संख्या प्रतिमें ६६७ से ११०६ तक अर्थात् ४३८ है जो आपेक्षिक अनुमानके बहुत नजदीक पडती है। समस्त चौवीस अनुयोगद्वारोंको वेदनाके भीतर मान लेनेसे तो जीवट्ठाणकी अपेक्षा वेदनाखंड धवला के तिगुनेसे भी अधिक बडा हो जाता है।

वर्गणा निर्णय जब वेदनाखंडका उपसंहार वेदनानुयोगद्वारके साथ हो गया तब प्रश्न उठता है कि उसके आगेके फास आदि अनुयोगद्वार किस खंडके अंग रहे ? ऊपर वेदनादि तीन खंडोंके उल्लेखोंके विवेचन से यह स्पष्ट ही है कि वेदनाके पश्चात् वर्गणा और उसके पश्चात् महाबंधकी रचना है। महाबंधकी सीमा निश्चितरूपसे निर्दिष्ट है क्योंकि धवलामें स्पष्ट कर दिया गया है कि बंधन अनुयोगद्वारके चौथे प्रभेद बंधविधानके चार प्रकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशबंधका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबंधमें विस्तारसे लिखा है, इसलिये वह धवलाके भीतर नहीं लिखा गया। अत यहांतक वर्गणाखंडकी सीमा समझना चाहिये। यहांसे आगेके निबंधनादि अठारह अधिकार टीकाकी सूचनानुसार चूलिका रूप हैं। व टीकाकार कृत हैं भूतबलिकी रचना नहीं हैं।

उक्त खंड विभागको सर्वथा प्रामाणिक सिद्ध करनेके लिये अब केवल उस प्रकारके किसी प्राचीन विश्वसनीय स्पष्ट उल्लेखमात्रकी अपेक्षा और रह जाती है। सौभाग्यसे ऐसा एक

उल्लेख भी हमें प्राप्त हो गया है। मूडबिद्रीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीने वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्तभवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंमें महाबन्ध (महाधवल) का कुछ परिचय अवतरणों सहित दिया है। इसमें प्रथम बात तो यह जानी जाती है कि पंडितजीको उस प्रतिमें कोई मंगलाचरण देखनेको नहीं मिला। वे रिपोर्टमें लिखते हैं "इसमें मंगलाचरण श्लोक, ग्रंथकी प्रशस्ति वगैरह कुछ भी नहीं है।" पं. लोकनाथजी की यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण है क्योंकि पंडितजीने ग्रंथको केवल ऊपर नीचे ही नहीं देखा-उन्होंने कोई चार वर्षतक परिश्रम करके पूरे महाधवल ग्रंथकी नागरी प्रतिलिपि तैयार की है जैसा कि हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें बतला आये हैं। अतएव उस ग्रंथका एक एक शब्द उनकी दृष्टि और कलमसे गुजर चुका है। उनके मतसे पूर्वोक्त 'मंगलकरणादो' पदमें हमारे 'मंगलाकरणादो' रूप सुधार की पुष्टि होती है–

दूसरी बात जो महाधवलके अवतरणोंमें हमें मिलती है वह खंडविभागसे संबंध रखती है। महाबंधपर कोई पंचिका भी उस प्रतिमें ग्रथित है जैसा कि अवतरणकी प्रथम पंक्तिसे ज्ञात होता है—

'वोच्छामि संतकम्मे पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं'

इसी पंचिकाकारने आगे चलकर कहा है––

'महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि वेदणाओ(दि) चउवीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदि वेदणा त्ति जाणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्हि, पुणो पास (कम्म-पयडि बंधणाणि) चत्तारि अणियोगद्दारेसु तत्थ बंध बंधणिज्जणामणियोगेहि सह वग्गणाखंडम्हि, पुणो बंधविधाणणामणियोगो खुद्दाबंधम्मि सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसमणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि। तो वि तस्सइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूवेण भणिस्सामो ×।

इस अवतरणमें शब्दोंमें अशुद्धियां हैं। कोष्टकके भीतरके सुधार या जोडे हुए पाठ मेरे हैं। पर उसपरसे तथा इससे आगे जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट जान पडता कि यहां निबंधनादि अठारह अधिकारोंकी पंचिका दी गई है। उन अठारह अधिकारोंका नाम 'संतकम्म' था, जिससे इन्द्रनंदिके सत्कर्मसंबंधी उल्लेखकी पूरी पुष्टि होती है। प्राप्त अवतरण परसे महाधवलरूप ग्रंथ व उसके विषय आदिके संबंधमें अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं, और प्रतिके पूर्ण परिचयकी बडी अभिलाषा उत्पन्न होती है, किन्तु उस सबका विवरण करके प्रकृत विषय पर आनेसे इस अवतरणमें प्रस्तुतोपयोगी यह बात स्पष्ट रूपसे मालूम हो जाती है, कि धवलि

× यह अवतरण प्र. प्र. जिल्द' की भूमिका पृ. ६८ पर दिया जा चुका है। 'पर वहां भूलसे 'पुणो तेहिंतो' आदि वाक्य छूट गया है। अतः उपयोगी इस अवतरणको यहां फिर पूरा दे दिया है।

पश्चात् आचार्यको शास्त्रका व्याख्यान करना चाहिये।' इस आचार्य परम्परागत न्याय को मनमें धारण करके पुष्पदन्ताचार्य मंगलादि छहोंके सकारण प्ररूपणके लिये सूत्र कहते हैं, 'णमो अरिहंताणं' आदि।

इसके आगे धवलाकारने इसी मंगलसूत्रको 'तालपलंब' सूत्रके समान देशामर्शक बतलाकर पूर्वोक्त मंगल, निमित्त आदि छहों का प्ररूपक सिद्ध किया है। तत्पश्चात् मंगल शब्दकी व्युत्पत्ति व अनेक दृष्टियोंसे भेद प्रभेद बतलाते हुए मंगलके दो भेद इसप्रकार किये हैं—

तच्च मंगलं दुविहं णिबद्धमणिबद्धमिदि। तत्थ णिबद्धं णाम जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण णिबद्धदेवदा-णमोक्कारो तं णिबद्धमंगलं। जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण कयदेवदाणमोक्कारो तमणिबद्धमंगलं। इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्धमंगलं, यत्तो 'इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इदि एदस्स सुत्तस्सादीए णिबद्ध 'णमो अरिहंताणं' इच्चादिदेवदा णमोक्कारदंसणादो।

(सं० पु० १, पृ० ४१)

अर्थात् मंगल दो प्रकारका है, निबद्ध और अनिबद्ध। सूत्रके आदिमें सूत्रकर्त्ता द्वारा जो देवता-नमस्कार निबद्ध किया जाय वह निबद्ध मंगल है और जो सूत्रके आदिमें सूत्रकर्त्ता द्वारा देवताको नमस्कार किया जाता है (किन्तु वह नमस्कार लिपिबद्ध नहीं किया जाता) वह अनिबद्ध-मंगल है। यह जीवट्ठाण निबद्ध मंगल है, क्योंकि इसके 'इमेसिं चोद्दसण्हं' आदिसूत्रके पूर्व 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि देवतानमस्कार पाया जाता है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवट्ठाणके आदिमें जो यह णमोकार मंत्र पाया जाता है वह सूत्रकार पुष्पदन्त आचार्य द्वारा ही वहां रखा गया है और इससे उस शास्त्रको निबद्ध मंगल संज्ञा प्राप्त हो जाती है। किन्तु इससे यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि यह मंगलसूत्र स्वयं पुष्पदन्ताचार्यने रचकर यहां निबद्ध किया है, या कहीं अन्यत्र से लेकर यहां रख दिया है। पर अन्यत्र धवलाकार ने इसका भी निर्णय किया है।

वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाणं' आदि मंगलसूत्र पाये जाते हैं, जिनकी टीका करते हुए धवलाकारने उनके निबद्ध अनिबद्ध स्वरूप का विवेचन किया है। वे लिखते हैं—

[illegible] किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि? ण ताव णिबद्धमंगलमिदं, महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदियादि-चउवीस अणियोगावयवस्स आदीए गोदमसामिणा परूविदस्स भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठं तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्तविरोहादो। ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो। ण च भूदबली गोदमो, विगलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स सयलसुदधारयवड्ढमाणंतेवासि-गोदमत्तविरोहादो। ण चाण्णो पयारो णिबद्धमंगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि।

अर्थात् यह मंगल (णमो जिणाणं, आदि) निबद्ध है या अनिबद्ध? यह निबद्ध-मंगल तो नहीं है क्योंकि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके आदिमें गौतमस्वामीने इस

धारक तीर्थंकरोंने किया था उसीप्रकार संक्षेपमें व्याख्यान करने योग्य था। किन्तु आगे काल परिहानिके दोषसे वे निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियां विच्छिन्न हो गई। फिर कुछ काल जानेपर यथासमय महाऋद्धिको प्राप्त पदानुसारी वइरसामी (वैरस्वामी या वज्रस्वामी) नामके द्वादशांग श्रुतके धारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पंचमंगल महाश्रुतस्कंधका उद्धार मूलसूत्रके मध्य लिखा। यह मूलसूत्र सूत्रत्वकी अपेक्षा गणधरों द्वारा तथा अर्थकी अपेक्षासे अरहंत भगवान, धर्मतीर्थंकर त्रिलोकमहित वीरजिनेंद्रके द्वारा प्रज्ञापित है, ऐसा वृद्धसम्प्रदाय है।

यद्यपि महानिशीथसूत्रकी रचना श्वेताम्बर सम्प्रदायमें बहुत कुछ पीछेकी अनुमान की जाती है,× तथापि उसके रचयिताने एक प्राचीन मान्यताका उल्लेख किया है जिसका अभिप्राय यह है कि इस पंचमंगलरूप श्रुतस्कंधके अर्थकर्ता भगवान् महावीर हैं और सूत्ररूप ग्रथकर्ता गौतमादि गणधर हैं। इसका तीर्थंकर कथित जो व्याख्यान था वह कालदोषसे विच्छिन्न हो गया। तब द्वादशांग श्रुतधारी वइरस्वामीने इस श्रुतस्कंधका उद्धार करके उसे मूल सूत्रके मध्यमें लिख दिया। श्वेताम्बर आगममें चार मूल सूत्र माने गये हैं–आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन और पिंडनिर्युक्ति। इनमें से कोई भी सूत्र वज्रसूरिके नामसे सम्बद्ध नहीं है। उनकी चूर्णियां भद्रबाहुकृत कही जाती हैं। उन मूल सूत्रोंमें प्रथम सूत्र आवश्यकके मध्यमें णमोकार मंत्र पाया जाता है। अतएव उक्त मान्यताके अनुसार संभवत यही वह मूलसूत्र है जिसमें वज्रसूरिने उक्त मंत्रको प्रक्षिप्त किया।

कल्पसूत्र स्थविरावलीमें 'वइर' नामके दो आचार्योंका उल्लेख मिलता है जो एक दूसरेके गुरु शिष्य थे। यथा–

थेरस्स णं अज्ज-सीहगिरिस्स जाइस्सरस्स कोसियगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगुत्ते। थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरसेणे उक्कोसियगुत्ते*।

अर्थात् कौशिक गोत्रीय स्थविर आर्य सिंहगिरिके शिष्य स्थविर आर्य वइर गोतम गोत्रीय हुए, तथा स्थविर आर्य वइर गोतम गोत्रीयके शिष्य स्थविर आर्य वइरसेन उक्कोसिय गोत्रीय हुए।

विक्रमसंवत् १६४६ में संगृहीत तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीका कुछ विशेष परिचय पाया जाता है। यथा—

तेरसमो वयरसामि गुरू।

व्याख्या—तेरसमो त्ति श्रीसिंहगिरिपट्टे त्रयोदश श्रीवज्रस्वामी यो बाल्यादपि जातिस्मृतिभाग, नभोगमनविद्यया संघं रक्षन्, दक्षिणस्यां बौद्धराज्ये जिनेन्द्रपूजानिमित्त पुष्पाद्यानयनेन प्रवचनप्रभावनाहर,

---

× Winternitz Hist Ind Lit II, P 465

* पट्टावली समुच्चय (पृ ३)

इसप्रकार इन आचार्योंका दिगम्बर मान्यतानुसार क्रम निम्न प्रकार सूचित होता है—

वइरजसका नाम यतिवृषभसे पूर्व ठीक कहां आता है इसका निश्चय नहीं। आर्यमंक्षु और नागहत्थीके समकालीन होनेकी स्पष्ट सूचना पाई जाती है क्योंकि उन दोनोंने क्रमशः यतिवृषभको कसायपाहुड पढ़ाया था। क्रमसे पढ़ानेसे तथा आर्यमंक्षुका नाम सदैव पहले लिये जानेसे इतना ही अनुमान होता है कि दोनोंमें आर्यमंक्षु सम्भवतः जेठे थे। ये दोनों नाम श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें कोई १३० वर्षके अन्तरसे दूर पड़ जाते हैं जिससे उनका समकालीनत्व नहीं बनता। किंतु यह बात विचारणीय है कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें ये दोनों नाम कहीं पाये जाते हैं और कहीं छोड़ दिये जाते हैं, तथा कहीं उनमेंसे एकका नाम मिलता है दूसरेका नहीं। उदाहरणार्थ, सबसे प्राचीन 'कल्पसूत्र स्थविरावली' तथा 'पट्टावली सारोद्धार' में ये दोनों नाम नहीं हैं, और 'गुरु पट्टावली' में आर्यमंक्षुका नाम है पर नागहत्थीका नहीं है×। फिर आर्यमंक्षु और नागहत्थीने जिनका रचा हुआ कसायपाहुड आचार्य परंपरासे प्राप्त किया था वे गुणधराचार्य दिगम्बर उल्लेखोंके अनुसार महावीर स्वामीसे आचार्य-परम्पराकी अट्ठाईस पीढ़ी पश्चात् निर्वाण संवत्की सातवीं शताब्दिमें हुए सूचित होते हैं जब कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें उन दोनोंमेंसे एक पांचवीं और दूसरे सातवीं शताब्दिमें पड़ते हैं। इसप्रकार इन सब उल्लेखों परसे निम्न प्रश्न उपस्थित होते हैं —

१ क्या 'तिलोय-पण्णत्ति' में उल्लिखित 'वइरजस' और महानिशीथसूत्रके पदानुसारी 'वइरसामी' तथा श्वेताम्बर पट्टावलियोंके 'अज्ज वइर' एक ही हैं?

२ 'वइरस्वामीने मूलसूत्रके मध्य पंचमंगलश्रुतस्कंधका उद्धार लिख दिया' इस महानिशीथसूत्रकी सूचनाका तात्पर्य क्या है? क्या उनकी दक्षिण यात्राका और उनके पंचमंगलसूत्रकी प्राप्तिका कोई सम्बन्ध है? क्या धवलाकारद्वारा सूचित णमोकार मंत्रके कर्तृत्वका इससे सामञ्जस्य बैठ सकता है?

३ क्या धवलादिश्रुतमें उल्लिखित आर्यमंखु और नागहत्थी तथा श्वेताम्बर पट्टावलियोंके अज्जमंगु और नागहत्थी एक ही हैं? यदि एक ही हैं, तो एक जगह दोनोंकी समसामयिकता

× देखो पट्टावली समुच्चय।

प्रकट होने और दूसरी जगह उनके बीच एकसौ तीस वर्षका अन्तर पड़नेका क्या कारण हो सकता है ? पट्टावलियोंमें भी कहीं उनके नाम देने और कहीं छोड़ दिये जानेका भी कारण क्या है ?

४ जिस कम्मपयडीमें नागहस्तीने प्रधानता प्राप्त की थी क्या वह पुष्पदन्त भूतबलि द्वारा उद्धारित कम्मपयडिपाहुड हो सकता है ?

५ दिगम्बर और श्वेताम्बर पट्टावलियों आदिमें उक्त आचार्योंके कालनिर्देशमें वैषम्य पड़नेका कारण क्या है ?

इन प्रश्नोंमेंसे अनेकके उत्तर पूर्वोक्त विवेचनमें सूचित या ध्वनित पाये जावेंगे, फिर भी उन सबका प्रामाणिकतासे उत्तर देना बिना और भी विशेष खोज और विचारके संभव नहीं है। इस कार्यके लिये जितने समयकी आवश्यकता है उसकी भी अभी गुंजाइश नहीं है। अतः यहां इतना ही कहकर यह प्रसंग छोड़ा जाता है कि उक्त आचार्यों संबंधी दोनों परम्पराओंके उल्लेखोंमें भारी रहस्य अवश्य है, जिसके उद्घाटनसे दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन इतिहास और उनके बीच साहित्यिक आदान प्रदानके विषय पर विशेष प्रकाश पड़नेकी आशा की जा सकती है।

इस प्रकरणको समाप्त करनेसे पूर्व यहां यह भी प्रकट कर देना उचित प्रतीत होता है कि श्वेताम्बर आगमके अन्तर्गत भगवतीसूत्रमें जो पंच नमोक्कार-मंगल पाया जाता है उसमें पंचम पद अर्थात् ' णमो लोए सव्वसाहूणं ' के स्थानपर ' णमो बंभीए लिवीए ' (ब्राह्मी लिपिको नमस्कार) ऐसा पद दिया गया है। उड़ीसाकी हाथीगुफामें जो कलिंग नरेश खारवेलका शिलालेख पाया जाता है और जिसका समय ईस्वी पूर्व अनुमान किया जाता है, उसमें आदि मंगल इसप्रकार पाया जाता है—

नमो अरहंतानं । नमो सव सिधानं ।

ये पाठभेद प्रासंगिक हैं या किसी परिपाटीको लिये हुए हैं, यह विषय विचारणीय है। श्वेताम्बर सम्प्रदायमें किसी किसीके मतसे णमोक्कार मंत्र अनादि है ×।

५ बारहवें श्रुताङ्ग दृष्टिवादका परिचय

हम सत्प्ररूपणा प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कह आये हैं कि बारहवां श्रुतांग दृष्टिवाद श्वेताम्बर मान्यताके अनुसार तो विच्छिन्न होगया, तथा दिगम्बर मान्यतानुसार उसके कुछ अंशोंका

× य २ व १ न नमस्क रपाठ पव बाप इत्यादि। देखो अभिधानराजेन्द्र—णमोक्कार

ये परिकर्मके भेद दोनों सम्प्रदायोंमें मान्य और नाम दोनों बातोंमें एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न हैं। सिद्धश्रेणिकादि भेदोंका क्या रहस्य था, यह ज्ञान नहीं रहा। समवायांगके टीकाकार कहते हैं—

'एतच्च सर्वं समूलोत्तरभेदं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नं'

अर्थात् यह सब परिकर्मशास्त्र अपने मूल और (आगे बतलाये जानेवाले) उत्तर भेदोंसहित सूत्र और अर्थ दोनों प्रकारसे नष्ट होगया। किन्तु सूत्रकार व टीकाकारने इन सात भेदोंके सम्बन्धमें कुछ बातें ऐसी बतलायी हैं जो बड़ी महत्वपूर्ण हैं। परिकर्मके सात भेदोंके सम्बन्धमें वे लिखते हैं—

इच्चेयाइं छ परिकम्माइं ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं, छ चउक्क-णइयाइं, सत्त तेरासियाइं। (समवायांगसूत्र)

एतेषां च परिकर्मणां षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव। गोशालक प्रवर्तिताजीविक-पाषण्डिक-सिद्धान्तमतेन पुनः च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते। इदानीं परिकर्मसु नय-चिन्ता। तत्र नैगमो द्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च। तत्र सांग्राहिकः संग्रहं प्रविष्टोऽसांग्राहिकश्च व्यवहारम्। तस्मात् संग्रहो व्यवहार ऋजुसूत्रः शब्दादयश्चैक एवेत्येवं चत्वारो नयाः। एतैश्चतुर्भिर्नयैः षट् स्वसामयिकानि परिकर्माणि चिन्त्यन्ते, अतो भणितं 'छ चउक्क-नयाइं' ति भवन्ति। त एव चाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः। कस्मात्? उच्यते, यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति, यथा जीवोऽजीवो जीवाजीवः, लोको लोको लोकालोकः, सत् असत् सदसत् इत्येवमादि। नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छन्ति। तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिक उभयार्थिकः। अतो भणितं 'सत्त तेरासिया' त्ति। सप्त परिकर्माणि त्रैराशिकपाषण्डिकास्त्रिविधया नयचिन्तया चिन्तयन्तीत्यर्थः। (समवायांग टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि परिकर्मके जो सात भेद ऊपर गिनाये गये हैं उनमेंसे प्रथम छह भेद तो स्वसमय अर्थात् अपने सिद्धान्तके अनुसार हैं, और सातवां भेद आजीविक सम्प्रदायकी मान्यताके अनुसार है। जैनियोंके सात नयोंमेंसे प्रथम अर्थात् नैगम नयका तो संग्रह और व्यवहारमें अन्तर्भाव हो जाता है, तथा अन्तिम दो अर्थात् समभिरूढ और एवंभूत शब्दनयमें प्रविष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार मुख्यतासे उनके चार ही नय रहते हैं, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र और शब्द। इस अपेक्षासे जैनी चउक्कणइक अर्थात् चतुष्कनयिक कहलाते हैं। आजीविक सम्प्रदायवाले सब वस्तुओंको त्रि-आत्मक मानते हैं, जैसे जीव, अजीव और जीवाजीव, लोक, अलोक और लोकालोक, सत्, असत् और सदसत्, इत्यादि। नयका चिंतन भी वे तीन प्रकारसे करते हैं—द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक। अतः आजीविक तेरासिय अर्थात् त्रैराशिक भी कहलाते हैं। उन्हींकी मान्यतानुसार परिकर्मका सातवां भेद 'चुआचुअसेणिआ' जोड़ा गया है।

इस सूचनासे जैन और आजीवक सम्प्रदायोंके परस्पर सम्पर्कपर बहुत प्रकाश पड़ता है। मक्खलिगोशाल महावीरस्वामी व बुद्धदेवके समसामयिक धर्मोपदेशक थे। उनके द्वारा स्थापित

आजीविक सम्प्रदायके बहुत उल्लेख प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथोंमें पाये जाते हैं। प्रस्तुत सूचना पर से जाना जाता है कि उनका शास्त्र और सिद्धान्त जैनियोंके शास्त्र और सिद्धान्तसे बहुत ही निकटवर्ती था, केवल कुछ कुछ भेदप्रभेदों और दृष्टिकोणोंमें अन्तर था। भूमिका जैनियों और आजीविकोंकी प्राय एक ही थी। आगे चलकर, जान पड़ता है, जैनियोंने आजीविकोंकी मान्यताओं को अपने शास्त्रमें भी समाविष्ट कर लिया और इसप्रकार धीरे धीरे समस्त आजीविक परम्परा अपने ही समाजमें अन्तर्भूत कर लिया। ऊपरकी सूचनामें यद्यपि टीकाकारने आजीविकोंको पाखंडी कहा है, पर उनकी मान्यताको वे अपने शास्त्रमें स्वीकार कर रहे हैं।

परिकर्मके पूर्वोक्त सात भेद दिगम्बर मान्यतामें नहीं पाये जाते। पर इस मान्यताके जो पांच भेद चंदपण्णत्ति आदि हैं, उनमें से प्रथम तीन तो श्वेताम्बर आगमके उपांगोंमें गिनाये हुए मिलते हैं, तथा चौथा दीवसायरपण्णत्ती व जंबूदीवपण्णत्ती और चम्पपण्णत्तीके नाम नंदीसूत्रमें अनंगश्रुतके आवश्यकव्यतिरिक्त भेदके अन्तर्गत पाये जाते हैं। किन्तु पांचवां भेद वियाहपण्णत्तिका नाम पांचवें श्रुतांगके अतिरिक्त और कहीं पाया जाता।

सिद्धसेणिआ परिकम्मके १४ उपभेद

१ माउगापयाइं
२ एगट्ठिअपयाइं
३ अट्ठ या पाढोट्ठ पयाइं
४ पाढोआमास या आगास पयाइं
५ केउभूअ
६ रासिबद्ध
७ एगगुण
८ दुगुण
९ तिगुण
१० केउभूअ
११ पडिग्गहो
१२ संसारपडिग्गहो
१३ नंदावत्त
१४ सिद्धवत्त
मणुस्ससेणिआ परिकम्मके १४ भेद

१ चंदपण्णत्ती– छत्तीसलक्खपंचपदसहस्सेहि (३६०५०००) चंदायु–परिवारिद्धि–गइ–बिंबुस्सेह–वण्णण कुणइ।

२ सूरपण्णत्ती–पंचलक्खतिण्णिसहस्सेहि पदेहि (५०३०००) सूरस्सायु–भोगोव भोग–परिवारिद्धि–गइ–बिंबुस्सेह–दिणकिरणुज्जोव–वण्णणं कुणइ।

३ जंबूदीवपण्णत्ती–तिण्णिलक्खपंचवीस–पदसहस्सेहि (३२५०००) जंबूदीव गयाणाविहमणुयाण भोग–कम्मभूमियाणं अण्णेसिं च पव्वद–दह–णइ–वेइय–वस्सावास अकिट्टिमजिणहराईणं वण्णणं कुणइ।

४ दीवसायरपण्णत्ती– बावण्णलक्खछत्तीसपद–

वा भेद 'मणुस्सावत्त' नामका है।

पुट्ठसेणिआदि शेष पांच परिकर्मोंमें प्रत्येकके ११ उपभेद हैं जो प्रथम तीनको छोड़ कर शेष पूर्वोक्तही हैं। अंतिम भेदके स्थानमें स्वनामसूचक भेद है, जैसे पुट्ठावत्त, ओगाढा-वत्त, उवसंपज्जणावत्त, विप्पजहणावत्त और चुआचुआवत्त। इसप्रकार ये सब मिलकर ८३ प्रभेद होते हैं[१]।

पदप्रमाणेण दीवसायरपमाणं अण्णं पि दीवसायरतब्भूदत्थं बहुभेयं वण्णेदि।

५. वियाहपण्णत्ती- चउरासीदिसहस्सछत्तीस-पदसहस्सेहि (८४३६०००) किं जीवो अत्थि किं णत्थि इदि भवसिद्धिय अभवसिद्धियरासिं च वण्णेदि।

परिकर्मके इन माउगापयाइ आदि उपभेदोंका कोई विवरण हमें उपलब्ध नहीं है। किन्तु मातृकापदसे जान पड़ता है उसमें लिपि विज्ञानका विवरण था। इसीप्रकार अन्य भेदोंमें शिक्षाके मुख्यविषय गणित, न्याय आदिका विवरण रहा जान पड़ता है।

सुत्तके ८८ भेद

१ उज्जुसुय या उजुग
२ परिणयापरिणय
३ बहुभंगिअ
४ विजयचरियं, विप्पचइय या विनयचरियं
५ अणंतर
६ परंपर
७ मासाण (समाण सं अ)
८ संजूह (मासाण- ,,)
९ संभिण्ण
१० आहच्चाय (अहाच्चाय सं अ)
११ सोवत्थिअवत्त
१२ नंदावत्त
१३ बहुल
१४ पुट्ठापुट्ठ
१५ वियावत्त

सुत्तके अन्तर्गत विषय

सुत्तं अट्ठासीदिलक्खपदेहि (८८०००००) अबंधओ, अवलेवओ, अकत्ता, अभोत्ता, णिग्गुणो, सव्वगओ, अणुमेत्तो, णत्थि जीवो, जीवो चेव अत्थि, पुढवियादीणं समुदएण जीवो उप्पज्जइ, णिच्चेयणो, णाणेण विणा, सचेयणो, णिच्चो, अणिच्चो अप्पेत्ति वण्णेदि। तेरासियं, णियदिवादं, विण्णाणवादं, सद्दवादं, पहाणवादं, दव्ववादं, पुरिसवादं च वण्णेदि। उत्तं च-

अट्ठासी अहियारेसु चउण्हमहियाराणमत्थि णिद्देसो। पढमो अबंधयाणं, विदियो तेरासियाण बोद्धव्वो॥ तदियो य णियइपक्खे हवइ चउत्थो ससमयम्मि। (धवला स प, पृ ११०)

१ [illegible]।
(समवायांग टीका)

प्रकार सात पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंकी संख्यामें दोनों सम्प्रदायोंमें मतभेद है। शेष सात पूर्वोंकी वस्तु-संख्यामें कोई भेद नहीं है। श्वेताम्बर मान्यतामें प्रथम चार पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंके अतिरिक्त चूलिकाओंकी संख्या भी दी गई है, और टीकादिके पत्रमभेद चूलिकाके वर्णनमें कहा है कि वहां उन्हीं चार पूर्वोंकी चूलिकाओंसे अभिप्राय है। यदि ये चूलिकाएं पूर्वोंके अन्तर्गत थीं, तो यह समझमें नहीं आता कि उनका फिर एक स्वतंत्र विभाग क्यों रखा गया। दिगम्बरीय मान्यतामें पूर्वोंके भीतर कोई चूलिकाएं नहीं गिनायी गईं और चूलिका विभागके भीतर जो पांच चूलिकाएं बतलायी हैं उनका प्रथम चार पूर्वोंसे कोई संबंध भी ज्ञात नहीं होता।

समवायांग और नन्दीसूत्रमें पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और चूलिकाओंकी संख्या-सूचक निम्न तीन गाथाएं पाई जाती हैं—

दस चोद्दस अट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि।
सोलस तीसा वीसा पण्णरस अणुप्पवायम्मि ॥ १ ॥
बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पण्णवीसाओ ॥ २ ॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि।
आइल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया णत्थि ॥ ३ ॥

धवलामें (वेदनाखंडके आदिमें) पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और वस्तुओंके अन्तर्गत पाहुडोंकी संख्याका द्योतक निम्न तीन गाथाएं पाई जाती हैं—

दस चोद्दस अट्ठारस (अट्टारस) बारस य दोसु पुव्वेसु।
सोलस वीस तीस दसमम्मि य पण्णरस वत्थू ॥ १ ॥
एदेसिं पुव्वाणं एवदिओ वत्थुसंगहो भणिदो।
सेसाणं पुव्वाणं दस दस वत्थू पणिवयामि ॥ २ ॥
एक्केक्कम्हि य वत्थू वीस वीस च पाहुडा भणिदा।
विसम-समा हि य वत्थू सव्वे पुण पाहुडेहिं समा ॥ ३ ॥

इनके अंक भी धवलामें दिये हुए हैं जिन्हें हम निम्न तालिकाद्वारा अच्छीतरह प्रकट कर सकते हैं।

पूर्व	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	कुल
वस्तु	१	१४	८	१८	१२	१२	१६	२०	३०	१५	१०	१०	१०	१०	१९५
पाहुड	२	२८०	१६	३६०	२४	२४०	३२०	४००	६ ०	३००	२००	२००	२ ०	२ ०	३९००

सव्व-वत्थु-समासो पंचाणउदिसदमेत्तो १९५ ।
सव्व पाहुड-समासो तिसहस्स-णव-सद-मेत्तो ३९०० ।

आगे यह प्रश्न उठाया गया है कि जब दश और चौदह पूर्वियोंको अलग अलग नमस्कार किया तब बीचके ग्यारहपूर्वी, बारहपूर्वी और तेरहपूर्वियों को भी क्यों नहीं पृथक् नमस्कार किया। इसका उत्तर दिया गया है कि उनको नमस्कार तो चौदहपूर्वियोंके नमस्कारमें आ ही जाता है, पर जैसा जिनवचनप्रत्यय विद्यानुवादकी समाप्तिके समय देखा जाता है वैसा ही चौदह पूर्वोंकी समाप्तिपर पाया जाता है। जब चौदहपूर्वोंको समाप्त करके रात्रिमें श्रुतकेवली कायोत्सर्ग विराजमान रहते हैं तब प्रभात समय भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, और कल्पवासी देव आकर उनकी शंखतूर्यके साथ महापूजा करते हैं। इसप्रकार यद्यपि जिनवचनत्वकी अपेक्षासे सभी पूर्व समान हैं, तथापि विद्यानुप्रवाद और लोकबिन्दुसारका महत्त्व विशेष है, क्योंकि वहीं देवोंद्वारा पूजा प्राप्त होती है। दोनों अवस्थाओंमें विशेषता केवल इतनी है कि चतुर्दशपूर्वधारी फिर मिथ्यात्वमें नहीं जा सकता और उस भवमें असंयमको भी प्राप्त नहीं होता।

इससे जाना जाता है कि श्रुतपाठियोंमें किसी एक प्रकारसे दशम पूर्वपर ही समाप्त हो जाता थी, वहीं वह देवपूजाको भी प्राप्त कर लेता था और यदि लोभमें आकर पथभ्रष्ट न हुआ तो 'जिन' संज्ञाका भी अधिकारी रहता था। इससे दिगम्बर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके प्रथमानुयोग नामक विभागको पूर्वगतसे पहले रखने की सार्थकता भी सिद्ध हो जाती है। यदि पूर्वगत पश्चात् प्रथमानुयोग रहा तो उसका तात्पर्य यह होगा कि दशपूर्वियोंको उसका ज्ञान ही नहीं हो पायगा। अतएव इस दशपूर्वोंकी मान्यताके अनुसार प्रथमानुयोगको पूर्वके पहले रखना बहुत सार्थक है। आगेके शेष पूर्व और चूलिकाएं लौकिक और चमत्कारिक विद्याओंसे ही संबंध रखती हैं, वे आत्मशुद्धि करानेमें उतनी कार्यकारी नहीं हैं, जितनी उसका [illegible] करानेमें हैं।

भिन्न और अभिन्न दशपूर्वीकी मान्यताका निर्देश नंदीसूत्रमें भी है, यथा—

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं तेण परं भिण्णेसु भयणा से तं सम्मसुयं (सू ४१)

टीकाकारने भिन्न और अभिन्न [illegible] का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—

[illegible] इत्यादि

अनुकूलोऽनुयोगो वा योगोऽनुयोगः सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्द्धमनुकूलः सम्बन्ध इत्यर्थः ।

अर्थात्—सूत्रद्वारा प्रतिपादित अर्थके अनुकूल सम्बन्धका नाम ही अनुयोग है। तात्पर्य यह कि जिसमें सूत्र वर्णित सिद्धांत या नियमोंके अनुकूल दृष्टान्त और उदाहरण पाये जायें वह अनुयोग है। उसके दो भेद करनेका अभिप्राय नन्दीसूत्रकी टीकामें यह बतलाया गया है कि—

इह मूलं धर्मप्रणयनात् तीर्थकरास्तेषां प्रथम सम्यक्त्वाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरोऽनुयोगो मूलप्रथमानुयोग । इक्ष्वाकूनां पूर्वापरपर्वपरिच्छिन्ना मध्यभागो गण्डिका, गण्डिकेव गण्डिका, एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिरित्यर्थः । तस्या अनुयोगो गण्डिकानुयोग ।

इसका अभिप्राय यह है कि धर्मके प्रवर्तक होनेसे तीर्थंकर ही मूल पुरुष हैं, अतएव उनका प्रथम अर्थात् सम्यक्त्वप्राप्तिलक्षण पूर्वभव आदिका वर्णन करनेवाला अनुयोग मूलप्रथमानुयोग है। और जैसे गन्ने आदिकी गंडेरी आजू बाजूकी गांठोंसे सीमित रहती है ऐसे ही जिसमें एक एक अधिकार अलग अलग हो उसे गण्डिकानुयोग कहते हैं, जैसे कुलकरगण्डिका आदि। किन्तु यह विभाग कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता क्योंकि दोनोंमें विषयका पुनरावृत्ति पायी जाती है। जैसे तीर्थंकर और उनके गणधरोंका वर्णन दोनों विभागोंमें आता है। दिगम्बरोंमें ऐसा कोई विभाग नहीं किया गया और साफ सीधे तौरसे बतलाया गया है कि दृष्टिवादके प्रथमानुयोगमें चौबीस अधिकारोंद्वारा बारह जिनवंशों और राजवंशोंका वर्णन किया गया है।

दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोगका अर्थ इसप्रकार किया गया है—

प्रथमं मिथ्यादृष्टिमव्रतिकमव्युत्पन्नं वा प्रतिपाद्यमाश्रित्य प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकारः प्रथमानुयोग
(गोम्मटसार टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि 'प्रथम' का तात्पर्य अव्रती और अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टि शिष्यसे है और उसके लिए जिस अनुयोगकी प्रवृत्ति होती है वह प्रथमानुयोग कहलाता है। इसीके भीतर सब पुराणोंका अन्तर्भाव हो जाता है। किन्तु इसका पद प्रमाण केवल पांच हजार बतलाया गया है। इससे जान पड़ता है कि दृष्टिवादके अन्तर्गत प्रथमानुयोगमें सब कथावर्णन बहुत संक्षेपमें किया गया है। पुराणवादका विस्तार पीछे पीछे किया गया होगा।

नन्दिसूत्रमें [illegible] गण्डिकानुयोगके अन्तर्गत चित्रान्तरगण्डिकाका बड़ा ही विचित्र और [illegible] परिचय दिया है। टीकाकारने उसे बतलाया है कि—

कुलकरगण्डिका [illegible] तत्र कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वभवजन्मप्रभृतिवर्णन [illegible] [illegible] चित्रान्तरगण्डिका [illegible]

अथात् [illegible] विमलवाहनादि कुलकरोंके पूर्वभव जन्मादिका सविस्तर वर्णन किया गया है। इसीप्रकार [illegible] गण्डिकाओंमें उनके नाम [illegible] विषय वर्णन समझना चाहिए।

सत्कर्मका षट्खण्डागमके भीतर किया। इस प्राभृतके जो चौबीस अवान्तर अधिकार थे, उनके विषयका संक्षिप्त परिचय धवलाकारने वेदनाखण्डके आदिमें कराया है जो इस प्रकार है—

१ कदि—कदीए ओरालिय-वेउव्विय-तेजाहार कम्मइयसरीराणं संघादण-परिसादणकदी भव-पढमपढम-चरिमम्मि ट्ठिदजीवाणं कदि-णोकदि अवत्तव्वसंखाओ च परूविज्जंति।

१ कृति—कृति अर्थाधिकारमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस, आहारक और कार्मण, इन पांचों शरीरोंकी संघातन और परिशातनरूप कृतिका तथा भवके प्रथम, अप्रथम और चरम समयमें स्थित जीवोंके कृति, नोकृति और अवक्तव्यरूप संख्याओंका वर्णन है।

२ वेदणा—वेदणाए कम्मपोग्गलाणं वेदणा सण्णिदाणं वेदणणिक्खेवादि-सोलसेहि अणिओग ेहि परूवणा कीरदे।

२ वेदना—वेदना अर्थाधिकारमें वेदनासंज्ञिक कर्मपुद्गलोंका वेदनानिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा वर्णन किया गया है।

३ फास—फासणिओगद्दारम्मि कम्मपोग्गलाणं णाणावरणादिभेएण अट्ठभेदमुवगयाणं फासगुणसंबंधेण पत्तफासणामाणं फासणिक्खेवादि-सोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

३ स्पर्श—स्पर्श अर्थाधिकारमें स्पर्श गुणके सम्बन्धसे प्राप्त हुए स्पर्शनिर्माण, स्पर्शनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादिके भेदसे आठ भेदको प्राप्त हुए कर्मपुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

४ कम्म—कम्मे त्ति अणिओगद्दारे पोग्गलाणं णाणावरणादि-कम्मकरणक्खमत्तेण पत्त-कम्मसण्णाणं कम्मणिक्खेवादिसोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

४ कर्म—कर्म अर्थाधिकारमें कर्मनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादि कर्मकरणमें समर्थ होनेसे जिन्हें कर्मसंज्ञा प्राप्त हो गई है, ऐसे पुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

५ पयडि—पयडि त्ति अणियोगद्दारम्हि पोग्गलाणं कदिम्हि परूविद-संघादाणं वेदणाए परूविदावत्थाविसेस-पच्चयादीणं फासम्मि णिरूविद वावाराणं पयडिणिक्खेवादि-सोलस-अणियोगद्दारेहि सहाव परूवणा कीरदे।

५ प्रकृति—प्रकृति अर्थाधिकारमें कृति अधिकारमें कहे गये संघातनरूप, वेदना अधिकारमें कहे गये अवस्थाविशेष प्रत्ययादि रूप, स्पर्शमें कहे गये जीवसे सबद्ध और जीवके साथ सबद्ध होनेसे उत्पन्न हुए गुणके द्वारा कर्म अधिकारमें कथित रूपसे व्यापार करनेवाले पुद्गलोंके स्वभाव

का निरूपण प्रकृतिनिर्देश आदि स्वतंत्र अधिकारोंके द्वारा किया गया है।

बंधण—जं तं बंधणं तं चउव्विहं—बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणमिदि। तत्थ बंधो जीवकम्मपदेसाणं सादियमणादियं च बंधं वण्णेदि। बंधगाहियारो अट्ठविहकम्म-बंधगे परूवेदि, सो च खुद्दाबंधे परूविदो। बंधणिज्जं बंधपाओग्गं तदपाओग्गं पोग्गल-दव्वं परूवेदि। बंधविहाणं पयडिबंधं ठिदिबंधं अणुभागबंधं पदेसबंधं च परूवेदि।

६ **बन्धन**—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान, इसप्रकार बन्धन अर्थाधिकारके चार भेद हैं। उनमेंसे बन्ध अधिकार जीव और कर्मप्रदेशोंका सादि और अनादिरूप बन्धका वर्णन करता है। बन्धक अधिकार आठ प्रकारके कर्मोंके बन्धकोंका प्रतिपादन करता है जिसका कथन क्षुद्रकबन्धमें किया जा चुका है। बन्धके योग्य पुद्गलद्रव्यका कथन बन्धनीय अधिकार करता है। बन्धविधान अधिकार प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध, इन चार बन्धके भेदोंका कथन करता है।

७ **णिबंधण**—णिबंधणं मूलुत्तरपयडीणं णिबंधणं वण्णेदि। जहा चक्खिंदियं रूवम्मि णिबद्धं, सोदिंदियं सद्दम्मि णिबद्धं, घाणिंदियं गंधम्मि णिबद्धं, जिब्भिंदियं रसम्मि णिबद्धं, फासिंदियं कक्खडादिफासेसु णिबद्धं, तहा इमाओ पयडीओ एदेसु अत्थेसु णिबद्धाओ त्ति णिबंधणं परूवेदि, एसो भावत्थो।

७ **निबन्धन**—निबन्धन अधिकार मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतियोंके निबन्धनका कथन करता है। जैसे, चक्षुरिन्द्रिय रूपमें निबद्ध है। श्रोत्रेन्द्रिय शब्दमें निबद्ध है। घ्राणेन्द्रिय गन्धमें निबद्ध है। जिह्वा इन्द्रिय रसमें निबद्ध है और स्पर्शनेन्द्रिय कर्कश आदि स्पर्शमें निबद्ध है। उसी प्रकार ये मूलप्रकृतियां और उत्तरप्रकृतियां इन विषयोंमें निबद्ध हैं, इसप्रकार निबन्धन अर्थाधिकार प्ररूपण करता है यह भावार्थ जानना चाहिये।

८ **पक्कम**—पक्कमेत्ति अणियोगद्दारं अकम्मसरूवेण ट्ठिदाणं कम्मइयवग्गणाखंधाणं मूलुत्तर-पयडिसरूवेण परिणममाणाणं पयडि ट्ठिदि अणुभागविसेसेण विसिट्ठाणं पदेसपरूवणं

८ **प्रक्रम**—प्रक्रम अर्थाधिकार जो वर्गणास्कंध अभी कर्मरूपसे स्थित नहीं हैं, किंतु जो मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतिरूपसे परिणमन करनेवाले हैं और जो प्रकृति, स्थिति और

१३ लेस्सा–लेस्सेत्ति अणिओगद्दारं छद्दव्वले स्साओ परूवेदि।

१४ लेस्सायम्म–लेस्सापरिणामत्ति अणियोग द्दारमतरग-छलेस्सा-परिणयजीवाण बज्झ- कज्जपरूवण कुणदि।

१५ लेस्सापरिणाम–लेस्सापरिणामेत्ति अणि- योगद्दार जीव पोग्गलाण दव्व-भावलेस्साहि परिणमणविहाण वण्णेदि।

१६ सादमसाद–सादमसादेत्ति अणियोगद्दारमे यतसाद-अणेयततोऽगाण (?) गदियादि मग्गणाओ अस्सिदूण परूवण कुणइ।

१७ दीहेरहस्स–दीहेरहस्सेत्ति अणिओगद्दार पयडि ट्ठिदि-अणुभाग पदेसे अस्सिदूण दीहरहस्सत्त परूवेदि।

१८ भवधारणीय–भवधारणाए त्ति अणियोग द्दार केण कम्मेण णेरइय-तिरिक्ख-मणुस देवभवा धरिज्जति त्ति परूवेदि।

१९ पोग्गलत्त–पोग्गलअत्तेत्ति अणिओगद्दार गह- णादो अत्ता पोग्गला परिणामदो अत्ता पोग्गला उवभोगदो अत्ता पोग्गला आहारदो अत्ता पोग्गला ममत्तादो अत्ता पोग्गला परिग्गहादो अत्ता पोग्गला त्ति अप्पणिज्जाणप्पणिज्ज पोग्गलाण पोग्गलाण सबधेण पोग्गलत्त पत्तजीवाण च परूवण कुणदि।

१३ लेश्या–लेश्या अनुयोगद्वार छह [द्रव्य-] लेश्याओंका प्रतिपादन करता है।

१४ लेश्याकर्म–लेश्याकर्म अधिकार अन[्तरंग] छह लेश्याओंसे परिणत जीवोंके ब[ाह्य] कार्यका प्रतिपादन करता है।

१५ लेश्यापरिणाम–लेश्यापरिणाम अधिक[ार] जीव और पुद्गलोंके द्रव्य और भाव[लेश्या] परिणमन करनेके विधानका कथन क[रता] है।

१६ सातासात–सातासात अधिकार एकान्[त] सात, अनेकान्त सात, एकान्त असात[,] अनेकान्त असातका गति आदि मार्गण[ा]ओंके आश्रयसे वर्णन करता है।

१७ दीर्घह्रस्व–दीर्घह्रस्व अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंका आश्रय लेकर दीर्घता और ह्रस्वताका कथन करता है।

१८ भवधारणीय–भवधारणीय अधिकार, किस कर्मसे नरकभव प्राप्त होता है, किससे तिर्यंचभव, किससे मनुष्यभव और किससे देवभव प्राप्त होता है, इसका कथन करता है।

१९ पुद्गलात्त–पुद्गलात्त अनुयोगद्वार दण्डादिक ग्रहण करनेसे आत्त पुद्गलोंका, मिथ्या त्वादि परिणामोंसे आत्त पुद्गलोंका, उपभोगसे आत्त पुद्गलोंका, आहारसे आत्त पुद्गलोंका, ममतासे आत्त पुद्गलोंका और परिग्रहसे आत्त पुद्गलोंका, इसप्रकार आत्मसात् किये हुए और नहीं किये हुए

पुद्गलोंका तथा पुद्गल सम्बन्धसे पुद्गलत्वको प्राप्त हुए जीवोंका वर्णन करता है।

२० णिधत्तमणिधत्त— णिधत्तमणिधत्तमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि अणुभागाणं णिधत्तमणिधत्तं च परूवेदि। णिधत्तमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमुदए दादुं अण्णपयडिं वा संकामेदुं तं णिधत्तं णाम। तव्विवरीयमणिधत्तं।

२० निधत्तानिधत्त–निधत्तानिधत्त अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निधत्त और अनिधत्तका प्रतिपादन करता है। जिसमें प्रदेशाग्र उदय अर्थात् उदीरणामें नहीं दिया जा सकता है और अन्य प्रकृतिरूप संक्रमणको भी प्राप्त नहीं कराया जा सकता है, उसे निधत्त कहते हैं। अनिधत्त इससे विपरीत होता है।

२१ णिकाचिदमणिकाचिद- णिकाचिदमणिकाचिदमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभागाणं णिकाचणं परूवेदि। णिकाचणमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमोकड्डिदुमण्णपयडिं संकामेदुमुदए दादुं वा तण्णिकाचिदं णाम। तव्विवरीदमणिकाचिदं।

२१ निकाचितानिकाचित–निकाचितानिकाचित अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निकाचित और अनिकाचितका वर्णन करता है। जिसमें प्रदेशाग्रका उत्कर्षण, अपकर्षण, परप्रकृतिसंक्रमण नहीं हो सकता और न वह उदय अथवा उदीरणामें ही दिया जा सकता है उसे निकाचित कहते हैं। अनिकाचित इससे विपरीत होता है।

२२ कम्मट्ठिदि–कम्मट्ठिदि त्ति अणियोगद्दारं सव्वकम्माणं सत्तिकम्मट्ठिदिमुक्कड्डणोकड्डणजणिदट्ठिदिं च परूवेदि।

२२ कर्मस्थिति–कर्मस्थिति अनुयोगद्वार सब कर्मोंकी शक्तिरूप कर्मस्थितिका और उत्कर्षण तथा अपकर्षणसे उत्पन्न हुई कर्मस्थितिका वर्णन करता है।

२३ पच्छिमक्खंध [illegible]

२३ पश्चिमस्कन्ध–पश्चिमस्कन्ध अर्थाधिकार दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातका इस समुद्घातमें होनेवाले स्थितिखण्डघात और अनुभागखण्डघातके विधानका तथा इसी क्रमसे होनेवाले योगनिरोध व सिद्धत्वका और [illegible] विधानका वर्णन करता है।

२४ अप्पाबहुग— अप्पाबहुगाणिओगद्दारं अदीदसव्वाणिओगद्दारेसु अप्पाबहुगं परूवेदि ।	२४ अल्पबहुत्व—अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार अतीत सर्व अनुयोगद्वारोंमें अल्पबहुत्वका प्रतिपादन करता है।

इन चौबीस अधिकारोंके विषयका प्रतिपादन पुष्पदन्त और भूतबलि गुरु अन्य अन्य विभाग से किया है जिसके कारण उनकी कृति षट्खंडागम कहलाती है। उक्त चौबीस अधिकारोंमें पाचवा बंधन विषयकी दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। इसीके कुछ अवान्तर अधिकारोंको लेकर प्रथम तीन खंडों अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और बंधसामित्तविचयकी रचना हुई है। इन तीन खंडोंमें समानता यह है कि उनमें जीवकी बंधकी प्रधानताका प्रतिपादन किया गया है। उनका मंगलाचरण भी एक है। इन्हीं तीन खंडोंपर कुन्दकुन्दद्वारा परिकर्म नामक टीका लिखी कही गयी है। इन्हीं तीन खंडोंके पारगत होनेसे अनुमानतः त्रैविद्यदेवकी उपाधि प्राप्त होती थी। इन्हीं तीन खंडोंका संक्षेप सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्रकृत गोम्मटसारके प्रथम विभाग जीवकाण्डमें पाया जाता है।

इन तीन खंडोंके पश्चात् उक्त चौबीस अधिकारोंका प्ररूपण कृति वेदनादि क्रमसे किया गया है और प्रथम छह अर्थात् बंधन तत्त्वके प्ररूपणको अधिकार व अवान्तर अधिकारकी प्रधानतानुसार अगले तीन खंडों वेदणा, वग्गणा और महाबंधमें विभाजित कर दिया गया है। इन तीन खंडोंके विषय विवेचनकी समानता यह है कि यहां बंधनीय कर्मकी प्रधानतासे विवेचन किया गया है। इनमें अन्तिम महाबंध सबसे बड़ा है और स्वतंत्र पुस्तकारूढ़ है। जो उपर्युक्त तीन खंडोंके अतिरिक्त इन तीनोंमें भी पारगत हो जाते थे, वे सिद्धान्तचक्रवर्ती पदके अधिकारी होते थे। सि. च. नेमिचन्द्रने इनका संक्षेप गोम्मटसार कर्मकाण्डमें किया है।

भूतबलि रचित सूत्रग्रंथ छठवें बंधन अधिकारके साथही समाप्त हो जाता है। शेष निबन्धनादि अठारह अधिकारोंका प्ररूपण धवला टीकाके रचयिता वीरसेनाचार्यकृत है, जिसे उन्होंने चूलिका कहकर पृथक् निर्देश कर दिया है।

उपर्युक्त खंडविभागादिका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये हुए मानचित्रोंसे स्पष्टतया समझमें आजाता है। उन चित्रोंमें बतलाया हुई जीवट्ठाणकी नवमी चूलिका गति-आगतिकी उत्पत्तिके विषयमें एक सूचना कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। यह चूलिका धवलामें वियाहपण्णत्ति से उत्पन्न हुई कही गयी है। मानचित्रमें व्याख्याप्रज्ञप्तिके आगे (पांचवा अंग) ऐसा लिख दिया गया है, क्योंकि यह नाम पांचवें अंगका पाया जाता है। किन्तु दृष्टिवादके प्रथम विभाग परिकर्मके पांच भेदोंमें भी पांचवा भेद वियाहपण्णत्ति नामका पाया जाता है। अतएव संभव है कि गति-आगति चूलिकाकी उत्पादक वियाहपण्णत्तिसे इसीका अभिप्राय हो।

९ खवण		
१० दसणमोहणीयस्स उवसामणा	} सम्मत्त	
११ ,, ,, खवणा		
१२ देसविरदी		
१३ चरित्तमोहणीयस्स उवसामणा	} संजम	
१४ ,, ,, खवणा		
१५ अद्धापरिमाणणिद्देस ।		

इस प्राभृतके आगे पीछेका इतिहास संक्षेपमें धवलाकारने इसप्रकार दिया है—

'एसो अत्थो विउलगिरिमत्थयत्थेण पच्चक्खीकय तिकालगोयरछद्दव्वेण वड्ढमाणभडारएण गोदमथेरस्स कहिदो। पुणो सो अत्थो आइरियपरंपराए आगंतूण गुणहरभडारयं संपत्तो। पुणो तत्तो आइरियपरंपराए आगंतूण अज्जमखु णागहत्थीणं भडारयाणं मूलं पत्तो। पुणो तेहि दोहि वि कमेण जदिवसहभडारयस्स वक्खाणिदो। तेण वि × × सिस्साणुग्गहट्ठं चुण्णिसुत्ते लिहिदा'।

अर्थात् इस कसायपाहुडका मूल विषय वर्धमान स्वामीने विपुलाचलपर गौतम गणधरको कहा। वही आचार्य परंपरासे गुणधर भट्टारकको प्राप्त हुआ। उनसे आचार्य-परंपराद्वारा वह आर्यमंक्षु और नागहस्ती आचार्योंके पास आया, जिन्होंने क्रमसे यतिवृषभ भट्टारकको उसका व्याख्यान किया। यतिवृषभने फिर उसपर चूर्णिसूत्र रचे।

गुणधराचार्यकृत गाथारूप कसायपाहुड और यतिवृषभकृत चूर्णिसूत्र वीरसेन और जिनसेनाचार्यकृत जयधवलामें ग्रथित हैं जिसका परिमाण ६० हजार श्लोक है। इस टीकामें आर्यमंक्षु और नागहस्तिके अलग अलग व्याख्यानके तथा उच्चारणाचार्यकृत वृत्तिसूत्रके भी अनेक उल्लेख पाये जाते हैं। यतिवृषभके चूर्णिसूत्रोंकी संख्या छह हजार और वृत्तिसूत्रोंकी बारह हजार बताई जाती है।

नंदीसूत्रमें पूर्वोके प्रभेदोंमें पाहुडों और पाहुडिकाओंका भी निम्नप्रकार उल्लेख है, किन्तु उनका विशेष परिचय कुछ नहीं पाया जाता—

'से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयक्खंधे चोद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडिआओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडिआओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा अणंता पज्जवा' आदि

६ ग्रंथका विषय

सत्प्ररूपणाके प्रथम भागमें आचार्य गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका विवरण कर चुके हैं। अब इस भागमें पूर्वोक्त विवरणके आश्रयसे धवलाकार वीरसेन स्वामी उन्हींका विशेष प्ररूपण करते हैं—

अथवा सन्तसुत्तविवरणसमत्तणंतरं तस्स परूवणं भणिस्सामो। (पृ ४११)

किन्तु इस विशेष प्ररूपणमें उन्होंने गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति आदि बीस प्ररूपणाओं द्वारा जीवोंकी परीक्षा की है। यह बीस प्ररूपणाओंका विभाग पूर्वोक्त सत्प्ररूपणाके सूत्रोंमें नहीं पाया जाता, और इसलिये टीकाकारने एक शंका उठाकर यह बतला दिया है कि सूत्रोंमें स्पष्ट उल्लिखित न होने पर भी इन बीस प्ररूपणाओंका सूत्रकथित गुणस्थान और मार्गणास्थानोंके भेदोंमें अन्तर्भाव हो जाता है, अतः ये प्ररूपणाएं सूत्रोक्त नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता (पृ. ४१४)।

सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते । [illegible] कथंचित्तयोर्भेदात् । (पृ. ४१५)

इससे यह तो स्पष्ट है कि यह बीस प्ररूपणारूप विभाग पुष्पदन्ताचार्यकृत नहीं है। यह स्वयं धवलाकारकृत भी नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन प्ररूपणाओंका नामनिर्देश करनेवाली एक प्राचीन गाथाको 'उक्तं च' रूपसे उद्धृत किया है। इस विभागका प्राचीनतम निर्देश हमें यतिवृषभाचार्य कृत तिलोयपण्णत्तिमें मिलता है। यथा—

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवजोगा कहिदव्वा णारइयाण जहाजोग्गं ॥१०२॥

* * *

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवजोगा कहिदव्वा एदाण कुमारदेवाण ॥१८२॥

आदि

किन्तु यह अभी निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि इस बीस प्ररूपणारूप विभागका आदि कर्ता कौन है? यह विषय अन्वेषणीय है।

गुणस्थानों व मार्गणास्थानोंके अनेक [illegible] प्रभेदोंका [illegible] जीवोंमें [illegible], पर्याप्त व अपर्याप्त [illegible] आगमकी [illegible] बहुत [illegible] है। इस प्रकार विभागका परिचय विषय-सूचीसे मिल सकता है। अतः [illegible] विषय वर्णनकी [illegible] नहीं है। प्रथम भागकी भूमिकामें गुणस्थान [illegible] सामान्य परिचय [illegible] विवेचन किया जाय। [illegible] उपयोगी विषयोंकी [illegible] है। अतः हम [illegible] करनेकी आवश्यकता [illegible] हैं।

युक्त समझे जांय, या अलग अलग ? यदि अलग अलग लें तो ये सब विभक्तिहीन रह जाते हैं, यदि समासरूप लें तो 'च' की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। संशोधनमें यह प्रयत्न किया गया है कि यथाशक्ति प्रतियोंके पाठको सुरक्षित रखते हुए जितने कम सुधारसे काम चल सके उतना कम सुधार करना। किंतु अविभक्तिक पदोंको जानबूझकर बिना यथेष्ट कारणके सविभक्तिक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया। इस कारण प्ररूपणाओंमें बहुतायतसे विभक्तिहीन पद पाये जायेंगे।

इन प्ररूपणाओंमें आलापोंके नामनिर्देश स्वभावतः पुनः पुनः आये हैं। प्रतियोंमें इन्हें प्रायः संक्षेपतः आदिके अक्षर देकर बिन्दु रखकर ही सूचित किया है, जैसे 'गुणट्ठाण' के स्थानपर गुण०, 'पज्जत्ताओ' के स्थानपर प० आदि। यदि सब प्रतियोंमें ये संक्षिप्त रूप एकसे होते, तो समझा जाता कि वे मूडादर्श प्रतिके अनुसार हैं, अतः मुद्रितरूपमें भी उन्हें वैसे ही रखना कदाचित् उपयुक्त होता। किन्तु किसी प्रतिमें एक अक्षर लिखकर, किसीमें दो अक्षर लिखकर आदि भिन्नरूपसे संक्षेप बनाये गये हैं और किसी प्रतिमें वे पूरे रूपोंमें भी लिखे हैं। इसप्रकार बिन्दुसहित संक्षिप्तरूप कारंजाकी प्रतिमें सबसे अधिक और आराकी प्रतिमें सबसे कम हैं। इस अव्यवस्थाको देखते हुए आदर्श प्रतिमें बिन्दु हैं या नहीं, इस विषयमें शंका हो जानेके कारण हमने इन संक्षिप्त रूपोंका उपयोग न करके पूरे शब्द लिखना ही उचित समझा।

प्रत्येक आलापमें बीस बीस प्ररूपणाएं हैं। पर कहीं कहीं प्रतियोंमें एक शब्दसे लगाकर पूरे आलाप तक भी छूटे हुए पाये जाते हैं। इनकी पूर्ति एक दूसरी प्रतियोंसे हो गई है, किन्तु कहीं कहीं उपलब्ध सभी प्रतियोंमें पाठ छूटे हुए हैं जैसा कि पाठटिप्पण व प्रतिमिलान और छूटे हुए पाठोंकी तालिकासे ज्ञात हो सकेगा। इन पाठोंकी पूर्ति विषयको देख समझकर रचनाकी शैलीमें ही उन्हींके अन्यत्र आये हुए शब्दोंद्वारा करली गई है। जहां ऐसे जोड़े हुए पाठ एक दो शब्दोंसे अधिक बडे हैं वहां वे कोष्टकके भीतर रख दिये गये हैं।

मूलमें जहां कोई विवाद नहीं है वहां प्ररूपणाओंकी प्रत्येक स्थानमें संख्या मात्र दी गई है। अनुवादमें सर्वत्र उन प्ररूपणाओंकी स्पष्ट सूचना कर देनेका प्रयत्न किया गया है और मूलका सावधानीसे अनुसरण करते हुए भी वाक्यरचना यथाशक्ति मुहावरेके अनुसार और सरल रखी गई है।

मूलमें जो आलाप आये हैं उनको और भी स्पष्ट करने तथा दृष्टिगम्य बनानेके लिये प्रत्येक आलापका नकशा भी बनाकर उसी पृष्ठपर नीचे दे दिया गया है। इनमें सम्पूर्ण अंकित करनेमें सावधानी तो बड़ी रखी गई है, फिर भी संभव है दृष्टिदोषसे दो चार जगह कोई अंक अशुद्ध छप गया हो। पर मूल और अनुवाद साम्हने होनेसे उसके कारण कोई भ्रम न हो सकेगा। नकशोंका मिलान गोम्मटसारके प्रस्तुत प्रकरणसे भी कर लिया गया है।

सत्प्ररूपणा-आलापसूची

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
ओघ आलाप		४१८
सामान्य		४१९
पर्याप्त	१	४२०
अपर्याप्त	२	४२१
१ मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३	४२३
पर्याप्त	४	४२४
अपर्याप्त	५	४२५
२ सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६	४२५
पर्याप्त	७	४२६
अपर्याप्त	८	४२७
३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि	९	४२८
४ असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१०	४२८
पर्याप्त	११	४२९
अपर्याप्त	१२	४३०
५ संयतासंयत	१३	४३१
६ प्रमत्तसंयत	१४	४३२
७ अप्रमत्तसंयत	१५	४३३
८ अपूर्वकरण	१६	४३४
९ अनिवृत्तिकरण		
प्रथम भाग	१७	४३५
द्वितीय ,,	१८	४३६
तृतीय ,,	१९	४३६
चतुर्थ ,,	२०	४३७
पंचम ,,	२१	४३८
१० सूक्ष्मसाम्पराय	२२	४३८
११ उपशान्तकषाय	२३	४३९
१२ क्षीणकषाय	२४	४४०
१३ सयोगिकेवली	२५	४४०
१४ अयोगिकेवली	२६	४४१
१५ सिद्ध	२७	४४२
आदेश आलाप		
१ गतिमार्गणा		
१ नरकगति		
सामान्य	२८	४४८
पर्याप्त	२९	४४९
अपर्याप्त	३०	४५०
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३१	४५१
पर्याप्त	३२	४५१
अपर्याप्त	३३	४५२
सासादनसम्यग्दृष्टि	३४	४५३
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३५	४५३
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३६	४५४
पर्याप्त	३७	४५५
अपर्याप्त	३८	[illegible]
प्रथमपृथिवी		
सामान्य	३९	४५६
पर्याप्त	४०	४५७
अपर्याप्त	४१	४५८
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४२	४५९
पर्याप्त	४३	४५९
अपर्याप्त	४४	४६०
सासादनसम्यग्दृष्टि	४५	४६१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४६	४६१
असंयतसम्यग्दृष्टि—		
सामान्य	४७	४६२
पर्याप्त	४८	४६३
अपर्याप्त	४९	,,
द्वितीयपृथिवी		
सामान्य	५०	४६४
पर्याप्त	५१	४६५

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
अपर्याप्त	५२	"
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	५३	४६६
पर्याप्त	५४	४६७
अपर्याप्त	५५	"
सासादनसम्यग्दृष्टि	५६	४६८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	५७	४६९
असंयतसम्यग्दृष्टि	५८	४६९
तृतीयादि पृथिवियोंके आलाप		४७०
२ तिर्यंचगति—		
सामान्य	५९	४७१
पर्याप्त	६०	४७२
अपर्याप्त	६१	४७३
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	६२	४७४
पर्याप्त	६३	४७५
अपर्याप्त	६४	"
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६५	४७६
पर्याप्त	६६	४७७
अपर्याप्त	६७	४७८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	६८	४७८
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६९	४७९
पर्याप्त	७०	४८०
अपर्याप्त	७१	४८०
संयतासंयत	७२	४८१
पंचेन्द्रियतिर्यंच		
सामान्य	७३	४८२
पर्याप्त	७४	४८३
अपर्याप्त	७५	४८४
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	७६	४८[illegible]
पर्याप्त	७७	
अपर्याप्त	[illegible]	४८६
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	[illegible]	४८[illegible]

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
पर्याप्त	८०	"
अपर्याप्त	८१	४८८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	८२	४८९
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	८३	४८९
पर्याप्त	८४	४९०
अपर्याप्त	८५	४९१
संयतासंयत	८६	४९१
पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त		४९२
पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिमती		
सामान्य	८७	४९२
पर्याप्त	८८	४९३
अपर्याप्त	८९	४९४
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	९०	४९४
पर्याप्त	९१	४९५
अपर्याप्त	९२	४९६
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	९३	४९७
पर्याप्त	९४	४९७
अपर्याप्त	९५	४९८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	९६	४९[illegible]
असंयतसम्यग्दृष्टि	९७	४९[illegible]
संयतासंयत	९८	५००
पंचेन्द्रियतिर्यंचलब्ध्य-पर्याप्तक	९९	५००
३ मनुष्यगति		
सामान्य	१००	५०१
पर्याप्त	१०१	[illegible]
अपर्याप्त	१०२	[illegible]
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	[illegible]	[illegible]
पर्याप्त	[illegible]	[illegible]
अपर्याप्त	[illegible]	[illegible]
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य		[illegible]
पर्याप्त	[illegible]	
अपर्याप्त	[illegible]	[illegible]

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
पर्याप्त	४१०	७६०
अपर्याप्त	४११	७६१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४१२	७६२
पर्याप्त	४१३	७६२
अपर्याप्त	४१४	७६३
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४१५	७६४
पर्याप्त	४१६	"
अपर्याप्त	४१७	७६५
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४१८	७६६
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४१९	७६६
पर्याप्त	४२०	७६७
अपर्याप्त	४२१	७६८
४ तेजोलेश्या		
सामान्य	४२२	७६८
पर्याप्त	४२३	७६९
अपर्याप्त	४२४	७७०
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४२५	७७१
पर्याप्त	४२६	"
अपर्याप्त	४२७	७७२
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४२८	७७३
पर्याप्त	४२९	"
अपर्याप्त	४३०	७७४
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४३१	७७५
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४३२	७७६
पर्याप्त	४३३	"
अपर्याप्त	४३४	७७७
संयतासंयत	४३५	७७७
प्रमत्तसंयत	४३६	७७८
अप्रमत्तसंयत	४३७	७७९
५ पद्मलेश्या		
सामान्य	४३८	७७९
पर्याप्त	४३९	७८०

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
अपर्याप्त	४४०	७८१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४४१	७८१
पर्याप्त	४४२	७८२
अपर्याप्त	४४३	७८३
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४४४	७८३
पर्याप्त	४४५	७८४
अपर्याप्त	४४६	७८५
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४४७	७८५
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४४८	७८६
पर्याप्त	४४९	७८६
अपर्याप्त	४५०	७८७
संयतासंयत	४५१	७८८
प्रमत्तसंयत	४५२	७८८
अप्रमत्तसंयत	४५३	७८९
६ शुक्ललेश्या		
सामान्य	४५४	७९०
पर्याप्त	४५५	७९१
अपर्याप्त	४५६	"
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४५७	७९२
पर्याप्त	४५८	७९३
अपर्याप्त	४५९	"
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४६०	७९४
पर्याप्त	४६१	७९५
अपर्याप्त	४६२	७९६
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४६३	७९६
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४६४	७९७
पर्याप्त	४६५	७९८
अपर्याप्त	४६६	"
संयतासंयत	४६७	७९९
प्रमत्तसंयत	४६८	७९९
अप्रमत्तसंयत	४६९	८००
अपूर्वकरणादि		८०१

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.	विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
मिथ्यादृष्टि			अप्रमत्तसंयत	५३२	८४६
सामान्य	५२०	८३९	अपूर्वकरण	५३३	८४७
पर्याप्त	५२१	,,	अनिवृत्तिकरण	५३४	,,
अपर्याप्त	५२२	८४०	सूक्ष्मसाम्पराय	५३५	८४८
सासादनसम्यग्दृष्टि			उपशान्तकषाय	५३६	८४९
सामान्य	५२३	८४०	क्षीणकषाय	५३७	,,
पर्याप्त	५२४	८४१	सयोगिकेवली	५३८	८५०
अपर्याप्त	५२५	८४२	अनाहारी	५३९	८५१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	५२६	,,	मिथ्यादृष्टि	५४०	८५२
असंयतसम्यग्दृष्टि			सासादनसम्यग्दृष्टि	५४१	,,
सामान्य	५२७	८४३	असंयतसम्यग्दृष्टि	५४२	८५३
पर्याप्त	५२८	,,	सयोगिकेवली	५४३	८५४
अपर्याप्त	५२९	८४४	अयोगिकेवली	५४४	,,
संयतासंयत	५३०	८४५	सिद्धभगवान	५४५	८५५
प्रमत्तसंयत	५३१	,,			

सत्प्ररूपणाके
आलापान्तर्गत विशेष विषयोंकी सूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	[illegible] स्वरूप और भेद-निरूपण	४११	८	अपर्याप्त कालमें तीनों सम्यक्त्वोंके होनेका कारण	४३०
२	[illegible] स्वरूप [illegible] प्राणोंका पृथक् [illegible]	४१२	९	भावलेश्याके स्वरूपमें मतभेद और उसका निराकरण	४३१
३	[illegible] भेद [illegible] पृथक् [illegible]	४१३	१०	अप्रमत्तसंयतके तीन संज्ञाओंके होनेमें हेतु	४३३
४	[illegible] स्वरूप और [illegible]	४१३	११	अपूर्वकरण गुणस्थानमें वचनयोग और काययोगके होनेका कारण	४३४
५	[illegible] और [illegible]-अनुकम्प [illegible] निरूपण	४१४	१२	उपशान्तकषायादि गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्या होनेका कारण	४३५
६	[illegible]	[illegible]	१३	कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके पर्याप्त और अपर्याप्तताका विचार	४४१
७	[illegible]	[illegible]	१४	[illegible] समर्थन	४४१

संतपरूवणा-आलाप

सिरि भगवंत पुप्फदंत भूदबलि पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्ठाण

तस्स

सिरि वीरसेणाइरिय विरइया टीका

धवला

संपहि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो। परूवणा णाम किं उत्तं होदि? ओघादेसेहि गुणेसु जीवसमासेसु पज्जत्तीसु पाणेसु सण्णासु गदीसु इंदिएसु काएसु जोगेसु वेदेसु कसाएसु णाणेसु संजमेसु दंसणेसु लेस्सासु भविएसु अभविएसु सम्मत्तेसु सण्णि असण्णीसु आहारि अणाहारीसु उवजोगेसु च पज्जत्तापज्जत्त विसेसणेहि विसेसिऊण जा जीव परिक्खा सा परूवणा णाम। उत्तं च—

> गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
> उवजोगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिया ॥२१७॥

सत्प्ररूपणाके सूत्रोंका विवरण समाप्त हो जानेके अनन्तर अब उनकी प्ररूपणाका वर्णन करते हैं—

शंका—प्ररूपणा किसे कहते हैं?

समाधान—सामान्य और विशेषकी अपेक्षा गुणस्थानोंमें जीवसमासोंमें पर्याप्तियोंमें प्राणोंमें संज्ञाओंमें गतियोंमें इन्द्रियोंमें कायोंमें योगोंमें वेदोंमें कषायोंमें ज्ञानोंमें संयमोंमें दर्शनोंमें, लेश्याओंमें भव्योंमें अभव्योंमें सम्यक्त्वोंमें संज्ञी असंज्ञियोंमें आहारी अनाहारियोंमें और उपयोगोंमें पर्याप्त और अपर्याप्त विशेषणोंसे विशेषित करके जो जीवोंकी परीक्षा की जाती है, उसे प्ररूपणा कहते हैं। कहा भी है—

गुणस्थान जीवसमास पर्याप्ति प्राण संज्ञा चौदह मार्गणाएं और उपयोग इस प्रकार क्रमसे बीस प्ररूपणाएं कही गई हैं ॥ २१७ ॥

१ गो. जी. २

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा उवजोग परूवणाणमत्थो वुच्चदे
प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बल काय
उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयो
शमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भा
चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्प
निमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्ग
स्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भा
पर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्ग
स्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं श
पर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्
प्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपा

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले
आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जि
द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और
ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होत
क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी
न्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों
योंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आ
करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको
करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध
है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्ग
स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को
माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्यों
आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्ग
स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका प
समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्यों
वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी नि
भूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास
कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभत परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहण-परिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदय रूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही आई, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इससे क्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है। और यदि सूत्रानुसार कही गई है तो जीवसमास प्राण पर्याप्ति उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्ति-निमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणा-स्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषा-पर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणा-स्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीर-पर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गल-प्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एके-न्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रि-योंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मन पर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमित्त-भूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

...योर्भेदोऽभिधातव्य इति।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि। मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः। परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढ-बाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात्। यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्था, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात्। स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः। न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात्।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति? किं चातः? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या

...दानिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। यह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही आभी किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करता है। और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो। पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः। के ते? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति। नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं। अब यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निःश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायरूप परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि। मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः। परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढ-बाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात्। यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्था, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात्। स्वपरग्रहण परिणाम उपयोगः। न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात्।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति? किं चातः? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदय रूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही आभो किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है। और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो। पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः। के ते? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति। नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भवन्ति, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्था, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है । इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदय रूप सामान्य लोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है ।

शंका—यह वीस प्रकारकी प्ररूपणा कही आभो, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है क्योंकि यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है । और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग परूवणाणमत्थो वुच्च
प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबल वाग्बल काय
उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयो
शमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भा
चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्प
निमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्ग
स्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भा
पर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्ग
स्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरी
पर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्
प्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपा

-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले
आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जि
द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और
ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता
क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी
न्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इ
योंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आ
करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्र
करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आ
है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्ग
स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को
माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्यों
आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्ग
स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका पर
समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्यों
वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमि
भूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिश्वास प्रा
कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलो

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्या न्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढ बाह्यार्थलोभत परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहण परिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किंतु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदय रूप सामान्य लोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । यह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है ।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही आओ, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है। और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात् । नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भवति, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात् । न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं। अब यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मन पर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रोक्ता उत नेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्रतिपादक-

ज्ञाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेषस्वरूप वेद इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है । इसी प्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले [illegible] लोभकषायसे [illegible] रूप लोभमें भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं, तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणाम विशेषको उपयोग कहते हैं । [illegible] ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है [illegible] कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके [illegible] है ।

शंका—यह बीस प्रकारकी [illegible] सूत्रानुसार कही गई है या नहीं ?

प्रतिशंका—[illegible]

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई [illegible]

[illegible]

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नायाः भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं ।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उन पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके क्षयोपशम और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खलरसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलो

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि। मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः। परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात्। यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात्। स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः। न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात्।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति? किं चातः? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासमार्गणयो

दानिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही जा रही है वह सूत्रानुसार कही गई है या नहीं?

प्रतिशंका—इस प्रश्नका क्या प्रयोजन है?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है। और यदि सूत्रानुसार [illegible]

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो। पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः। के ते? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति। नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिष्वन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादान

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं। अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निःश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिकी आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मन पर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल-रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि। मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः। परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात्। यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात्। स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः। न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात्।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति? किं चातः? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासप्राणप[illegible]

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रहसंज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और [illegible] कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके [illegible] उपयोग [illegible] है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा [illegible] सूत्रानुसार कही गई है या नहीं?

प्रतिशंका—इस प्रश्नका [illegible] प्रयोजन है?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई [illegible]
क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कही गई [illegible]
कही गई है तो जीवसमास प्राण पर्याप्ति [illegible]

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो। पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः। के ते? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासः आयुरिति। नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपाद-

---

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं। अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उन पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायरूप परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल-रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलो-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति।

सण्णा चउव्विहा आहार भय मेहुण परिग्गह सण्णा चेदि। मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः। परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात्। यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात्। स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः। न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात्।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किं सूत्रेणोक्ता उत नेति? किं चातः? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या-

दानिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है। इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्य लोभका भेद है। अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं। वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है।

शंका—यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा कही, सो क्या यह सब सूत्रके अनुसार कही गई है या नहीं?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है, तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है। और यदि सूत्रानुसार कही गई है तो जीवसमास प्राण पर्याप्ति उपयोग और संज्ञाप्ररूपणा [illegible]

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात् । नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः, चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात् । न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिःश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अब यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निःश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उन पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायरूप परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि वीर्यान्तराय कर्मके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल-रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है और आत्मपुद्गलोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोप-

प्युपयोगसञ्ज्ञाना मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति । न द्वितीयपक्षोक्त दोषोऽनभ्युपगमात् । प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्चेदुच्यते । पर्याप्तिजीवसमासा काये न्द्रियमार्गणयोर्निलीना, एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदाना तत्र प्रति पादितत्वात् । उच्छ्वासभाषामनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीना, तेषा पर्याप्तिकार्यत्वात् । कायबलप्राणोऽपि योगमार्गणातो निर्गत, बललक्षणत्वाद्योगस्य । आयु प्राणो गतौ निलीन[१], द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात् । इन्द्रियप्राणा ज्ञानमार्गणाया निलीना[२], भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात् । आहारे या तृष्णा काक्षा साहारसज्ञा । सा च रतिरूपत्वा न्मोहपर्याय[३] । रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति । तत कषायमार्गणाया माहारसज्ञा द्रष्टव्या । भयसज्ञा भयात्मिका । भयञ्च क्रोधमानयोरन्तर्लीनम्, द्वेषरूपत्वात् । ततो भयसज्ञापि कषायमार्गणाप्रभवा । मैथुनसज्ञा वेदमार्गणाप्रभेद, स्त्रीपुनपुंसकवेदाना तीव्रोदयरूपत्वात् । परिग्रहसज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता, बाह्यार्थालीढलोभरूपत्वात् । साका

जिसप्रकार अन्तर्भाव होता है उसप्रकार कथन करना चाहिये ?

समाधान—दूसरे पक्षमें दिया गया दूषण तो यहा पर आता नहीं है, क्योंकि, वैसा माना नहीं गया है । तथा प्रथम पक्षमे जो जीवसमास आदिके चौदह मार्गणाओंमें अन्तर्भाव करनेकी बात कही है, सो कहा जाता है । पर्याप्ति और जीवसमास प्ररूपणा काय और इन्द्रिय मार्गणामें अन्तर्भूत हो जाती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय, सूक्ष्म, बादर पर्याप्त और अपर्याप्तरूप भेदोंका उक्त दोनों मार्गणाओंमें प्रतिपादन किया गया है । उच्छ्वासनिश्वास, वचनबल और मनोबल, इन तीन प्राणोंका भी उक्त दोनों मार्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, ये तीनों प्राण पर्याप्तियोंके कार्य हैं । कायबलप्राण भी योगमार्गणासे निकला है, क्योंकि, योग काय, वचन और मनोबलस्वरूप होता है । आयुप्राण गति मार्गणामें अन्तर्भूत है, क्योंकि, आयु और गति ये दोनों परस्पर अविनाभावी हैं । अर्थात् विवक्षित गतिके उदय होने पर तज्जातीय आयुका उदय होता है और विवक्षित आयुके उदय होने पर तज्जातीय गतिका उदय होता है । इन्द्रियप्राण ज्ञानमार्गणामें अन्तर्लीन हो जाते हैं, क्योंकि, भावेन्द्रिया ज्ञानावरणके क्षयोपशमरूप होती हैं । आहारके विषयमें जो तृष्णा या आकाक्षा होती है उसे आहारसज्ञा कहते हैं । यह रतिस्वरूप होनेसे मोहकी पर्याय (भेद) है । रति भी रागरूप होनेके कारण माया और लोभमें अन्तर्भूत होती है । इसलिये कषायमार्गणामें आहार सज्ञा समझना चाहिये । भयसज्ञा भयरूप है और भय द्वेषरूप होनेके कारण क्रोध और मानमें अन्तर्भूत है, इसलिये भयसज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई समझना चाहिये । मैथुनसज्ञा वेदमार्गणाका प्रभेद है, क्योंकि, यह मैथुनसज्ञा स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदके तीव्र उदयरूप है । परिग्रहसज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है, क्योंकि, यह सज्ञा बाह्य पदार्थोंमें व्याप्त लोभरूप है । साकार उपयोग ज्ञानमार्गणामें और अनाकार उपयोग दर्शनमार्गणामें

---

१ [illegible] ॥ गो जी ५
२ [illegible] ॥ गो जी ६

छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि, दव्वेण छ लेस्सेत्ति भणिदे सरीरस्स छव्वण्णा घेत्तव्वा×। भावेण छ लेस्सा त्ति भणिदे जोग-कसाया छब्भेद-द्विदा घेत्तव्वाओ। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया णत्थि, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा, सागारणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि।

सपहि अपज्जत्ति-पज्जाय विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी पमत्तसंजदा सजोगिकेवलि त्ति पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण

है और अलेश्यास्थान भी होता है। द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर शरीरसम्बन्धी छह वर्णोंका ग्रहण करना चाहिये। भावसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर योग और कषायोंकी छह भेदोंको प्राप्त मिश्रित अवस्थाका ग्रहण करना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक होते हैं, किंतु भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान नहीं होता है। छहों सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं, तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानकी अपेक्षा संज्ञी और असंज्ञी विकल्प रहित भी जीव होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अब अपर्याप्ति पर्यायसे युक्त अपर्याप्तक जीवोंके, ओघालाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तरूप सात जीवसमास होते हैं। अपर्याप्त संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, अपर्याप्त असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंके चार अपर्याप्तियां होती हैं। संज्ञी, असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय,

× [illegible]

[illegible]

नं. ३ [illegible]पर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	[illegible]
१४	७	५	१	[illegible]

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

तेसिं चेव मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी

द्रव्य और भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक और असंज्ञिक; आहारक और अनाहारक; साकार (ज्ञान) उपयोगी और अनाकार (दर्शन) उपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दश प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, चारों

नं. ३　　मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१०|७ ९|७ ८|६ ७|५ ६|४ ४|३	४	४		६	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ अ.	२ चक्षु. अच.	६ द्र. ६ भा.	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. अ.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४　　मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४		६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अ.	२ चक्षु. अच.	६ द्र. ६ भा.	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

कषाय, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसम्बन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण, एकेन्द्रियोंके तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग तीनों वेद चारों कषायें, विभंगावधिज्ञानके विना दो अज्ञान असंयम चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व संज्ञिक असंज्ञिक आहारक अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५ मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
१	७	६अ.	[illegible]	४	४	५	६	३	३	४	२	१	२	द्र. २	२	१	२	२	२
मि.	अप.	[illegible]	[illegible]					औमि.			कुम.	असं.	चक्षु.	का.	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
								वैमि.			कुश्रु.		अच.	शु.	अ.		असं.	अना.	अना.
								कार्म.						भा. ६					

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि ।

तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

---

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारककाद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसम्बन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसम्बन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ६ सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

वजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी णिरयगदीए विणा, पंचिंदियजादी तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रके विना अपर्याप्त संबन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.	प.				पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			अज्ञा.	अस.	चक्षु. अचक्षु.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ८ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	३	१	१	३	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.	अ.	अ.		न. विना.	पं.	त्रस.	औ. मि. वै. मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि ।

तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसम्बन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसम्बन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ६   सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ [illegible]	२ [illegible]	६ [illegible] ६ [illegible]	१० ७	४	४	१ [illegible]	१ [illegible]	१३ आ. [illegible]	३	४	३ [illegible]	१ [illegible]	२ [illegible]	[illegible] ६ [illegible] ६	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]

वजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी णिरयगदीए विणा, पंचिंदियजादी तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति[१]।

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रके विना अपर्याप्त-संबन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंग ज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७   सासादन सम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा	सं. प.					पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			अज्ञा.	अस.	चक्षु अचक्षु	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ८   सासादन सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	३	१	१	३	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.	अप.			न. विना	पंचे.	त्रस.	औ. मि. वै. मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु अच.	का. शु. भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

लेस्सादि सण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तगाडे भवति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संजदासंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, केइ सरीर-णिव्वत्तणट्ठमागद-परमाणु-वण्णं पेक्खिऊण संजदासंजदादीणं भावलेस्सं परूवयंति । तण्ण घडदे, कुदो ? दव्व-भावलेस्साणं भेदाभावादो 'लिम्पतीति लेश्या' इति वयणस्स वाघादाच्च । कम्म-लेव-हेदो जोग-कसाया चेव भावलेस्सा त्ति गेण्हिदव्वं । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि,

सम्यक्त्वके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक पांचवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाय ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भावकी अपेक्षा तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

कितने ही आचार्य, शरीर-रचनाके लिये आये हुए परमाणुओंके वर्णको लेकर संयता-संयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंके भावलेश्याका वर्णन करते हैं। किन्तु यह उनका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर द्रव्य और भावलेश्यामें फिर कोई भेद ही नहीं रह जाता है और 'जो लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं' इस आगम वचनका व्याघात भी होता है। इसलिये 'कर्म-लेपका कारण होनेसे योग और कषायसे अनुरंजित प्रवृत्ति ही भावलेश्या है' ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिये।

लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और

नं. १२ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	४	१	१	३	२	४	३	१	३	द्र. २ भा. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अप.	अप.			पं.	त्र.	औ. मि. १ वै. मि. १ कार्म. १	स्त्री. विना.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु.	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

अप्पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, असादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहार-सण्णा अप्पमत्तसंजदस्स णत्थि । कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उवयारेण भय-मेहुण-परिग्गहसण्णा अत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद,

लापोंके अतिरिक्त उनके पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका स्वतन्त्ररूपसे कथन किया है फिर भी छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका स्वतन्त्र कथन न करके केवल ओघालाप ही कहा गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि धवलाकारकी दृष्टि विग्रह-गतिसंबन्धी गुणस्थानोंमें ही पृथक् रूपसे आलापोंके दिखानेकी रही है, अन्य अपर्याप्त संबन्धी गुणस्थानोंमें नहीं। गोम्मटसार जीवकाण्डकी टीकामें भी अन्तमें आलापोंका कथन करते हुए टीकाकारने इसी सरणीको ग्रहण किया है। इसप्रकार मूलमें छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका पृथक् रूपसे नहीं पाया जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। फिर भी सर्व साधारण पाठकोंके परिज्ञानार्थ वे यहां लिखे जाते हैं।

प्रमत्तसंयतके पर्याप्तसंबन्धी ओघालापके कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाय और अपर्याप्तसंबन्धी चारों योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे पीत, पद्म और शुक्ल ये तीन लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त उन्हीं प्रमत्तसंयतोंके ओघालाप कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मन, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, एक आहारकमिश्रकाययोग, एक पुरुषवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयतके आलाप कहनेपर—एक सातवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार संज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं होती हैं, क्योंकि असातावेदनीयकर्मकी उदीरणाका अभाव हो जानेसे अप्रमत्तसंयतके आहारसंज्ञा नहीं होती है। किन्तु भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञाके कारणभूत कर्मोंका उदय संभव है, इसलिए उपचारसे भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञा हैं। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके

चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अपुव्वकरणाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, ज्झाणणिमपुव्वकरणाणं भवदु णाम वचिबलस्स अत्थित्तं भासापज्जत्ति-सण्णिद पोग्गलखंध जणिद-सत्ति सब्भावादो । ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि ? ण, अन्तर्जल्पप्रयत्नस्य कायगतसूक्ष्मप्रयत्नस्य च तत्र सत्त्वात् । तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,

विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवल दर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे तेज पद्म और शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक आठवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिक काययोग ये नौ योग होते हैं।

शंका—ध्यानमें लीन अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके वचनबलका सद्भाव भले ही रहा आये, क्योंकि, भाषापर्याप्तिनामक पौद्गलिक स्कन्धोंसे उत्पन्न हुई शक्तिका उनके सद्भाव पाया जाता है किन्तु उनके वचनयोग या काययोगका सद्भाव नहीं मानना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्यान अवस्थामें भी अन्तर्जल्पके लिये प्रयत्नरूप वचनयोग और कायगत सूक्ष्म प्रयत्नरूप काययोगका सत्त्व अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके पाया ही जाता है इसलिये वहां वचनयोग और काययोग भी संभव है।

योगोंके आगे तीनों वेद, चारों कषायें केवल ज्ञानके विना शेष चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे

नं १ अप्रमत्तसंयतोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	६	१	३	१	१	२
अप्र.	सं.प.			आहा. विना	म	पं	त्रस	म ४ व ४ औ १			के. विना	सा. छे. परि.	के. विना	द्र. ६ भा. ३ शुभ	भ	औ. क्षा. क्षायो.	सं	आहा.	साका. अना.

भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पढम-अणियट्टीणं पढमभागे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, अपुव्वकरणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदयो णट्ठो तेण भयसण्णा णत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

केवल शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं होती हैं। दो संज्ञाएं होनेका कारण यह है कि अपूर्वकरण गुणस्थानके अन्तिम समयमें भयकी उदीरणा तथा उदय नष्ट हो गया है, इसलिये यहांपर भय संज्ञा नहीं है। उसके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६ अपूर्वकरण-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अपू.	सं. प.			आहा. विना	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			के. विना	सा. छे.	के. द. विना	भा. १ शुक्ल.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. १७ अनिवृत्तिकरण प्रथमभाग-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	३	४	४	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अनि. प्रथम भा.	सं. प.			मै. परि.	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			के. विना	सा. छे.	के. द. विना	भा. १ शु.	भ.	औ. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सप्पओजणो णिप्पओजणो ? ण विदिय-पक्खो, पुप्फयंत-वयण-विणिग्गयस्स णिप्फलत्त-विरोहादो। ण पढमस्स सुत्तस्स णिच्चत्तं पयासण फलं, णियम-सद्द-वदिरित्त-सुत्ताणमणिच्चत्त-प्पसंगादो। ण च एवं, 'ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं'[1] त्ति सुत्ते णियमाभावेण अपज्जत्तेसु वि ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-प्पसंगादो। तदो णियम-सद्दो णावओ। अण्णहा अणत्थयत्त-प्पसंगादो। किमेदेण णाविज्जदि ? 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तमणिच्चमिदि तेण उत्तरसरीरमुट्ठाविद-सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदाणं कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीणं च सिद्धम-

है' यह सूत्र बाधा जाता है उसीप्रकार पूर्व अर्थात् 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, यह सूत्र भी बाधा जाता है, अतः शंकाकारके पूर्वोक्त कथनमें अनेकान्त दोष आ जाता है।

शंका—जब कि कपाट-समुद्धातगत केवली अवस्थामें अभिप्रेत होनेके कारण 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र पर है तो 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इस सूत्रमें आये हुए नियम शब्दकी क्या सार्थकता रह गई ? और ऐसी अवस्थामें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उक्त सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द सप्रयोजन है कि निष्प्रयोजन ?

समाधान—इन दोनों विकल्पोंमेंसे दूसरा विकल्प तो माना नहीं जा सकता है, क्योंकि पुष्पदन्तके वचनसे निकले हुए तत्वमें निरर्थकताका होना विरुद्ध है। और सूत्रकी नित्यताका प्रकाशन करना भी नियम शब्दका फल नहीं हो सकता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर जिन सूत्रोंमें नियम शब्द नहीं पाया जाता है उन्हें अनित्यताका प्रसंग आ जायगा। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेपर 'औदारिककाययोग पर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रमें नियम शब्दका अभाव होनेसे अपर्याप्तकोंमें भी औदारिककाययोगके अस्तित्वका प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि इष्ट नहीं है। अतः सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द ज्ञापक है नियामक नहीं। यदि ऐसा न माना जाय तो उसको अनर्थकपनेका प्रसंग आ जायगा।

शंका—इस नियम शब्दके द्वारा क्या ज्ञापित होता है ?

समाधान—इससे यह ज्ञापित होता है कि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र अनित्य है। अपने विषयमें सर्वत्र समान प्रवृत्तिका नाम नित्यता है और अपने विषयमें ही कहीं प्रवृत्ति हो और कहीं न हो इसका नाम अनित्यता है। इससे उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंके तथा कपाट प्रतर और लोकपूरण समुद्धातको प्राप्त केवलियोंके अपर्याप्तपना

१ कृताकृतम्या। नियतो पर्याप्तमनियम्। परि. ४ पृ. २५
२ जी. सं. सू. ३ जी. सं. सू. ९
४ प्रतिषु मि तण्हा पाउ।

पज्जत्त ।

अद्धारद्ध सरीरो अपज्जत्तो णाम । ण च सजोगिम्हि सरीरपट्ठवणमत्थि, तदो ण तस्स अपज्जत्तमिदि ण, छ पज्जत्ति सत्ति-विरहियस्स अपज्जत्त-ववएसादो । ... एहि जिणे चत्तारि पाणा दो वा । के वि दव्विंदियाणं पुण्णत्तं पेक्खिय दस पाणा भणंति । तण्ण घडदे । कुदो ? भाविंदियाभावादो । भाविंदियं णाम पंचिंदियावरणखओवसमो । ण सो खीणावरणे अत्थि । अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपज्जत्त-काले सत्त पाणा पिंडिदूण दो चेव पाणा भवंति, पंचण्हं दव्विंदियाणमभावादो । तम्हा

सिद्ध हो जाता है ।

विशेषार्थ— 'सम्मामिच्छाइट्ठि संजदासंजद संजद ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' इस सूत्रको अनित्य बतलाकर उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंको भी जो अपर्याप्तक सिद्ध किया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस कथनसे टीकाकारका यह अभिप्राय होगा कि तीसरे गुणस्थानमें उत्तरवैक्रियिक और उत्तर औदारिक तथा पांचवें गुणस्थानमें उत्तर औदारिकको उत्पन्न करनेवाले जीव जबतक उस उत्तर-शरीरकी पूर्णता नहीं कर लेते हैं तबतक अपर्याप्तक कहे गये हैं। जिसप्रकार तेरहवें गुणस्थानमें पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए और शरीरकी पूर्णता होते हुए भी योगकी अपूर्णतासे जीव अपर्याप्तक कहा जाता है, उसीप्रकार यहांपर भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए योगकी पूर्णता रहते हुए और मूल शरीरकी भी पूर्णता रहते हुए केवल उत्तर शरीरकी अपूर्णतासे अपर्याप्तक कहा गया है।

शंका— जिसका आरम्भ किया हुआ शरीर अर्ध अर्थात् अपूर्ण है उसे अपर्याप्त कहते हैं। परन्तु सयोगी-अवस्थामें शरीरका आरम्भ तो होता नहीं, अतः सयोगीके अपर्याप्तपना नहीं बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कपाटादि समुद्घात अवस्थामें सयोगी छह पर्याप्तिरूप शक्तिसे रहित होते हैं, अतएव उन्हें अपर्याप्त कहा है।

सयोगी जिनके पांच भावेन्द्रियां और भावमन नहीं रहता है अतः इन छहके बिना चार प्राण पाये जाते हैं। तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और काय ये दो ही प्राण पाये जाते हैं। परंतु कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियोंकी पूर्णताकी अपेक्षा दश प्राण कहते हैं, परंतु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं। पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं। परन्तु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके वह क्षयोपशम नहीं होता है। और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जाये तो संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंके स्थानपर कुल दो ही प्राण कहे जायंगे, क्योंकि, उनके द्रव्येन्द्रियोंका अभाव होता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि सयोगी जिनके चार

१ प्रतिषु ' सरीरादरब ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' दव्वेंदियाणि भवंति ' इति पाठः ।

मणोगिकेवलिस्स चत्तारि पाणा दो पाणा वा । खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोग, सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो कवाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोगपूरणेसु कम्मइयकायजोगो, एवं सजोगिकेवलिस्स सत्त जोगा भवंति । अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति ।

अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, पुव्विल्ल-पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छ पज्जत्तीओ भणिदाओ । ण पुण पज्जत्ती जणिद-कज्जमत्थि । आउअ-पाणो एक्को चेव । केण कारणेण ? ण ताव णाणा-

अथवा दो ही प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सात योग होते हैं। वे सात योग कौनसे हैं ? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— सत्यमनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग कपाट-समुद्धातगत केवलीके औदारिकमिश्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूरण समुद्धातगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं। योग आलापके आगे अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातशुद्धि-संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, और भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी, साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप कहनेपर—एक चौदहवां गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां होती हैं। छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वमें आई हुई पर्याप्तियां तथैव स्थित रहती हैं, इसलिये यहांपर छहों पर्याप्तियां कही गई हैं। किन्तु यहांपर पर्याप्तिजनित कोई कार्य नहीं होता है, अतः आयुनामक एक ही प्राण होता है।

शंका—एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है ?

समाधान—ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमस्वरूप पांच इन्द्रिय प्राण तो अयोगकेवलीके

नं. २०   सयोगिकेवलीके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	४।२	०	१	१	१	७	०	०	१	१	१	द्र. ६ भा. १	१	१	०	२	२
सयो.	स. प. स. अ.	प. ६ अप.		क्षीणसं.	म.	पंचे.	त्रस.	म. २ व. २ औ. २ का. १	अपगत.	अकषा.	के.	यथा.	के. द.	शु.	भ.	क्षा.	अनु.	आहा. अना.	साका. अना. यु. उ.

वरण-खओवसम लक्खण पंचिंदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमाभावादो। आणा-पाण-भासा-मणपाणा वि णत्थि, पज्जत्ति जणिद पाण सण्णिद सत्ति अभावादो। ण सरीर बलपाणो वि अत्थि, सरीरोदय जणिद कम्म णोकम्मागमणाभावादो। तदो एक्को चेव पाणो। उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति। एदे पाणा पुण

है नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मोंके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता है। इसीप्रकार आनापान, भाषा, और मनःप्राण भी उनके नहीं है, क्योंकि, पर्याप्तिजनित प्राण संज्ञावाली शक्तिका उनके अभाव है। उसीप्रकार उनके कायबल नामका भी प्राण नहीं है क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय जनित कर्म और नोकर्मोंके आगमनका अभाव है। इस लिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता है ऐसा समझना चाहिये। किन्तु उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ—वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये हैं। 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किन्तु उसके कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहां पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहां चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरूप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है। फिर भी अयोगी जिनके पचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पचेन्द्रिय कहना बन जाता है। इसलिये उनके पांच इन्द्रिय प्राणोंका कथन करना भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पांच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं। यहां पर इन्द्रियोंसे अभिप्राय उस शक्तिसे है जिससे अयोगी जिनमें पचेन्द्रिय पनेका व्यवहार होता है। परंतु उस शक्तिके सम्पादनका या पांच इन्द्रियोंका आधार शरीर है, अतः इस निमित्तसे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें कायबलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं। यद्यपि उनके पहलेका छह पर्याप्तियां उसीप्रकारसे स्थित हैं, अतः वे पर्याप्तक कहे जाते हैं। तथा पर्याप्तक अवस्थामें मन प्राण भी होता है, इसलिये उनके मन प्राणका भी कथन करना चाहिये था। परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण प्रतीत होता है कि उनमें संज्ञीव्यवहार लुप्त हो गया है। औपचारिक संज्ञीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है अतः अयोगियोंके मन प्राण नहीं कहा। इसीप्रकार वचनबल और श्वासोछ्वासके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये। ऊपर सयोगी जिनके जो पांच इंद्रियां और एक मन इसप्रकार छह प्राणोंका निषेध करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं यह मुख्य कथन है। अतः जिस उपचारकी अपेक्षा यहां छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार वहां भी लागू होता है। आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इसे कथनका विवक्षाभेद ही समझना चाहिये। यहां उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है

सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्तं मिच्छत्तं च । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिकं क्षायोपशमिकं चास्ति । स. सि. १, ७.

नं. २९ नारकसामान्य पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	६	१	३	द्र. ६ भा. ३	२	६	१	१	२
मि. सा. स. अ.	सं. प.				न.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. १	नपुं.		अज्ञा. ३ ज्ञा. ३	अस.	के. द. विना.	अशु.	भ. अ.		सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ३० नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	५	१	३	द्र. २ भा. ३	२	३	१	२	२
मि. अ.	सं. अ.	अ.			न.	पं.	त्र.	वै. मि. का.	नपुं.		कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु. अशु.	भ. अ.	मि. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-

अब नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कपोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कपोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्ण

नं. ३१ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप

भासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दोण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

लेश्या, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचें.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३३ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचें.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ प्रतिषु 'अभवसिद्धिया' इति पाठो नास्ति

नं. ४३ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंच	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अच	द्र १ कृ भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४४ प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अप	६	७	४	१ न	१ पं	१ त्रस	२ वै मि काम	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ च अच	द्र २ का शु भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-भासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया,

प्रथम पृथिवीगत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम पृथिवीगत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान-मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

नं. ४   प्रथमपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६			१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र ६ भा १	१	१	१	१	२
सा.	सं.प.				न.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	नपुं.		अज्ञा.	असं.	च. अच.	कृ. भा. १ का.	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

बिदियाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय पृथिवी गत नारकोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ८९ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचें.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ न.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ९० द्वितीयपृथिवी-नारक सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सा. सम्य. अ.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	१ न.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	५ औ. क्षायो. मि. सासा. सम्य.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान असंयम चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. [illegible] द्वितीयपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	सं. अ.	अ.			न.	पं.	त्र.	वै. मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. १ का.	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. [illegible] द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	१	४	३	१	२	द्र. ३	२	१	१	२	२
मि.	सं. प. सं. अ.	प. ६ अ.	७		न.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	नपुं.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	कृ. का. शु. भा. १ का.	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं द्वितीय पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोत लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्य

नं. ४ द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवीगत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५० द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ५१ द्वितीयपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काल-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काल-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो

द्वितीय पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानमिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे काल-कालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे काल-कालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक

नं. १७ द्वितीय पृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र. २ भा. १	१	१	१	१	२
सम्य.	सं.प.				न.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. १	न.		ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र.	असं.	चक्षु अच.	का. भा. का.	भ.	सम्यग्मि.	सं.	आहा.	साका. अनाका.

सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं तदियपुढवि-आदि जाव सत्तमपुढवि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणमालावो वत्तव्वो। णवरि विसेसो तदियाए पुढवीए णवण्हं इंदयाणं मज्झे उवरिम-अट्ठसु इंदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि। हेट्ठिमए णवमे इंदए केसिंचि णेरइयाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिंचि जहण्णिया णीललेस्सा। कुदो? जहण्णुक्कस्स-णील-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल-णिद्देसादो। तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहण्णिया णीललेस्सा च वत्तव्वा। चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीललेस्सा। पंचमीए पुढवीए चदुसु उवरिम-इंदएसु उक्कस्सिया णीललेस्सा चेव भवदि। पंचमए उक्कस्सिया णीललेस्सा जहण्णिया किण्हलेस्सा च भवदि। कुदो? जहण्णुक्कस्स-किण्ह-णीललेस्साणं सत्तारस-सागरोवम-काल-णिद्देसादो।

क्षायिकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार तृतीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक नारकियोंमें चारों गुणस्थानोंके आलाप कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि तृतीय पृथिवीके नौ इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके आठ इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है और नीचेके नौवें इन्द्रक बिलमें कितने ही नारकी जीवोंके उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है, तथा कितने ही नारकोंके जघन्य नीललेश्या होती है, क्योंकि, जघन्य नीललेश्या और उत्कृष्ट कापोतलेश्याकी सात सागरोपम स्थितिका आगममें निर्देश है। अतएव तीसरी पृथिवीके नौवें इन्द्रक बिलमें हो उत्कृष्ट कापोत और जघन्य नीललेश्या बन सकती है। इसप्रकार तृतीय पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या कहना चाहिए। चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या है। पांचवीं पृथिवीके पांच इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके चार इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट नीललेश्या ही है और पांचवें इन्द्रक बिलमें उत्कृष्ट नीललेश्या तथा जघन्य कृष्णलेश्या है, क्योंकि, जघन्य कृष्णलेश्या और उत्कृष्ट नीललेश्याका आगममें सत्रह सागरप्रमाण कालका निर्देश किया

न. ५८ द्वितीयपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अवि.	सं.प.				न.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	नपुं.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	भा. १ का.	भ.	औप. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

ण्हाओ दो लेस्साओ पंचम पुढवी णेरइयाणं भवंति। छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं मज्झिम किण्हलेस्सा भवदि। सत्तमीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कस्सिया किण्हलेस्सा भवदि।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खाणं भण्णमाणे तिरिक्खा पंचविधा भवंति, तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता चेदि। तत्थ तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारु

गया है। अतएव पांचवीं पृथिवीके पाथड़ेमें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या बन सकती है। इसप्रकार ये दोनों ही लेश्याएं पांचवीं पृथिवीके नारकी जीवोंके होती हैं। छठी पृथिवीके नारकियोंके मध्यम कृष्णलेश्या होती है। सातवीं पृथिवीके नारकियोंके उत्कृष्ट कृष्णलेश्या होती है।

इसप्रकार नरकगतिके आलाप समाप्त हुए।

अब तिर्यंचगतिके आलापोंको कहते हैं। तिर्यंच पांच प्रकारके होते हैं, १ तिर्यंच, २ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, ३ पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच ४ पंचेन्द्रिय योनिमती तिर्यंच और ५ पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंच। इनमेंसे सामान्य तिर्यंचोंके आलाप कहने पर— आदिके पांच गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, चार प्राण; और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण, तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीन अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी

छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त। केण कारणेण? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसणमोहणीयं कम्मं ण खवेंति, तत्थ जिणाणमभावादो। मणुस्सा पुव्वं बद्ध तिरिक्खायुगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु। भोगभूमीसुप्पण्णा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तम तिरिक्ख-संजदासंजदाणं खइयसम्मत्तं णत्थि। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

पंचिंदिय तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह

१.

बिना दो सम्यक्त्व होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि संयतासंयत तिर्यंच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपण नहीं करते हैं, क्योंकि, वहांपर जिन अर्थात् केवली या श्रुतकेवलीका अभाव है। और पूर्वमें तिर्यंच आयुको बांधकर पीछे क्षायिकसम्यग्दृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं; किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच संयमासंयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यंचोंके संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्व नहीं होता है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद

नं. ७०

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६ भा. ३	१	२	१	१	२
दे.	सं. प.				ति.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना	शुभ.	भ.	औप. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	६प	१०	४	१	१	१	११	३	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	२	२
मि.	सं. प.	६अ	७		ति.	पंचे.	त्रस.	म. ४			अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	अ.	५प	९					व. ४					अच.		अ.		असं.	अना.	अना.
	असं. प.	५अ	७					औ. २											
	अ.							का. १											

पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. ३९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सा.	सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	७		ति.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. २ का.			अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण और असंज्ञीके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ७७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. असं. प.	६ ५	१० ९	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. अ. असं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पंचिंदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]				[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व

नं. ८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्सा भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प	१०	४	१	१	१	११	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं.प.	६अ	७		ति.	पंचे.	त्रस	म. ४			मति	असं.	के.द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.							व. ४			श्रुत		विना			क्षा.		अना.	अना.
								औ. २			अव.					क्षायो.			
								का. १											

नं. ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं.प.				ति.	पंचे.	त्रस	म. ४			मति	असं.	के.द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
								व. ४			श्रुत		विना			क्षा.			अना.
								औ. १			अव.					क्षायो.			

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व

नं. ८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

त्तिणि दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो । णवरि विसेसो पुरिस-णवुंसयवेदा दो चेव भवंति, इत्थिवेदो णत्थि । अथवा तिण्णि वेदा भवंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच सामान्यके आलापोंके समान ही आलाप समझना चाहिये । विशेष बात यह है कि इनके वेद स्थानपर पुरुष और नपुंसक ये दो ही वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है । अथवा तीनों ही वेद होते हैं ।

विशेषार्थ—पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके दो ही वेद बतलानेका यह अभिप्राय है कि योनिमती जीवोंका पर्याप्तक भेदमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, योनिमतियोंका स्वतंत्र भेद गिनाया है । अथवा पर्याप्त और योनिमती तिर्यंच इन दोनों भेदोंको गौण करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सभी पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जावे तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलापमें तीनों वेदोंका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त, असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास; संज्ञीके छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ८६　　पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
दे.	१ सं.प.	६	[illegible]	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्त, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि

आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी और असंज्ञीके सात सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीव

नं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	२ सं.अ. असं.	६अ. ५,	७ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[1]।

तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

पचेंद्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं. १३   पचेंद्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं.प. सं.अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १४   पचेंद्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अ	द ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

तासिमपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्साओ, भावेण किण्ण णील काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदि-

---

और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं

नं. ९   पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादनसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा	सं. अ.	अ.			ति	पं.	त्र.	औ.मि. कार्म.	स्त्री		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

जादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि योनिमती तिर्यंचोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ९६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	[illegible]	१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.				ति.	पंचे.	त्रस.	म. ४	स्त्री.		ज्ञान	अस.	चक्षु.	भा. ६	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका.
								व. ४			३		अच.						अना.
								औ. १			अज्ञा.								
											मिश्र.								

नं. ९७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	१	२	[illegible]	१	२
अवि.	[illegible]										मति.	अ.			भ.				साका.
											श्रुत.					स.			अना.
											अव.								

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइय सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[1]।

पंचिंदिय तिरिक्ख-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, वे अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउ

पचेन्द्रिय तिर्यंच सयतासयत योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याए, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, सज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सज्ञी अपर्याप्त और असज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, सज्ञीके छहों अपर्याप्तिया असज्ञीके पाच अपर्याप्तिया सज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, असज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, चारों सज्ञाए, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याए, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याए, भव्य

नं ९८   पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सयतासयतोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र ६	१	२	१	१	२
देश	सं प				ति	पं	त्र	म ४ व ४ औ १	स्त्री		मति श्रुत अव	देश	के द विना	भा ३ शुभ	भ	औप क्षायो	सं	आहा	साका अना

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइय सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिंदिय तिरिक्ख-लद्धि अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउ

पचेन्द्रिय तिर्यच संयतासंयत योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याएं, भव्य

नं ९८   पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती संयतासंयतोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देवि	१ स प	६	१	४	१ ति	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ.१	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	२ औप क्षाया	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं तिरिक्खगदी समत्ता ।

मणुसा चउव्विहा हवंति मणुस्सा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ मणुसअपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस प्रकार तिर्यंचगतिके आलाप समाप्त हुए ।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं—मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य । उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तथा अयोगरूप [illegible] भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है । चारों कषाय तथा अकषायरूप [illegible] भी होता है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, [illegible] और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, अनाहारक, [illegible]

नं. ११　　पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु.	जी.	[illegible]
१	२	[illegible]
मि.	सं.	[illegible]
	अ.	[illegible]

वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगि-भयवंतस्स सरीर-णिमित्तमागच्छमाण-परमाणूणमभावं पेक्खिऊण पज्जत्ताणमणाहारित्तं लब्भदि। सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा [1]।

भी स्थान हैं। आहारक, और अनाहारक भी होते हैं। मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक होनेका कारण यह है कि अयोगिकेवली भगवान्‌के शरीरके निमित्तभूत आनेवाले परमाणुओंका अभाव देखकर पर्याप्तक मनुष्योंके भी अनाहारकपना बन जाता है। साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर योग आलापका कथन करते हुए वैक्रियिकद्विक आहारकमिश्र औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगके विना दश अथवा केवल वैक्रियिकद्विकके विना तेरह योग बतलाये हैं। दश योग तो मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें होते ही हैं, परन्तु अपर्याप्त अवस्थामें होनेवाले औदारिकमिश्र आहारकमिश्र और कार्मणकाययोगको मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें बतानेका यह कारण है कि यद्यपि तेरहवें गुणस्थानमें समुद्घातके समय योगोंकी अपूर्णता रहती है फिर भी उस समय पर्याप्त-नामकर्मका उदय विद्यमान रहता है और शरीरकी पूर्णता भी रहती है, इसलिये पर्याप्त-नामकर्मके उदय और शरीरकी पूर्णताकी अपेक्षा कपाट प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत केवली भी पर्याप्त हैं और इसप्रकार पर्याप्त अवस्थामें औदारिकमिश्र तथा कार्मणकाययोग बन जाते हैं। इसीप्रकार छठवें गुणस्थानमें आहारकमिश्रकाययोगके समय भी पर्याप्त-नामकर्मका उदय रहता है, इसलिये ऐसा निर्वृत्तिसे अपर्याप्त होता हुआ भी जीव पर्याप्त-नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त ही है। अतः आहारकमिश्रकाययोग भी पर्याप्त अवस्थामें बन जाता है। इसप्रकार उपर्युक्त तीनों योग विवक्षा भेदसे पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिये मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें तेरह योग भी गिनाये हैं।

नं. १०१ सामान्य मनुष्योंके पर्याप्त आलाप

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सेण सह तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, पंच णाण केवलणाणेण छ णाण, असंजम सामाइय छेदोवट्ठावण जहाक्खादेहि चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त उवसमसम्मत्तेण विणा चत्तारि सम्मत्त, सण्णिणो अणुभओ वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा।

उन्हीं सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारमिश्रकाययोगके साथ औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेद स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, कुमति, कुश्रुत तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान और केवलज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्वके विना चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, और अनुभय अर्थात् संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

नं. १०२   सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा अ प्र स	१ स अ	६ अ	७	४ क्षीणसं	१ म	१ प	१ त्रस	३ औ मि. आ मि. काम	३ अपग	४ अकषा	६ विभं मन विना	४ असं सामा छेदो यथा	४	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	४ मि सा क्षा क्षायो	१ सं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

मणुस-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये दशों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक,

नं. १०३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप

होंति अणागारुवजुत्ता वा' ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, [दो] जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा' ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १०४ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १०५ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णियमा पुरिसवेदेसु चेव उप्पज्जंति ण अण्णवेदेसु, तेण पुरिसवेदो चेव भणिदो। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ। तं जहा—णेरइया असंजदसम्माइट्ठिणो पढमपुढवि आदि जाव छट्ठी पुढवि पज्जवसाणासु पुढवीसु ट्ठिदा कालं काऊण मणुस्सेसु चेव अप्पप्पणो पुढवि पाओग्ग-लेस्साहि सह उप्पज्जंति त्ति किण्ह-णील-काउलेस्सा लब्भंति। देवा वि असंजदसम्मा-इट्ठिणो कालं काऊण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सह मणुस्सेसु उववज्जंति, तेण मणुस्स असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ हवंति। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

मणुस्स-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

नियमसे पुरुषवेदी मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यवेदवाले मनुष्योंमें नहीं। इससे एक पुरुषवेद ही कहा है। वेद आलापके आगे चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। अविरतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त मनुष्योंके छहों लेश्याएं होनेका कारण यह है कि प्रथम पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी पर्यंत पृथिवियोंमें रहनेवाले असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी मरण करके मनुष्योंमें अपनी अपनी पृथिवीके योग्य लेश्याओंके साथही उत्पन्न होते हैं इसलिये तो उनके कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं पाई जाती हैं। उसीप्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि देव भी मरण करके मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए अपनी अपनी पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं इसलिए मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें छहों लेश्याएं बन जाती हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक

नं. ११२ सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संपहि पमत्तसंजद-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघालावो अणूणो अधिओ वत्तव्वो। मणुस्स पज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मणुस्सोघभंगो। अथवा इत्थिवेदेण विणा दो वेदा वत्तव्वा एत्तियमेत्तो चेव विसेसो।

संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक न्यूनता और अधिकतासे रहित मूल ओघालाप कहना चाहिये, अर्थात्, गुणस्थानोंकी अपेक्षा जो आलाप छठे गुणस्थानसे लेकर चौदहवें गुणस्थान तक कह आये हैं वे ही यहां मनुष्योंके छठे गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके समझना चाहिये, क्योंकि छठेसे आगेके सभी गुणस्थान मनुष्योंके ही होते हैं, इसलिये सामान्य कथनमें और इस कथनमें कोई विशेषता नहीं है।

मनुष्य पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक मनुष्य सामान्यके आलापोंके समान आलाप जानना चाहिये। अथवा यह आलाप कहते समय स्त्रीवेदके विना दो वेद ही कहना चाहिये, क्योंकि सामान्य मनुष्योंसे पर्याप्त मनुष्योंमें इतनी ही विशेषता है।

विशेषार्थ—जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंकी विवक्षा न करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सामान्यसे सभी पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंमें तीनों वेद

नं. ११३　　　सामान्य मनुष्य संयतासंयतोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१		३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
देश.	सं. प.				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

दव्व भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी, आहारिणी, अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा"।

तासिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, दो अण्णाण केवलणाणेण तिण्णि णाण, असंजमो जहाक्खादेण दोण्णि संजम,

बिना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व संज्ञिनी तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी विकल्प रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

विशेषार्थ— पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दश योगोंके होनेका स्पष्टीकरण ऊपर कर आये हैं, उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्यनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके सम्बन्धमें भी जान लेना चाहिये। यहां इतना विशेषता है कि स्त्रीवेदियोंके आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इनके आहार और आहारमिश्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार स्त्रीवेदियोंके पर्याप्त अवस्थामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते हैं।

उन्हीं मनुष्यनियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादन सम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है। कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा सयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवलज्ञान इसप्रकार तीन ज्ञान, असंयम और यथाख्यातविहारशुद्धि ये दो संयम, चक्षु, अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन

नं. १४   मनुष्यनी स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप

[illegible]

'अवगदवेदो वि अत्थि' त्ति वयणादो । चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-णाणेण विणा सत्त णाण, परिहारसंजमेण विणा छ संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी वि अत्थि, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा १ ।

तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, छ संजम, चत्तारि दंसण

प्रयोजन होता तो अपगतवेदरूप स्थान नहीं बन सकता था, क्योंकि, द्रव्यवेद चौदहवें गुणस्थानके अन्ततक होता है। परन्तु 'अपगतवेद भी होता है' इस प्रकारका वचन निर्देश नौवें गुणस्थानके अवेदभागसे किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि यहां भाववेदसे ही प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। वेद आलापके आगे चारों कषाय, तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्यारूप भी स्थान होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी, तथा साकार और अनाकार उपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

उन्हीं मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन चार योगोंके विना ग्यारह योग, अथवा उपर्युक्त चार और औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग इन छह योगोंके विना नौ योग तथा अयोग स्थान भी होता है। स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम

नं. ११५   मनुष्यनी स्त्रियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	२	६	१	४	१	१	१	११	१	४	७	६	४	द्र ६	२	६	१	२	२
	स प / स अ	प ६ / अ ६ / अ	७	क्षीणसं.	म	पंचे.	त्रस.	म ४ / व ४ / औ २ / का १	स्त्री. / अपग.	अकषा.	मन / विना	परिहा / विना		भा ६ / अले	भ / अ		स / अन	आहा / अना	साका / अना / यु व

तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा [147]।

[1] मणुसिणीणं अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणी,

काययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व,

नं. १४७ अप्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अप्र.	सं. प.			आहा. विना	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना	भा. ३ शुभ.	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. १४८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अपू.	सं. प.			आहा. विना	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना	भा. १ शु.	भ.	औ. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणी-विदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार और भयसंज्ञाके विना शेष दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या,

नं. १२९ अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अनि. प्र. भा.	सं. प.			मै. परि.	म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	भा. १ शु.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी-तदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय विणा तिण्णि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्ती मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषायके विना शेष तीन कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. १३० अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	४	३	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अनि.	सं. प.			परि.	म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	अपगतवेद		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	भा. १ शु.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	३	३	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अनि.	सं. प.			परि.	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	अपगतवेद	क्रोध. विना.	मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	भा. १ शु.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दड्ढ-बीए अंकुरो व्व इत्थिवेद-वेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि। दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री अथवा नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है। इसलिये यहां पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

---

नं. १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	२	३	२	३	द्र. ६ भा. १	१	२	१	१	२
अनि.	सं. प.			प.	म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	अपगतवेद	माया लोभ	मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	शु.	भ.	औ. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति।

मणुसिणी-अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति [१६]।

लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे

विकल्पोंसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी; साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्यास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद,

नं. १२८　　　अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१	०	१	१	१	०		०	१	१	१	द्र. ६	१	१		१	२
अयो.	पर्या.		आयु	क्षीणसं.	म.	पंचे.	त्रस.	अयोग.	अपग.	अकषा.	के.	यथा.	के. द.	भा.	भ.	क्षा.	उभ. विना	अना.	साका. अनाका. यु. उ.

जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

एवं मणुसगदी समत्ता।

[1] देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ एगारह जोग, णउंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,

चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए।

देवगतिमें सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३९ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ स.अ.	६अ	७	४	१ म	१ पं	१ त्र	२ औमि. कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अ	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु. भा. १ अशु	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा. अना	२ साका. अना

नं. १४० देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	२ सं प सं अ	६प ६अ	[illegible]	४	१ दे	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति।

मणुसिणी अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति [१]।

लद्धि-अपज्जत्त मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे

विकल्पोंसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्यास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसक

नं. १२८　　　अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१	द्र. ६ भा. ०	१	१	०	१	२
अयो.	पर्या.		आयु	क्षीणसं.	म.	पंचे.	त्रस.	अयोग.	अपग.	अकषा.	के.	यथा.	केद.		भ.	क्षा.	न सं. न असं.	अना.	साका. अना. युग.

ग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्क-
स्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,
हारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

एवं मणुसगदी समत्ता।

[1] देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ
ज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी,
सकाओ एगारह जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,

रों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,
व्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं; भव्य
सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और
नाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए।

देवगतिमें सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी
र्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण,
सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन
ग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग;
पुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३९ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१ सं अ	६ अ	७	४	१ म	१ पं	१ त्रस	२ औमि. कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र. २ का शु भा. ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. १४० देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ असं	३ के द अ	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ। एत्थ सिस्सो भणदि — देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवंति त्ति एदं ण घडदे, तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ लेस्साभावादो। मा भवतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ, दव्वदो पुण छ लेस्सा भवंति चेव, दव्व भावाणमेगत्ताभावादो। इदि एदं पि ण घडदे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चेव ओरालिय वेउव्विय आहारसरीरणोकम्म परमाणवो आगच्छंति। तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे मोहम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरूव दव्वलेस्सापरूवणादो णव्वदि। ण च देवाणं पज्जत्तकाले तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ मोत्तूणण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ होंति त्तिमिदि। एत्थ उववुज्जंतीओ गाहाओ—

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, (यहां तीन अशुभ लेश्याएं अपर्याप्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये।) भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका — यहांपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं यह वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्याप्तकालमें भावसे छहों लेश्याओंका अभाव है। यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेश्याएं मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती ही हैं, क्योंकि द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है। सो ऐसा कहना भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेश्या होती है उसी लेश्यावाले ही औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरसम्बन्धी नोकर्म परमाणु आते हैं। यदि यह कहा जाय कि उक्त बात कैसे जानी जाती है, तो उसका उत्तर यह है कि सौधर्म आदि कल्पवासी देवोंके भावलेश्याके अनुरूप ही द्रव्यलेश्याका प्ररूपण किये जानेसे उक्त बात जानी जाती है। तथा देवोंके पर्याप्तकालमें तेज, पद्म और शुक्ल इन तीन लेश्याओंको छोड़कर अन्य लेश्याएं होती नहीं हैं, इसलिये देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होना चाहिये। इस प्रकरणमें निम्न गाथाएं उपयुक्त हैं—

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्म-सुक्का य ।
सुक्का य परमसुक्का लेस्सासमासो मुणेयव्वो[1] ॥ २२६ ॥
तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।
एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्साभेदो मुणेयव्वो[2] ॥ २२७ ॥

एत्थ परिहारो उच्चदे— ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं साहेंति, उभयपक्खसाधारणादो। ण तो उत्त जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्वलेस्सा, उत्तमभोगभूमि मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह ति लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो। ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त दव्वलेस्सा, छव्विह भावलेस्सासु परियट्टंत तिरिक्ख मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमप्पसंगादो। धवलवण्ण-बलायाए

तीनके तेजोलेश्याका जघन्य अंश, दोके तेजोलेश्याका मध्यम अंश, दोके तेजोलेश्याका उत्कृष्ट एवं पद्मलेश्याका जघन्य अंश, छहके पद्मलेश्याका मध्यम अंश, दो के पद्मलेश्याका उत्कृष्ट एवं शुक्ललेश्याका जघन्य अंश, तेरहके शुक्ललेश्याका मध्यम अंश तथा चौदहके परमशुक्ललेश्या होती है। इस प्रकार तीनों शुभ लेश्याओंका भेद जानना चाहिये ॥ २२६, २२७ ॥

विशेषार्थ—भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके जघन्य तेजोलेश्या होती है। सौधर्म और ऐशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजोलेश्या होती है। सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या होती है। ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पद्मलेश्या होती है। शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पद्मलेश्या और जघन्य शुक्ललेश्या होती है। आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्ललेश्या होती है। इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर इन चौदह विमानवालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्ललेश्या होती है।

समाधान—शंकाकारकी पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार कहते हैं—ऊपर कही गईं ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, ये गाथाएं उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं। और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है। जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—द्रव्यलेश्या अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेश्याका तो अनुकरण करती नहीं है, अन्यथा अपर्याप्तकालमें अशुभ तीनों लेश्यावाले उत्तम भोगभूमिया मनुष्योंके गौर वर्णका अभाव प्राप्त हो जायगा। इसीप्रकार पर्याप्तकालमें भी पर्याप्त जीवसंबन्धी द्रव्यलेश्या भावलेश्याका नियमसे अनुकरण नहीं करती है, क्योंकि ऐसा मानने पर छह प्रकारकी भावलेश्याओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्योंके द्रव्यलेश्याके अनियम

---

१ गो. जी. ५३१ [illegible]

२ गो. जी. ५३४ [illegible]

भावदो सुक्कलेस्सप्पसंगादो। आहारसरीराणं धवलवण्णाणं विग्गहगदि-ट्ठिय-सव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भावदो सुक्कलेस्साइत्तीदो चेव। किं च, दव्वलेस्सा णाम वण्णणामकम्मोदयादो भवदि, ण भावलेस्सादो। ण च णाण्हमसत्त णाम, वण्णणाम मोहणीयाणं अघादि पादीणं पोग्गल जीवविवागीणं एगत्त विरोहादो। णिम्मलोदयवण्णा भावलेस्सादो भवदि आहारादि वेउव्विय आहारसरीराणं वण्णा वण्णणामकम्मादो भवति, अण्णेण एस दोसो। ण च, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चादि बाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदिबंधे पदेसबंधे च भावलेस्सा वावारदंसणादो। अदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा त्ति सिद्धं। तदो वण्णणामकम्मोदयदो भवणवासिय वाणवेंतर जोइसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवंति, उवरिमदेवाणं तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ भवंति। पंच वण्ण रस रागस्स कम्मण चरणमो एग वण्ण ववहार विरोहाभावादो। भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्सा, भवणादिया

धवेत प्रसंग प्राप्त हो जायगा। और यदि द्रव्यलेश्याके अनुरूप ही भावलेश्या मानी जाय, तो धवल वर्णवाले बगुलेके भी भावसे शुक्ललेश्याका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा धवलवर्णवाले आहारक शरीरोंके और धवलवर्णवाले विग्रहगतिमें विद्यमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुक्ललेश्याकी आपत्ति प्राप्त होगी। दूसरी बात यह भी है कि द्रव्यलेश्या वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होती है भावलेश्यासे नहीं। इसलिये दोनों लेश्याओंको एक कह नहीं सकते, क्योंकि, अघातिया और पुद्गलविपाकी वर्णनामा नामकर्म तथा घातिया और जीवविपाकी (चारित्र) मोहनीय कर्म इन दोनोंकी एकतामें विरोध है। यदि कहा जाय कि कर्मोंके निर्मलोदयका वर्ण तो भावलेश्यासे होता है, और औदारिक, वैक्रियिक, आहारकशरीरोंके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं इसलिए हमारे कथनमें यह उक्त दोष नहीं आता है, सो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि, 'कृष्णलेश्यावाला जीव चंडकर्मा होता है वैर नहीं छोड़ता है' इत्यादि रूपसे बाहरी कार्योंके उत्पन्न करनेमें तथा स्थितिबन्ध और प्रदेशबन्धमें ही भावलेश्याका व्यापार देखा जाता है इसलिए यह बात सिद्ध होती है कि भावलेश्या द्रव्यलेश्याके होनेमें कारण नहीं है। इसप्रकार उक्त विवेचनसे यह फलित अर्थ निकला कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, तथा भवनत्रिकसे ऊपरके देवोंके तेज पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं। जिस प्रकार पांचों वर्ण और पांचों रसवाले कावक अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त कबक कृष्ण व्यपदेश देखा जाता है उसी प्रकार प्रत्येक शरीरमें द्रव्यसे छहों लेश्याओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेश्याके व्यवहार करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा " ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा " ।

देव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान,

न १४३ मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	१ दे	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ३ शुभ	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

न १४४ मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. १४८ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	१०	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सासा.	सं. प. सं. अ.	६अ	७		दे.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	स्त्री. पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. १४९ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	१	१	२
सासा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो,

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक काययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक

नं. १५१ असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जो दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भा जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारि सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्म

उन्हीं भवनवासी देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गु स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवग पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजो भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहा साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं भवनवासी देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्ति सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कु ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शु भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सास

नं. १४　　भवनवासी देवोंके पर्याप्त आलाप

[illegible]

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

हन ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोतलेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १५ भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२	१	६	७	४	१	१	१	२	२	४	२	१	२	द्र २	२	२	१	२	२
मि सा	सं अ	अ			दे	पं	त्र	वै मि कार्म	स्त्री पु		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा ३ अशु	भ अ	मि सा	सं	आहा अना	साका अना

नं. १६ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६ प ६ अ	१० ७	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	द्र ६	२	१	१	२	२
मि	सं प सं अ				दे	पंचे	त्रस	म ४ व ४ वै २ कार्म १	स्त्री पु		अज्ञा	अस	चक्षु अच	भा ४ अशु ३ तेज १	भ अ	मि	सं	आहा अना	साका अना

सोधम्मीसाणदेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

[illegible]नमें केवल पुरुषवेद या केवल स्त्रीवेद इसप्रकार एक वेदके स्थापित कर देने पर य[illegible]आप पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी भवनत्रिकोंके हो जाते हैं। भवनत्रिकके सामान्य आलापोंमें [illegible]के इन आलापोंमें इससे अधिक और कोई विशेषता नहीं है।

सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ

१ प्रतिषु [illegible]　　[illegible]

नं. १८४　　सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	[illegible]
४	२	६प	[illegible]	[illegible]
मि	सं प	६अ	[illegible]	[illegible]
सा	सं अ			[illegible]
स				[illegible]
अ				[illegible]

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म-ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६९ मिथ्यादृष्टि सौधर्म-ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	२	४	२	१	२	द्र २	२	१	१	२	२
मि	सं अ	अ			दे	पंचें	त्रस	वै मि कार्म	स्त्री पु		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा १ तेज	भ अ	मि	सं	आहा अना	साका अना

नं. १७० सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म-ऐशान देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प ६अ	१० ७	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	द्र ३	१	१	१	२	२
सासा	सं प सं अ				दे	पंचें	त्रस	म ४ व ४ वै २ का १	स्त्री पु		अज्ञा	असं	चक्षु अच	का शु त भा १ तेज	भ	सासा	सं	आहा अना	साका अना

भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सोधम्मीसाण सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

सोधम्मीसाण असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम,

---

अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

नं. १३२   सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र. १	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.	प.			दे.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	स्त्री. पु.		अज्ञा. ३ ज्ञान मिश्र.	अस.	चक्षु. अच.	ते. भा. १ तेज.	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त । देवासंजदसम्माइट्ठीणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं कधं लब्भदि ? वुच्चदे — वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढिमारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठि-ट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणमिय कालं काऊण सोधम्मीसाण-देवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि । अध ते चेव उक्कस्स-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति । अध ते चेव उवसमसम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणमिय कालं करेंति तो बम्ह-बम्होत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति । अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणमिय जदि ते कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सार-देवेसु उप्पज्जंति ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर — एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं।

शंका — असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व कैसे पाया जाता है ?

समाधान — वेदकसम्यक्त्वको उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चढ़कर फिर वहांसे उतर कर प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत असंयत और संयतासंयत उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंसे मध्यम तेजोलेश्याको परिणत होकर और मरण करके सौधर्म ऐशान कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। तथा उपर्युक्त गुणस्थानवर्ती ही जीव उत्कृष्ट तेजोलेश्याको अथवा जघन्य पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पमें उत्पन्न होते हैं। तथा वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मध्यम पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं तो ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ शुक्र और महाशुक्र कल्पोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्ट पद्मलेश्याको अथवा जघन्य शुक्ललेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ शतार

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ती णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके (देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं ऐसा कहना चाहिए। क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट पीत और जघन्य पद्मलेश्या, भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ [illegible]

नं. १५७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	[illegible]
४	२	६	१०	[illegible]
मि.	सं.प.	६	७	[illegible]
सा.	सं.अ.			[illegible]
स.				[illegible]
अ.				[illegible]

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद-सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एक्कारसण्हं कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है। इतनीमात्र ही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत प्राणत, आरण अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ सुप्रबुद्ध यशोधर, सुबुद्ध, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिंकर इन चार और नौ इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य,

१ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त। केण कारणेण उवसमसम्मत्त णत्थि? वुच्चदे— तत्थ ट्ठिदा देवा ण ताव उवसमसम्मत्त पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो। भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, उवसमसम्मत्त पि तत्थ ट्ठिदा देवा पडिवज्जंति, को तत्थ विरोहो? इदि ण, 'अणंतर पच्छदो य मिच्छत्त' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो। ण तत्थ ट्ठिद-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्त पडिवज्जंति, मणुसगदि-वदिरित्तण्णगदीसु वेदगसम्माइट्ठि-जीवाण दंसणमोहुवसमण-हेदु-परिणामाभावादो। ण य वेदगसम्माइट्ठित्त पडि मणुस्सेहिंतो विसेसाभावादो मणुस्साण व

सम्यक्त्वके बिना दो सम्यक्त्व होते हैं।

शंका— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है?

समाधान— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तो औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि वहां पर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है।

शंका— भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा आवे, किन्तु यदि वहां रहने वाले देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तो इसमें क्या विरोध है?

समाधान— ऐसा कहना भी युक्ति-युक्त नहीं है, क्योंकि, औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर ही औपशमिकसम्यक्त्वका पुनः ग्रहण करना स्वीकार करने पर 'अनादि मिथ्यादृष्टि जीवके प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्तिके अनन्तर पश्चात् अवस्थामें ही मिथ्यात्वका उदय नियमसे होता है। किन्तु जिसके द्वितीय तृतीयादि वार उपशमसम्यक्त्वका प्राप्ति हुई है, उसके औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर पश्चात् अवस्थामें मिथ्यात्वका उदय भाज्य है, अर्थात् कदाचित् मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है, कदाचित् सम्यग्मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होता है इत्यादि'[१]। इस कषायप्राभृतके गाथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है। यदि कहा जाय कि अनुदिश और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है। यदि कहा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टिके प्रति मनुष्योंसे अनुदिशादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव जो दर्शनमोहनीयके उपशमन योग्य परिणाम मनुष्योंके पाये जाते हैं वे

१ सम्मत्तपढमलंभस्साणंतर पच्छदो य मिच्छत्त। लंभस्स अपढमस्स दु भजियव्वो पच्छदो होदि॥ (कसाय पाहुड) सम्मत्तस्स जो पढमलंभो अणादियमिच्छाइट्ठिविसओ तस्साणंतर पच्छदो [illegible] [illegible]। तत्थ जाव ण [illegible] [illegible] पच्छा [illegible]। [illegible] मज्जिमो होइ। जयध. अ. पृ. ९६

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

" तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण,

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण

नं. १८७ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ बा.प.	४	४	४	१ ति	१ बा.ए. जाति	१ त्रस विना	१ औदा.	१ नपु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १८८ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ बा.अ.	४ अ.	३	४	१ ति	१ बा.ए. जाति	५ त्रस विना.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

---

1 प्रतिषु 'काउलेस्सा' इति पाठः । 2 बादरसुहुमाणं कालादो गो. जी. ४९७

नं. १९०   सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सू.प.	४	४	४	१ ति.	१ सू.ए.	५ स्था. बिना	१ औ.का.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. १ का. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा।

एवं पज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एओ अपज्जत्तालावो।

बेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अप-ज्जत्तीओ, छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा इदि चत्तारि जोग, णवुंसयवेद,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साका-रोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप जानना चाहिए।

द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासो-च्छ्वासके विना चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग और असत्यमृषावचनयोग ये चार योग; नपुंसक

९१

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	३	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
अ			ति	सू. ए. जाति	स्था. काय	औ. मि. का.	न		कुम. कुश्रु.	अ	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ९२

द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
[illegible]	५ प ५ अ	६ ४	४	१ ति	१ द्वी	१ त्रस	४ औ २ का १ व १ अन	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
६	४	१ ति	१ द्वी	१ त्रस	२ अनु औ १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२	१ मि	१ असं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

एवं बीइंदिय-पज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं बीइंदियपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बेइंदिय-लद्धिअपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी,

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, कायबल और आयु ये चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे द्वीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। द्वीन्द्रियजाति और लब्ध्यपर्याप्तक नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय पर्याप्त और त्रीन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, वचनबल कायबल, आयु, और श्वासोच्छ्वास ये सात प्राण; अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासो

नं. १९४ द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	४	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	द्वी. अ.	अ.			ति.	द्वी.	त्र.	औ. मि. कार्म.	न.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

तसकाओ, चत्तारि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[1] तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा,

च्छ्वासके विना शेष पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षु

नं. १९५ त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ मि	२ त्री प त्री अ	५ ५ अ	७ ७	४	१ ति	१ त्री	१ त्रस	४ व १ अनु औ २ का १	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १९६ त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ त्री प	५	७	४	१ ति	१ त्री	१ त्रस	२ व १ अनु औ १	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

एवं तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लद्धि-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

चउरिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, आदिकी तीन इन्द्रियां, कायबल और आयु ये पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरि-

नं. १९७ त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	५	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	त्री. अ.	अ.			ति.	त्री.	त्रस.	औ. मि. का.	न.		कुम. कुश्रु.	अस.	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	अस.	आहा. अना.	साका. अना.

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठ पाण छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो,

न्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्या- प्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय, कायबल, वचनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अना-

नं. १९८

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ च.प. च.अ.	५प. ५अ.	८ ६	४	१ ति.	१ च.	१ त्रस.	४ अनु. औ. २ का. १	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठ पाण छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो,

---

न्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन:पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कायबल, वचनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-

न. १९८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ च.प. च.अ.	५ प. ५ अ.	८ प. ६ अ.	४	१ ति.	१ च.	१ त्रस.	४ व. १ अनु. औ. २ का. १	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

८ आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच
अपज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, वे
जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-
सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त,
असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

कारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि
गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच अपर्याप्तियां, आदिकी चार
इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति,
त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों
कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे
कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्य
सिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी
होते हैं।

नं. १९९

चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	८	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. ६	२	१	१	१	२
मि	च				ति	च	त्र	औ	न		कुम	अस	चक्षु	भा ३	भ	मि	अस	आहा	साका
	प							अनु			कुश्रु		अच	अशु	अ				अना

नं. २००

चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	६	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि	च अ	अ			ति	च	त्र	औमि	न		कुम	अस	चक्षु	का शु	भ	मि	अस	आहा	साका
								कार्म			कुश्रु		अच	भा ३ अशु	अ			अना	अना

[illegible] असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ [illegible]त्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, [illegible]दियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, [illegible]जम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया [illegible]वसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता [illegible]वि अणागारुवजुत्ता वा ।

[illegible]कारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्या[illegible]प्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न. ९०

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. असं.प.	६	१० ९	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

न. [illegible]

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अ. असं.अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। एवं सण्णिपंचिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जाणिऊण वत्तव्वा।

असण्णि-पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिए।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति,

नं. २०७ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	५	९	४	१	१	१	४	३	४	२	१	२	द्र. ६ भा. ३	२	१	१	२	२
मि.	अस. प. अ.	५प. ५अ.	९ ७		ति.	पंचे.	त्रस.	अनु. १ औ. २ का. १			कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे' अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छच्चा, छच्चा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारह वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा, सोलस वा चउवीस वा, अट्ठारह वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तत्तीस वा, चउवीस वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बायालीस' वा, तीस वा पंचतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठतालीस वा, चउतीस वा एक्कावण्ण वा, छत्तीस वा चउवण्ण वा, अट्ठत्तीस वा सत्तवण्ण वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्व जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति। तिण्णि जीवसमासत्ति वुत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्ति अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा हवंति। चत्तारि वा इदि वुत्त तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छच्चा इदि वुत्त दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्ति अपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अथवा थावर

कायमार्गणाके अनुवादसे आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दस अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्ताईस, बीस अथवा तीस, बाईस अथवा तेतीस, चौबीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनतालीस, अट्ठाईस अथवा ब्यालीस, तीस अथवा पैंतालीस, बत्तीस अथवा अड़तालीस, चौंतीस अथवा इक्यावन, छत्तीस अथवा चौवन, अड़तीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं। आगे इन्हीं का स्पष्टीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीव [illegible]
प्रकारके होते हैं। अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास [illegible]
ने पर निर्वृत्तिपर्याप्तक निर्वृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इसप्रकार [illegible]
हैं। चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रसकायिक जीव दो [illegible]
तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं [illegible]
कार चार जीवसमास कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा [illegible]
के दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास दो निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास [illegible]
मास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा स्थावर [illegible]

काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिं-
दिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीव-
समासा। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि
लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा,
बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा
सगलिंदिया वियलिंदिया त्ति, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा
पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ठ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि
णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं बारस जीव-
समासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता
अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया
अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अप-
ज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता
एवं दस जीवसमासा हवंति। पंच णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्त

होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और
विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय
जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते
हैं। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन
निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास
होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो
प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और
अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकले-
न्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके
होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावर
कायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक
जीवसमास, चार निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार
बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म।
बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो
प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय
और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक।
संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते
हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक।
इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञि

बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चउव्विहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति। बावीस जीवसमास-अब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छव्वीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा

और सूक्ष्म। ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इसप्रकार प्रत्येक एक एक कायके जीव चार चार प्रकारके हो जाते हैं। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये सब मिलाकर बाईस जीवसमास हो जाते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं और त्रसकायिकके मिलाकर ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बाईस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संज्ञी) और अमनस्क (असंज्ञी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक। अमनस्क जीव भी दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिला देने पर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसकायिक ये बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय भी दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव भी दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंके मिला देने पर छब्बीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक [illegible]

समासा तेरस लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे घेत्तूण एगूणचालीस जीव-समासा हवंति। छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अप-ज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति। चोद्दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बायालीस जीवसमासा। अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चदि, तत्थ सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्ति-पज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धिअपज्जत्तजीव-

सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, असमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय इस तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं। छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास निकाल कर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये छह जीवसमास मिला देने पर अट्ठाईस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और असमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चौदह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर ब्यालीस जीवसमास होते हैं। अट्ठाईस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदप्रतिष्ठित और बादरनिगोदअप्रतिष्ठित। ये सब ही दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये चार भंग मिला देने पर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा प्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, असमनस्कपंचेन्द्रिय और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास

दुवजुत्ता वा[11]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारह वा बारह वा तेरह वा चउद्दस वा पण्णारह वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारह वा एगुणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादि जादी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबंधी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसमासोंमेंसे एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां; पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	५७	प अ ६ ६ ५ ४ ४	१० ७ ७ ८ ६ ७ ५ ६ ४ ४ ३ ४ २ १	४ [illegible]	४		६	१५ अयोग	३ अपग.	४ अकषा.		७	४	६ द्र. ६ भ भव	२ भ अ	६	२ सं अ अनु	२ आहा अना.	२ साका अना यु

अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा"।

प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदा-रिकमिश्र वैक्रियिकमिश्र आहारकमिश्र और कार्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनः-पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ — ऊपर जो सत्तावन जीवसमास कह हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस हैं जिनका यहां पर 'एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि संख्याओंके कथनमें आए हुए' पूर्ववर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है। अपर्याप्तके निर्वृत्य-पर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद करके उन पर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्याओंके द्वारा किया गया है। यहां पर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती संख्याएं जीवसमासोंको सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं। इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव समाहित कर लिये गये हैं। भिन्न भिन्न संख्याएं केवल उनके भेद प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई

नं. २१   त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ [illegible]	२८	६अ ५ ४	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणसं.	४	५	६	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः. विना	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. ह.

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाया त्ति मूलोघ भंगो। णवरि मिच्छाइट्ठि
इस्स वि कायाणुवाद-मूलोघ-भुत्तजीवसमासा वत्तव्वा। णत्थि अण्णत्थ विसेसो

"पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमास
पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि
तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि क
अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णी

हैं। पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये। गोम्म
जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां रक्खी हैं। पहली पंक्तिमें एक
आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है।
पंक्तिमें दो, चार आदि अड़तीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अप
इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है। तथा तीसरी पंक्तिमें तीन छह आदि सत्तावनतक जी
समास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्त्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदों
अपेक्षा किया है।

सामान्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सि
जीवों तकके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि
सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय
कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए। इसके अतिरिक्त
अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,
बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और
सूक्ष्मपृथिवीकायिक अपर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां;
चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाय
योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय,
कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण

नं. २१६

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

[illegible]

लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदिय-जादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर-एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त, खर बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और खर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ — ऊपर पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परन्तु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करने पर चार

नं. २१७ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	४	४	१	१	१	१	१	४	२	१	१	द्र. ६ भा. ३	२	१	१	१	२
मि	बा.प. सू.प. ४				ति	ए	पृ	औ.का.	न		कुम. कुश्रु.	असं	अच	अशु	भ. अ.	मि	असं	आहा	साका. अना.

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	३	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	बा.अ. सू.अ.	अ.			ति.	एके.	पृ.	औ.मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. २१९ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	४	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि.	बा.प. बा.अ.	प. ४ अ.	३		ति.	एके.	पृ.	औ. २ कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, च
पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविक
ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अच
दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धि
मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [५] ।

[१] तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, च
अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढ

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, च
प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययो
नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य
छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात
असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—ए
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, ती
प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययो

नं. २२०

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ बा प.	४	४	४	१ ति	१ एके	१ पृ	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र. ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

नं. २२१

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ बा अ	४ अ	३	४	१ ति	१ एके	१ पृ	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र. २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

काओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा । बादरपुढविलद्धि-अपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो । णवरि सुहुम-पुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं ।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो । णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ । तम्हि चेव पज्जत्तकाले दव्वेण सुहुमआऊणं काउलेस्सा वा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा । कुदो ? घणोदधि-घणवलयागास-पदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो । धवल-किण्ह-णील-पीयल-रत्ताअंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? आधारभाव

और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्थानपर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिए।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्थानपर 'अप्कायिक' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए। उन्हीं सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए। तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि घनोदधिवात और घनवलयवात द्वारा आकाशसे गिरे हुए पानीका धवलवर्ण देखा जाता है। यहां पर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि धवल, कृष्ण, नील, पीत, रक्त और आताम्र वर्णवाला पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही होता है, ऐसा कहना नहीं बनता है? परंतु उनका यह

मट्टियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्णववहारदंसणादो। आऊणं सहाववण्णो पुण धवलो चेव।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा। णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव। णत्थि अण्णत्थ विसेसो। बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा। बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्ति अपज्जत्त भंगो। सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढविकाइय भंगो। सुहुमआउकाइयणिव्वत्ति पज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त भंगो।

तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं च पज्जत्तणामकम्मोदयतेउकाइयाणं[1] तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं

कहना युक्ति संगत नहीं है, क्योंकि, आधारके होने पर मट्टीके संयोगसे जल अनेक वर्णवाला हो जाता है ऐसा व्यवहार देखा जाता है। किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है। इसीप्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए। बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए।

तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक

---

१ [illegible] 'पज्जत्तणामकम्मोदयाणं' इति पाठः।

ादरआउकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो। णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-
ुक्क-तवणिज्जलेस्साओ। तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ[1]। एवं
ज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तव्वं। बादरकाइयाणं तेउ-भंगो। एवं चेव तेसिं
ज्जत्ताणं। णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्व
ेस्सा वत्तव्वा।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम-भंगो। वाउकाइयाणं तेउ-भंगो।
णवरि दव्वेण काउ-सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ[2]। तेसिं पज्जत्ताणं काउ-गोमुत्त-

---

पर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए।

विशेषार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परंतु पहले अप्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद-प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादर जीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादर तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसीप्रकार बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय पान् शुक्ललेश्या होती है। इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेश्या और बादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र

---

१ बादरआउतेऊ सुक्का तेऊ य ××। गो. जी. ४९७

२ घन घनोदधयो मुद्गसन्निभाः घनवाताः गोमूत्रवर्णाः अव्यक्तवर्णास्तनुवाताः। त. रा. वा. ३. १. ७. × वायुकायाणं। गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य। गो. जी. ४९७ गोमुत्तमुग्गवण्णाणवण्णाण घणउदहि ण हवे। बादाण बलयतय वक्खाणं तय व ओगरल ॥ ति. सा. १२३

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीर-वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फइकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबंधी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

नं. २२६ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
	१ प	४	४	४	१ ति.	१ ए.	१ प्र. व.	१ औदा.	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा'' ।

एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धिअपज्जत्ताण
एगो आलावो पत्तेयवणप्फइ-अपज्जत्ताणं जहा तहा वत्तव्वो । जहा पत्तेयसरीराणं,
बादरणिगोदपडिट्ठिदाण पि वत्तव्वं ।

साधारणवणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमास
चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ
तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्ता
कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णी
काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारि

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार निर्वृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्या
और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक
जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान
कहना चाहिए। तथा, जिसप्रकार अभी प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप कहे हैं,
उसीप्रकारसे बादरनिगोद प्रतिष्ठितवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व
गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके बादर और सूक्ष्म ये दो दो भे
तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार
अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण
वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन
योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन
द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक

नं. २८७ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ प्र. अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

गारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, त्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, धारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, जमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ; भव द्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणा रुवजुत्ता वा'।

थ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक थ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद पर्याप्त बादरचतुर्गति गोद पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार , चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, सकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे लेश्याएं; भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; थ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २२८ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
	८	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ एके	१ वन	३ औ १ का १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. २२९ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
	४	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद पर्याप्त बादर नित्यनिगोद अपर्याप्त व बादरचतुर्गतिनिगोद पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

नं. २३०   साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४ अ.	३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन. सा.	२ औ.मि. कार्म.	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ कृ. नी. का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारण-वणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद पर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २३१ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	३ औ. २ कार्म. १	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	१ अच.	द. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ अस.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.
मि.																			

नं. २३२ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२	४	४	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	१ औदा.	१ नपु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	१ अच.	द. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ अस.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोद-वणप्फइकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

एवं साधारणसरीरबादरवणप्फईणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लद्धि-अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो। सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुमपुढवि-भंगो। णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाहारणसरीरवणप्फइकाओ त्ति वत्तव्वा। चउगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फइकाइय-भंगो। तेसिं बादराणं बादरसाधारणसरीर

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद अपर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। सभी सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए। चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणशरीर वन

नं. २३३ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२	४ अ	३	४	१ ति	१ एके	१ वन	२ औमि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

वणप्फइ भंगो। तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फइकाइय
णवरि चउगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं। एवं णिच्चणिगोदाणं पि, णवरि एत्थ णि
गोदो त्ति वत्तव्वं।

''तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ
त्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव
सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि प
पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, बेइंदियादी च
जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवे
अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि द

स्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। उन्हीं बादर चतुर्गति निगोद वनस्पतिक
जीवोंके आलाप बादर साधारणशरीर वनस्पतिकायके आलापोंके समान होते हैं। सा
पर्याप्त अपर्याप्त भेदसहित उन्हीं सूक्ष्म चतुर्गति निगोद जीवोंके आलाप साधारणशरीर
वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि साधारण श
स्थानमें 'चतुर्गति निगोद' इतना और कहना चाहिए। इसीप्रकार नित्यनिगोद साधारणश
वनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर 'नित्यनि
इस पदको कहना चाहिए।

त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वी
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त और अपर्या
भेदसे दश जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां और
अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण;
प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, दो प्राण; एक प्राण; चारों संज्ञाएं
क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रस
पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों क
तथा अकषायस्थान भी है; आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ३२४ त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ
१४	२	६ प, ६ अ, ५ प, ५ अ	१०, ७, ६, २ १ [illegible]	४ [illegible]	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदी, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो

लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योगोंको छोड़कर शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

नं. २३१ त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५	६	१०	४	४	४	१	११	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	१	२
	द्वी. प.	५	९	क्षीणसं.		द्वी.	त्रस.	म. ४	अपग.	अकषा.				भा. ६	[illegible]			आहा.	साका.
	त्री. प.		८			त्री.		व. ४						अले.					अना.
	चतु. प.		७			च.		औ. १											युग.
	अ. प.		६			पं.		वै. १											
	सं. प.		४					आ. १											
			१					अयोग											

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ

हैं, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ - त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलापोंका वर्णन करते समय जो अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है परन्तु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है। इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसीप्रकार अनाहारक कहा है। वहां पर भी अनाहारक कहनेका ऊपर कहा हुआ कारण जान लेना। इसीप्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर — मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान; द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको

दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

[1]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदी, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो

लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योगोंको छोड़कर शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

नं. २३१   त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५	६	१०	४	४	४	१	११ म. ४	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	१	२
	द्वी. प.	५	९	क्षीणसं.		द्वी.	त्रस.	व. ४	अपग.	अकषा.				भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
	त्री. प.		८			त्री.		औ. १						अले.	अ.		असं.		अना.
	चतु. प.		७			च.		वै. १									अनु.		यु.
	सं. प.		६			पं.		आ. १											
	असं. प.		४ १					अयोग.											

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ

है आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ – त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है परन्तु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है। इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसीप्रकार अनाहारक कहा है। वहां पर भी अनाहारक कहनेका ऊपर कहा हुआ कारण जान लेना। इसीप्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि

नं २३६   त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५	५	६अ	७	४	४	४	१	४	३	४	६	४	४	द्र २	२	५	२	२	२
मि	द्वी अ	५	७	क्षीणसं.		द्वी	त्रस	औ मि	अपग.	अकषा.	विभ	असं		का	भ	मि	सं	आहा.	साका
सा	त्री		६			त्री		वै मि			मन	सामा		शु	अ	सा	असं	अना.	अना.
अ	च					च		आ मि			विना	छेदो		भा ६		औप	अनु	अनु.	यु उ.
प्र	अ		४			प		कार्म.				यथा				क्षा			
स	स		२													क्षायो			

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा,

और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवों तक क्रमसे दश प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. [illegible]८ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ पर्या. च. अस. स.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	[illegible]	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ स. असं.	आहा.	२ साका. अना.

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

अकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, चदुगदिमदीदो, अणिंदिओ, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति"।

एवं तसकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

तसकाइय-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण,

त्रसकायिक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे लेकर अयोगिकेवली जिन तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

अकायिक जीवोंके आलाप कहने पर—अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत प्राण, क्षीणसंज्ञा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनों विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसीप्रकार त्रसकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण

नं. २४०   अकायिक जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
अतीतगु.	अतीतजी.	अतीतप.	अतीतप्रा.	क्षीणसं.	अतीतग.	अतीतइं.	अका.	अयो.	अपग.	अकषा.	के.	अतीतसं.	के.	द्र. ० भा. ०	अतीत भ. अ.	क्षा.	अतीत संज्ञि असं.	अना.	२ साका. अना. यु. उ.

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

एवं कायमग्गणा समत्ता।

जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ-भंगो। णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगि-गुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिऊण मूलोघालावा वत्तव्वा।

मणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण। केई वचि-कायपाणे अवर्णेति, तण्ण घडदे, तेसिं सत्तिं संभवादो।

पांच प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, द्वीन्द्रियजाति आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

योगमार्गणाके अनुवादसे आलापोंका कथन मूल ओघ आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां पर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोगिगुणस्थान और अतीतगुणस्थान नहीं होता है सो आगमाविरोधसे जानकर मूल ओघालाप कहना चाहिए।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण होते हैं। कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश प्राणोंमेंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं किन्तु उनका वैसा करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है।

नं. २४१   त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	५	६	७	४	२	४	१	२	१	४	२	१	२	द्र. १	२	१	२	२	२
मि.	द्वी. अ.	५ अ.	७		ति.	द्वी.	त्रस.	औ. मि.	न.		कुम.	असं.	चक्षु.	का.	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	त्री. ,,	५	६		म.	त्री.		कार्म.			कुश्रु.		अच.	भा. ३	अ.		असं.	अना.	अना.
	चतु. ,,	४ अ.	५			च.								अशु.					
	असं. ,,		४			पं.													
	सं.																		

वचि-कायबलणिमित्त-पुग्गल-क्खंधस्स अत्थित्त पेक्खिऊण पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचि पज्जत्तीओ अत्थि । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1]।

मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

इसलिये ये दो प्राण उनके बन जाते हैं। उसीप्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं इसलिये उक्त दोनों पर्याप्तियां भी उनके बन जाती हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं. २४२ मनोयोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३	१	६	१०	४	४	१	१	४	३	४	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२	६	१	१	२
अयो. म. प. विना				क्षीणसं.		पंचे.	त्रस.	मनो.	अपग.	अकषा.					भ. अ.		सं. अनु.	आहा.	साका. अना. यु. उ.

दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१३]।

मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१४]।

मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

नं. २८३　　मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	४	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	१	१	२
मि.	सं प.					पंचे.	त्रस.	मनो.			अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा ६	भ. अ.	मि.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. २८४　　मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	४	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सासा.	सं प.					पंचे.	त्रस.	मनो.			अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

मणजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त

पयोगी होते हैं।

मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

नं. २८३　　　　मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	४	३	४	३	१	३	द्र. ६ भा. ३	१	३	१	१	२
[illegible]	[illegible]				[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा । सजोगिकेवलिम्मि सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो मणजोगा वत्तव्वा । सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो ।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही हैं, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलीके सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसीप्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

नं. ४८८ मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	[illegible]	१	[illegible]	१	१	१	४	३	४	४	३	३	[illegible]	१	[illegible]	१	[illegible]	२
प्रम.	सं. प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म.	पं.	त्र.	मन.			मति. श्रुत. अव. मन.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना.	भा.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

तए वचिजोग णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा ।

वचिजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व

प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके पांचों अपर्याप्त पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य

नं. २९०   वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	५	६	१०	४	४	४	१	४	३	४	३	१	२	द्र. ६	२	६	२	१	२
मि.	द्वी. प.	५	९			द्वी.	त्रस.					असं.		भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
	त्री. प.		८			त्री.									अभ.		असं.		अना.
	चतु. प.		७			चतु.													
	असं. प.		६			पं.													
	सं. प.																		

भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो य भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ अवणेऊण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो। मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वचनयोगी आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए। सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यमृषावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं। सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि आलाप कहते समय जहां पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहां उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए। मृषावचनयोगके आलाप भी मृषामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि मृषामनोयोगके स्थान पर मृषावचनयोग कहना चाहिए। इसीप्रकार सत्यमृषावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिये, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यमृषामनोयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोग सामान्यके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि असत्यमृषावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यमृषावचनयोग ही कहना चाहिए।

न. २५१   वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	५ द्वी प. त्री ,, च ,, अस ,, स ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी त्री च प	१ त्रस	४ वच	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

काययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २९२   काययोगी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना	१४	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ. ४ प. ४ अ.	१० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५ ६ ४ ४ ३ ४ २	४ क्षीणसं.	४	५	६	७ का.	३ अपग.	४ अक.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	३ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चेव वा, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा [1]।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तसम्बन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक अथवा आहारक ही होते हैं; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियिकमिश्रके विना छह अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवें और तेरहवें गुणस्थानमें आहारकसमुद्घात और केवलिसमुद्घातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार की

नं. ४२ काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तम्मि चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि पच गुणट्ठाणाणि, सत्त जी
छ अपज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण
पच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा,
गदीओ, एइदियजादि आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि
तिण्णि वद अवगदवेदो वि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि

ली जाती है तब उसकी अपेक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अ
प्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और वैक्रियिक ये तीन
ही बनते हैं। इसप्रकार आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आल
बतलाये हैं अनन्तर एक अनाहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरह
गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक
दोनों आलाप बन जाते हैं। परन्तु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके
स्वीकार कर लेने पर अनाहारक आलाप काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें नहीं बनता है।
इसका यह तात्पर्य हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग कहे जावें, तब
आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप कहना चाहिए और जब केवल तीन योग ही कहे
जावें तब एक आहारक आलाप ही कहना चाहिए। सातों संयमोंके सबधमें भी यही विवक्षा
भेद जान लेना चाहिये।

उन्हीं काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासा-
दनसम्यग्दृष्टि अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसयत और सयोगिकेवली ये पाच गुणस्थान, सात
अपर्याप्त जीवसमास छहों अपर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया, सात प्राण,
सात प्राण, छह प्राण पाच प्राण चार प्राण, तीन प्राण और दो प्राण, चारों सज्ञाए तथा क्षीण
सज्ञास्थान भी है, चारों गतिया एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया पृथिवीकाय आदि छहों
काय, औदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय
योग ये चार योग तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी
है विभगावधि और मन पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असयम सामायिक छेदोपस्थापना और

१ प्रतिषु ... ज्ञान ... ।

काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु ५ | जी ७ | प ६ अ ५ अ ४ अ | प्रा ७, ७, ६, ५, ४, ३, २ | स ४ क्षीणस | ग ४ | इ ५ | का ६ | यो ४ औमि वैमि आमि कार्म | वे ३ अप | क ४ अक | ज्ञा ६ विभ मन विना | सय ४ अस सामा छेदो यथा | द ४ | ले २ का शु | भ २ | स ५ मिश्र विना | सज्ञि २ | आ २ आहा अना | उ १० ...

तम्हि चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ¹।

तम्हि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत

नं. ४

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

[illegible]

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

'तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग

नं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. १ वै. १	३	४	३ कुम. कुश्रु. विभं.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुम. कुश्रु.	[illegible]	चक्षु. अच.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण,

---

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. २६४   काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	४	१	१	३	२	४	३	१	३	द्र. २ भा. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अ.				पंचे.	त्रस.	औ.मि. वै.मि. कार्म.			मति. श्रुत. अव.	असं.	के.द. विना.	का. शु.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तउ पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय आहार आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाए, चत्तारि[1] णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

तेज पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठः।

नं. २६५

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६ प	१०	४	१ म	१ पं	१ त्रस	१ औ	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. २६६

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्रस	३ औ १ आहा २	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति ।

ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

योग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

नं. १८८

काययोगी केवली जिनके आलाप

होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा [1] ।

ओरालियकायजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २६९ औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ अपा विना	७ पया	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ क्षीणसं.	२ ति म	५	६	१ औ	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं अनु.	१ आहा	२ साका अना

नं. २७० औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पया.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	२ ति म	५	६	१ औ	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

ओरालियकायजोगि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा।

ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	१ औ	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २७

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
[illegible]	सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	१ औ	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धि
सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियकायजोगि असंजदसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण,
जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियज
तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंज
तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारि
सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१] ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव कायजोगि भंगो। णवरि सव्व
ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । सजोगिकेवली च पज्जत्ता आहारि
भणिदव्वा ।

चारों कषाय, तीनों अज्ञानासे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन
और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोप
और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतस
ग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों सं
तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककायय
तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भा
छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्य
संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्
तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है
सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए। और सयोगिकेव
जीवसमास कहते समय पर्याप्तक जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहार
इसप्रकार कहना चाहिए।

नं. २७३　　　औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ [illegible]

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो त्ति अणिंदजीवसमासेण सजोगिणा होदव्वं? ण, दव्वमणस्स अत्थित्तं भावगदपुव्वगइं च अस्सिऊण तस्स सण्णित्तब्भुवगमादो। पुढवी आउ तेउ वाउ पत्तेय साहारणसरीर तस पज्जत्तापज्जत्त चोद्दस जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सत्ताणि सत्तब्भुवगमादो वा। एसो अत्थो एत्थ वत्तव्वो। छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, विभंग मणपज्जवणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा। किं कारणं? मिच्छाइट्ठि-सासण-असंज-

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं।

शंका—जब कि सयोगिकेवली जिन संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों से व्यपदेश रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अतीत जीवसमासवाला होना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्यमनके अस्तित्व और ज्ञानमनरूप पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संज्ञीपना माना गया है। अथवा, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणशरीर वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तरूप यों चौदह जीवसमासोंमेंसे सात अपर्याप्त जीवसमासोंमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत सयोगिकेवलीका सत्त्व माना जानेसे उन्हें अतीत जीवसमासवाला नहीं कहा जा सकता है। यहां भी ऐसा कहना चाहिए।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुद्घातके समय दो प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके बिना छह ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोत लेश्या होती है।

शंका—द्रव्यसे एक कापोत लेश्या ही होनेका क्या कारण है?

सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि लियपरमाणूणं धवल विस्ससोपचय सहिद छव्वण्णकम्मपरमाणूहि सह मिलि वण्णुप्पत्तीदो। कवाडगद सजोगिकेवलिस्स वि सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। सजोगिकेवलिस्स पुव्विल्ल-सरीरं छव्वण्णं जदि वि तण्ण घेप्पदि, कवाडगद केवलिस्स अपज्जत्तजोगे वट्टमाणस्स पुव्विल्ल सबधाभावादो। अहवा पुव्विल्ल छव्वण्ण सरीरमस्सिऊण उवयारेण दव्व केवलिस्स छ लेस्साओ हवंति।। भावेण छ लेस्साओ। किं कारणं ? मिच्छा सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं किण्ह णील-काउलेस्सा कवाडगद सजोगिकेवलिस्स सुक्कलेस्सा चेव भवदि, किंतु देव-णेरइ मणुसगदीए उप्पण्णाणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं अविणट्ठ पुव्वि लेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, उव

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, धवल सहित छहों वर्णोंके कर्मपरमाणुओंके साथ मिले हुए छहों वर्णवाले औदा परमाणुओंके कापोत वर्णकी उत्पत्ति बन जाती है, इसलिए औदारिकमिश्रकाय द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होती है।

कपाटसमुद्धातगत सयोगिकेवलीके शरीरकी भी कापोतलेश्या ही होती है। पूर्वक समान ही कारण कहना चाहिए। यद्यपि सयोगिकेवलीके पहलेका शरीर छहों होता है, तथापि वह यहां नहीं ग्रहण किया गया है, क्योंकि अपर्याप्तयोगमें वर्तम समुद्धातगत सयोगिकेवलीका पहलेके शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं रहता है। अथ छहवर्णवाले शरीरका आश्रय लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा सयोगिकेव लेश्याएं होती हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंके भावसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका—औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं होनेका क्या

समाधान—औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवोंके भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं ही होती हैं। और कपाटस औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्ललेश्या ही होती है। किन्तु जो नारकी मनुष्यगतिमें उत्पन्न हुए हैं, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान हैं और जिनकी सम्बन्धी भावलेश्याएं अभीतक नष्ट नहीं हुई हैं, ऐसे जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके छहों लेश्याएं कहीं गई हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्व आ

कारण, जादिविसेसेण संकिलेसाहियादो। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

ओरालियमिस्सकायजोगि सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, आउ-कायबलपाणा दो चेव होंति, पंचिंदियपाणा णत्थि, खीणावरणे खओवसमाभावादो खओवसम लक्खण भाविंदियाभावादो। ण च दव्विंदियस्स इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्त पदुप्पायण-सुत्तस्स दंसणादो। मण-वचि-उस्सासपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सासपज्जत्ती सण्णिद-पोग्गलखंध

शंका— नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लेश्याओंको क्यों नहीं छोड़ते हैं?

समाधान— इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके जातिविशेषसे ही अर्थात् स्वभावतः संक्लेशकी अधिकता होती है, इसकारण मरणकालमें भी वे उन्हें नहीं छोड़ सकते हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं। किन्तु पांच इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिकेवलीमें आवरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्षण भावेन्द्रियां भी नहीं पाई जाती हैं। तथा द्रव्येन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्वका प्रतिपादन करनेवाला सत्प्ररूपणाका सूत्र देखा जाता है। मनोबलप्राण, वचनबलप्राण और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं, क्योंकि, मन पर्याप्ति, वचन पर्याप्ति और आनापान पर्याप्ति संज्ञिक पौद्गलिक स्कन्धोंसे निर्मित

---

१ स. सू. ३७, ६१, ७६

नं. २५७ औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	२	१	१	१	१	४	३	१	३	द्र. १	१	२	१	१	२
अवि.	सं.अ.	अ.			ति. म.	पंचें.	त्रस.	औ.मि.	पुं.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के.द. विना.	का. भा. ६	भ.	क्षा. क्षाया.	सं.	आहा.	साका. अना.

ओरालियमिस्सकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा, मूलसरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किमिदि उच्चंति त्ति भणिदे ण, चोद्दस रज्जु आयामेण सत्त रज्जु-वित्थारेण एक्क-रज्जुमादिं कादूण वड्ढिद-वित्थारेण वा चोद्दस रज्जु आयामेण वट्टिद जीव पदेसाणं पुव्वसरीरेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबंधाभावादो। भावे वा जीवपदेस परिमाणं सरीरं होज्ज। ण च एवं, बद्धहरस्स[1] सरीरस्स तेत्तियमद्धाणं पसरण-सत्ति-अभावादो, ओरालियमिस्सकायजोगस्स अणुववत्तीदो वा। ण विसरण-सत्तीए कवाडगद-केवलिस्स संबंधो अत्थि। भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णि-

---

नहीं पाई जाती है, इसलिये मन प्राण नहीं माना गया है।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, और द्रव्यसे कापोत लेश्या होती है।

शंका—सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी तो छहों लेश्याएं होती हैं, फिर उन्हें यहां क्यों नहीं कहते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटसमुद्घातके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारसे व्याप्त जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ संबन्ध नहीं हो सकता है। यदि संबन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही आहारक शरीरको होना पड़ेगा। किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि, विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके पूर्वोक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है। अथवा, यदि मूलशरीरके कपाटसमुद्घात प्रमाण प्रसरणशक्ति माना जाय तो फिर उनके औदारिकमिश्रकाययोग नहीं बन सकता है। तथा कपाटसमुद्घातगत केवलीका पुराने मूलशरीरके साथ संबन्ध है नहीं, अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी छहों लेश्याएं होनेपर भी कपाटसमुद्घातके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है। किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग होनेके कारण एक कापोतलेश्या ही कही गई है।

विशेषार्थ—पूर्वाभिमुख केवलीके समुद्घात करने पर कपाटसमुद्घातमें जीवके प्रदेश ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और उत्तर दक्षिण सात राजु प्रमाण होते हैं। तथा उत्तराभिमुख केवलीके कपाटसमुद्घातके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और पूर्व पश्चिम एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारके अनुसार रहते हैं। परन्तु मूलशरीर संख्यात अंगुलकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरकी लेश्या औदारिकमिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है। किन्तु उस समय जो [illegible] आता है उन्हींकी लेश्या ली जायगी। अतः [illegible] औदारिकमिश्रकाययोगकी द्रव्यसे कापोतलेश्या कही है।

1 [illegible] 'एवि' पाठः।

सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा [१]।

वेउव्वियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २७८ औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सयो	१ अप	६ अ	२ आयु काय ४	क्षीणसं	१ म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ मि	अपग	अकषा	१ केव	१ यथा	१ केद	द्र ६ का भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु	१ आहा	२ साका अना

नं. २७९ वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा सम्य अवि	१ सं प	६	१०	४	२ न दे	१ पंचे	१ त्रस	१ वै	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ स	१ आहा	२ साका अना

वेउव्वियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेउव्वियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग,

नं. २८० वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

नं. २८१ वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

वेउव्वियकायजोगि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो,

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं. २८९ वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्यमि	सं प				न दे	पं	त्र	वै			अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	अस	चक्षु अच	भा ६	भ	सम्य	स	आहा	साका अना

तिण्णि दंसण, दव्वभावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [¹]।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [²]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८३   वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं प.	६	१०	४	२ न. दे.	१ पंचें.	१ त्रस.	१ वै.	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २८४   वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि. सा. अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	२ न. दे.	१ पं.	१ त्रस.	१ वै. मि.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. १ का. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

वेउव्वियमिस्सकायजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

'वेउव्वियमिस्सकायजोगि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी[१], पंचिंदियजादी,

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति,

१ ण सासणो णारयापुण्णे । गो. जी. १२८

न २८ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	३	४	२	१	२	द्र. १	२	१	१	१	२
मि	सं अ	अ			न दे	पं	त्रस	वै मि			कुम कुश्रु	असं	चक्षु अच	का भा ६	भ अ	मि	स	आहा	साका अना

न २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	१	२	४	२	१	२	द्र. १	१	१	१	१	२
सा	सं अ	अ			दे	पं	त्रस	वै मि	स्त्री पु		कुम कुश्रु	असं	चक्षु अच	का भा ६	भ	सा	स	आहा	साका अना

तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, पुरिस-णवुंसयवेदा त्ति दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहण्णिय-काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे जघन्य कापोत लेश्या और तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. [illegible] वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

[illegible]
[illegible]

अवगदवेदो, अकसाआ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाण, केवलदसण, सुहुमसापराइयसुद्धिसजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसजमो च अवणेदव्वा। अणिदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा।

"इत्थिवेदाण भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपज्जव केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार सुहुमसापराइय-जहाक्खादविहारसुद्धि-सजमेहि विणा चत्तारि सजम, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, सज्ञिक और असज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए। तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसयम और यथाख्यातविहारशुद्धिसयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए। और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकायिक भी होते हैं ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान सज्ञी पर्याप्त सज्ञी अपर्याप्त असज्ञी पर्याप्त और असज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, सज्ञीके छहों पर्याप्तिया छहों अपर्याप्तिया; असज्ञीके पाच पर्याप्तिया पाच अपर्याप्तिया; सज्ञीके दशों प्राण सात प्राण असज्ञीके नौ प्राण सात प्राण; चारों सज्ञाए नरकगतिके विना शेष तीन गतिया पचेन्द्रियजाति त्रसकाय आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग स्त्रीवेद चारों कषाय मन पर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान परिहारविशुद्धि सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसयमके विना शेष चार सयम आदिके तीन दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व

२०

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

[illegible]

दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"इत्थिवेद मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण और सात प्राण, नौ प्राण और सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. २९७ स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२	२	६अ	७	४	३	१	१	३	१	४	२	१	२	द्र. २ भा. ३	२	२	२	२	२
मि. सा.	सं.अप. असं. ,,	५ ,,	७		ति. म. दे.	पं.	त्र.	औ.मि. वै.मि. कार्म.	स्त्री.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि. सा.	सं. असं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. २९८ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	४	६प	१०	४	३	१	१	१३	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	२	२
मि.	सं.प.	६अ	७		ति.	पं.	त्र.	आ.द्वि. विना.	स्त्री.		अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ. अ.	मि.	सं. असं.	आहा. अना.	साका. अना.
	सं.अप.	५प	९		म.														
	असं.प.	५अ	७		दे.														
	असं.अप.																		

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदि

नं. २९९ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	१	२
मि.	सं. प. असं. प.	५	९		ति. म. दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ. अ.	मि.	सं. असं.	आहा.	साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

---

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदि

नं. २९९　　स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	१	२
मि.	सं.प. असं.प.	५	९		ति. म. दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ. अ.	मि.	सं. असं.	आहा.	साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

---

अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक असंयतसम्यग्दृष्टि गुण-

नं. ३०३ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	३	१	१	३	१	४	२	१	२	द्र. १ भा. ३	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.	अ.			ति. म. दे.	पं.	त्रस.	औ. मि. वै. मि. कार्म.	स्त्री.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. अशु.	भ.	सा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६ भा. ६	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.				ति. म. दे.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		३ ज्ञान मिश्र.	अस.	चक्षु. अच.		भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

१ प्रतिषु 'तउ इत्यधिक पाठ समस्ति ।

नं. ३०२ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ स.	१ आ.	२ साका. अना.

जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

इत्थिवेद पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, आहारदुगं णत्थि। इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञानके विना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना आदिके दो संयम होते हैं। यहांपर आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नहीं होनेका कारण यह है कि आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ३०३　　स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	२	३	[illegible]	१	३	१	१	२
प्रम.	[illegible]				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रु. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	[illegible]	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आ.	साका. अना.

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[3]।

[1] इत्थिवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं. प.				ति. म. दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	अस.	के. द. विना	भा. ६	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
देश.	सं. प.				ति. म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना	भा. ३ शुभ.	भ.	औप. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[1] इत्थिवेद-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, आहारदुगं णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो । तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आर्याओंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञानके विना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना आदिके दो संयम होते हैं। यहांपर आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नहीं होनेका कारण यह है कि आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. २०७　　स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आर्याओंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
प्र.	सं. प.				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, [illegible] जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण [illegible] लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, [illegible] जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण [illegible]

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, [illegible] और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन [illegible]

नं. २०८ स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६ भा. ३	१	३	१	१	२
[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

इत्थिवेद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०९ स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र ६	१	२	१	१	२
अपू	सं प			आहा. बिना	म	पं	त्र	म ४ व ४ औ १	स्त्री		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के.द बिना	भा १ शुक्ल	भ	औप क्षा	सं	आहा	साका अना

नं. ३१० स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र ६	१	२	१	१	२
अनि	सं प			मै प	म	पंच	त्रस	म ४ व ४ औ १	स्त्री		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के.द बिना	भा १ शुक्ल	भ	औप क्षा	सं	आहा	साका अना

पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं. ३११ पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	४ सं. प. सं. अ. असं. प. असं. अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१० ७ ९ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१५	१ पुं.	४	७ केव. विना	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णिणो असण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भ अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साग

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व संज्ञिक, अ आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, दनसम्यग्दृष्टि अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसका औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्र पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्श द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धि सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक

न ३१२

पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
[illegible]	२ सं प असं प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आहा १	१ पु	४	७ कुअ विना	५ अस दश सामा छेदो परि	३ केद विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	सं अस	१ आहा	२ साका अना

न ३१३

पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
[illegible]	२ सं अ असं अ	६अ ५अ	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	१ पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	३ केद विना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पुरिसवेद मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा " ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. ३१४   पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	६ प.	१०	४	३	१	१	१३	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	२	२
मि.	सं. प.	६ अ.	७		ति.	पं.	त्र.	आ.द्वि.	पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.	५ प.	९		म.			विना.					अच.		अ.		असं.	अना.	अना.
	असं. प.	५ अ.	७		दे.														
	असं. अ.																		

पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ भंगो। णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सासण सम्मामिच्छा असंजदसम्माइट्ठीण तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ।

णवुंसयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोग, णवुंसयवे

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सब आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। तथा सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां कहना चाहिए।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर— आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतकके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परन्तु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मन:पर्यय

नं. २१३ नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	१४	६प.	१०,७	४	३	५	६	१३	१	४	६	८	३	द्र. ६ भा. ६	२	६	२	२	[illegible]
नपुं.		६अ.	९ ७		न.			आहा.	नपुं.		मन.	असं.	के.द. विना		भ. अ.		सं. असं.	आहा. अना.	[illegible]
		५प.	८ ६		ति.			द्विक			केव.	देश.							
		५अ.	७ ५		म.			विना			विना	सामा.							
		४प.	६ ४									छेदो.							
		४अ.	४ ३																

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्स[illegible]
भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणा अणाहा[illegible]
सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, [illegible]
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पा[illegible]
छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच
जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,
चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,
छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय चारों मनोयोग चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग नपुंसकवेद, चारों कषाय मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व संज्ञिक असंज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

[illegible]न ३१८

नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
[illegible] प.	७	६ प. ५ प. ४ प.	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	६ विना केव. मनः.	४ असं. देश. सामा. छेदो.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	२	६	२ सं. अस.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१९]।

णवुंसयवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छह पाण

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादन, क्षायिक और वेदक इसप्रकार चार सम्यक्त्व; संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण,

नं. ३१९ नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३	७ अ.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७, ७, ६, ५, ४, ३	४	३	५	६	३	१	४	५	१	३	द्र. २ भा. ३	२	४	२	२	२
मि. सा. अ.					न. ति. म.			औ.मि. वै.मि. का.	नपुं.		कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	असं.	चक्षु. अच. अव.	का. शु. कृ. नी. का.	भ. अ.	मि. सा. क्षा. क्षायो.	सं. असं.	आहा. अना.	साका. अना.

पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि
तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया
णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-
लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो,
अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

ं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ
पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण
चारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच
पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
संजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

ाच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना
गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय,
ययोगद्विकके बिना शेष तेरह योग नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान,
ादिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक
संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी

ि नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक
गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार
दशों प्राण नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण, चारों
तिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय
ाय चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग
नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य
छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२१ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं अस	१ आहा	२ साका. अना.

नं. ३२२ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	३ न ति म	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु. भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका. अना.

णवुंसयवेद सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, सासणगुणेण जीवा णिरयगदीए ण उप्पज्जंति त्ति वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विक, और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना शेष बारह योग होते हैं। यहां पर वैक्रियिकमिश्रके नहीं होनेका कारण यह है कि सासादन गुणस्थानसे मर कर जीव नरकगतिमें नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. २८३ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	३	१	१	१२	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सा.	सं. प.	प.	७		न.	पं.	त्र.	म. ४	न.		अज्ञा.	अस.	चक्षु.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.	६			ति.			व. ४					अच.					अना.	अना.
		अ.			म.			औ. २											
								वै. १											
								का. १											

भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव-णिरयगदी णत्थि। पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां होती हैं, किन्तु देवगति और नरकगति नहीं होती है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग होते हैं, किन्तु यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२४ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	३ न ति म	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३२५ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	२ ति म	१ पं	१ त्रस	२ औमि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ कापो शु भा ३ अशु	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसयवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[329]।

णवुंसयवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं। किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

नं. ३२९   नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य. मि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान मिश्र	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता हो अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावे छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता हो अणागारुवजुत्ता वा [2]।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२७ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ कार्म. १	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ [illegible] अ.

नं. ३२८ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	[illegible] अ.

सं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ ओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे सयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ- ा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, कदकरणिज्ज दगसम्मत्तं लद्ध। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति रजुत्ता वा"।

णउंसयवेद संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ ी, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव ाउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां सात चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कायथोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक क और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं। यहां पर क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके ा कारण यह है कि कृतकृत्यवेदककी अपेक्षासे यहां पर क्षायोपशमिकसम्यक्त्व पाया है। संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक ी-पर्याप्त जीवसमास छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और ष्यगति ये दो गतियां पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और दारिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम दिके तीन दर्शन द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे तेज पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक

नं. ३२० नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, चत्तारि संजम णेव संजमो णेव असंजमो
जमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा
अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो
गणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो,
होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

दिय अणियट्टिप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ताव मूलोघ भंगो।

एवं वेदमग्गणा समत्ता।

सायाणुवादेण ओघालावा मूलोघ भंगा। णवरि दस गुणट्ठाणाणि वत्तव्वाणि।
ट्ठाण, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी,

णस्थान भी होता है, मतिज्ञान आदि पांचों ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना,
राय और यथाख्यात ये चार संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम
रहित भी स्थान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे शुक्ललेश्या
लेश्यास्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों
से रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा
और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक अनाहारक,
पयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत्
भी होते हैं।

अपगतवेदी जीवोंके अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक
आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई।

कषायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह
कषायमार्गणामें दश गुणस्थान कहना चाहिए। यहां पर अतीतगुणस्थान अतीत
समास, अतीतपर्याप्ति अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व अकायत्व,

अपगतवेदी जीवोंके आलाप

३३१

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
[illegible]	[illegible]	६प	१	४	१	१	१	११	[illegible]	४	५	४	४	द्र. ६	१	२	१	२	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illेgible]	[illegible]	[illegible]	भा.	भ.	औ. क्षा.	सं. अनु.	आहा. अना.	साका. अना.

अणिंदियत्तं अकायत्त, अजोगो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसं
केवलदंसण, दव्व भावेहि अलेस्साओ, णेव भवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णि
सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा चि णत्थि ।

कोधकसायाण भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा,
पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ च
अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण
पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, च
गदीओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, ति
वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाय, सत्त णाण, पंच सजम सुहुम जहाक्खादस
णत्थि, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्म
सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा

अयोग, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसयम केवलदर्शन, द्रव्य
अलेश्यत्व, भव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों
रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं।

क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान,
जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, पाच पर्याप्तिया, पाच अपर्याप्ति
पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया दशों प्राण, सात प्राण; नो प्राण, सात प्राण; आठ प्राण,
प्राण; सात प्राण, पाच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण चारों संज्ञाएं, चा
गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों यो
तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, द
सयम होते हैं, किन्तु यहा पर सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसयम नहीं होते हैं, क्यों
तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्
संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ आ प्रतौ ' अणियाहारयत्त पि अत्थि ' इति पाठ ।

नं ३३२   क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ मिथ्यादि	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५ ६,४ ४ ३	४	४	५	६	१५	३ अपग	१ क्रो	७ केव विना	५ सू.म यथा विना	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अ	२ आहा अना	[illegible]

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाओ, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिक

नं. ३३२   क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
आदिके	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	१ क्रो.	७ केव. विना.	५ सू. य. विना.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कोधकसाय मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ

मिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं

नं. ३३४   क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. प्रम.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	३	१ क्रो.	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ अस. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं. असं.	१ आहा. अना.	१ साका. अना.

अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४०]।

कोधकसाय-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४१]।

संज्ञाएं, नरकगतिको छोड़ कर शेष तीन गतियां; पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २४०　　क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६अ.	७	४	३	१	१	३	३	१	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.				ति. म. दे.	पंचे.	त्र.	औमि. वैमि. कार्म.		क्रो.	कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. २४१　　क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	१	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सम्यग्मि.	सं. प.					पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १		क्रो.	ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद इत्थिवेदो णत्थि, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, किन्तु यहां पर स्त्रीवेद नहीं होता है; क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४३ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१ अवि.	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	१ क्रो	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना.

नं. ३४४ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	२ पु न	१ क्रो	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द २ का शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना.

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ ..., दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव ... तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ ..., भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, ...णो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ ...त्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, (मणुसगदी, ...दियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,) चत्तारि णाण, ... संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भव...

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक ...ी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और ...मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, ...और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम ...आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, ...औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो...पयोगी होते हैं ।

क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज पद्म और शुक्ल लेश्याएं,

१ प्रतिषु कोधकसाओ इति पाठो नास्ति ।

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप

सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कोधकसाय-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४६ क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६प	१०	४	१	१	१	११	३	१	४	३	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
प्रम.	सं. प.	६अ.	७		म.	पंचे.	त्रस.	म. ४		क्रो.	मति.	सामा.	के. द.	भा. ३	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.							व. ४			श्रुत.	छेदो.	विना.	शुभ.		क्षा.			अना.
								औ. १			अव.	परि.				क्षायो.			
								आ. २			मन.								

नं. ३४७ क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	१	४	३	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अप्र.	सं. प.			आहा.	म.	पं.	त्रस.	म. ४		क्रो.	मति.	सामा.	के. द.	भा. ३	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
				विना.				व. ४			श्रुत.	छेदो.	विना.	शुभ.		क्षा.			अना.
								औ. १			अव.	परि.				क्षायो.			
											मन.								

कोधकसाय अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कोधकसाय पढमअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, तीनों

नं. ३४८ क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अपू	१ सं प	६	१०	३ आहा. विना	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	१ क्रो	४ मति श्रुत अव मन	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३४९ क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि	१ सं प	६	१०	२ मै प	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	१ क्रो	४ मति श्रुत अव मन	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कोधकसाय विदियअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं माण-मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिं जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं। णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण मायाकसाया वत्तव्वा। लोभकसायस्स कोधकसाय-भंगो। णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजम, लोभकसाओ च वत्तव्वा।

वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे मानकषायी और मायाकषायी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि कषाय आलाप कहते समय जहां ऊपर क्रोधकषाय कहा है, वहांपर मानकषाय और मायाकषाय कहना चाहिए। लोभकषायके आलाप क्रोधकषायके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि लोभकषायके ओघालाप कहने पर आदिके दश गुणस्थान, संयम आलाप कहते समय यथाख्यातसंयम

नं. ३१० क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. द्वि. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ परि.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१ क्रो.	४ मति श्रुत अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

[१०]अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस चत्तारि दो एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजमा णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो

विना छह संयम और कषाय आलाप कहते समय लोभकषाय कहना चाहिए।

अकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है। दशों प्राण, सयोगिकेवलीके संभवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके संभवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है। चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है। अपगतवेद, अकषाय, पांचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा

१ अ-प्रतौ 'एग १ -६-२-१' इति पाठः।

अकषायी जीवोंके आलाप

नं. ३४१

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ अत. अता. गु.	२ स. प. स. अ. अता. जीव.	६प. ६अ. अता. पर्या.	१० ४ १ अता. प्राण	क्षीणसं.	१ म. सि.	१ पं. अनिं.	१ त्र. अका.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १ अयो.	अपग.	अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मन. केव.	१ यथा. अनु.	४	द. ६ भा. १ शुक्ल. अले.	१ भ. अनु.	२ औ. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त,

चार प्राण तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

नं. ३५३   मति-श्रुत अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	४	२	१	२	द्र. ६	२	२	२	१	२
मि.	पर्या.	५	९					म. ४			कुम.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
सा.		४	८					व. ४			कुश्रु.		अच.		अ.	सा.	असं.		अना.
			७					औ. १											
			६					वै. १											
			४																

जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३५७   मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६ अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

मदि-सुद-अण्णाणि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

मति-श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३५८ मति-श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प.	१०	४	४	१	१	१३	३	४	२	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सासा.	सं.प. सं.अ.	६अ.	७			पं.	त्र.	आ.द्वि. विना			कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. ३५९ मति-श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	२	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सासा.	सं.प.					पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०७ मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

मदि सुदअण्णाण सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, ...
समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, ...
गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो ...
असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, स...
आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमा...
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तस...

मति श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—...
सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्ति...
छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, ...
त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, ...
असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, ...
संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने
पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण,
चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३५८ मति श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३५९ मति श्रुत अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावे छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

विभंगणाणि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

३६१

विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प	६	१	४	४	पं	त्र	१ म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	१ विभं	१ असं	१ चक्षु अच	द ६ भा ६	२ भ अ	२ मि सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

३६२

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
६	१	४	४	१ पं	१ त्रस	१ म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	१ विभं	१ असं	२ चक्षु अच	द ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

विभंगणाणि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[363]।

आभिणिबोहिय सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३६३   विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	१	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सासा.	सं. प.					पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			विभं.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सा.	सं.	आहा.	साका. अना.

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३६४ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति. श्रुत.	७	३ क. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३६५ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षी.	१ सं. प.	६	१	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति. श्रुत.	७	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६७ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१३ आ द्वि. विना	३	४	२ मति श्रुत	१ असं	३ के द विना	द ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ३६८ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१ म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	२ मति श्रुत	१ अस	३ के द विना	द ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि आभिणि-बोहिय-सुदणाणाणि वत्तव्वाणि । एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओहिणाणं एक्कं चेव भाणिदव्वं । णाण-दंसणमग्गणाओ जेण खओवसममस्सिऊण ट्ठिदाओ तेण मदि-सुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु ताहि

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानके आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां पर पूर्वोक्त दो ज्ञानोंके स्थानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए।

शंका—जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोपशमिक दर्शनमार्गणाएं अपने अपने आवरणीय कर्मोंके क्षयोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मति-ज्ञान और श्रुतज्ञान निरुद्ध आलापोंके कहने पर दो, तीन अथवा चार ज्ञान; तथा अवधिज्ञान

नं. ३६९ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	२ मति श्रुत	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

उहि वा णाणेहि होदव्वमिदि सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, ण विवक्खिय-णाण वदिरित्त णाणाणमवणयणं कयं ।

मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ ज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पचिंदिय- ादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि त्थि, मणपज्जवणाण, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ स्साओ, भावेण तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, वेदगसम्मत्त च्छायद उवसमसम्मत्तसम्माइट्ठिस्स पढमसमए वि मणपज्जवणाणुवलंभादो। मिच्छत्त

और मन पर्ययज्ञान निरुद्ध आलापोंके कहने पर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए?

विशेषार्थ— शंकाकारके कहनेका यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान हो सकते हैं, तब विवक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणाके आलाप कहते समय अपने सिवाय दोष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए। अर्थात् छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं, तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधि ज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय—क्रमशः मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए।

समाधान— आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होने पर भी उनकी विवक्षा नहीं की गई है। इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके बिना चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व होते हैं। मनःपर्यय ज्ञानीके औपशमिकसम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो

१ उवसमसम्मत्तादो [illegible] अथ विसोहिया। [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] हवे। क. प्र. २, ३, २४

पच्छायद-उवसमसम्माइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे, मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुव-
समसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायय-
संजमकालस्स बहुत्तुवलंभादो। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागा-

वेदकसम्यक्त्वसे पीछे द्वितीयोपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशमसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मन पर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि जीवमें मन पर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टिके उत्कृष्ट उपशमसम्यक्त्वके कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मन पर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है।

विशेषार्थ—ऊपर मन पर्ययज्ञानीके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं। क्षायिक और क्षायोपशमिकसम्यक्त्वके साथ तो मन पर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मन पर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है। अब रही औपशमिकसम्यग्दर्शनकी बात, सो उसके प्रथमोपशमसम्यक्त्व और द्वितीयोपशमसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं। उनमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है। यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मन पर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है। इसलिये प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें मन पर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मन पर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्व उपशमश्रेणीके अभिमुख हुए संयमीके ही होता है, इसलिये यहांपर अलगसे मन पर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमके उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मन पर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है। अथवा जिस संयमीने पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मन पर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशमश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मन पर्ययज्ञान पाया जा सकता है। ऊपर टीकामें 'पढमसमए वि' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयादिक समयमें वर्द्धमान चारित्र पाया जाता है इसलिये वहां तो मन पर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी उसके इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मन पर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है। इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मन पर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है। परंतु द्वितीयोपशमसम्यक्त्व संयमीके ही होता है, इसलिये उसमें मन पर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है। इसप्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो होते हैं, किन्तु वेदक-

वजुत्ता वा"।

मणपज्जवणाणं पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि मणपज्जवणाणं एक्कं चेव वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजमो वि णत्थि त्ति भाणिदव्वं।

केवलणाणाणं भण्णमाणे अत्थि बे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्तीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसण्णाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदिय पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि

मिकसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए प्रथमोपशमका नहीं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए। तथा संयम आलाप कहते समय परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा समुद्घातगत अपर्याप्तकालमें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय केवलज्ञान यथाख्यात

नं. ३७०   मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ प्रम. से क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१	४	१ मनः.	४ सामा. छेदो. सूक्ष्म. यथा.	३ के. द. विना.	६ द्र. भा. ३ शु.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अत्थि, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

सजोगि अजोगि सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा ।

एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग

नं. ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ सयो. अयो. अतीतगु.	२ पर्या. अप. अतीतजी.	६प. ६अ. अतीतप.	४ २ १ अतीतप्रा.	० क्षीणसं.	१ म. सिद्धग.	१ पं. अतीं.	१ त्र. अका.	७ म. २ व. २ औ. २ कार्म. १ अयो.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा. अनुभय.	१ के.द.	द्र. ६ भा. १ शु. अले.	१ भ. अनुभ.	१ क्षा.	० अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. युग.

सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१३३]।

अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१३४]।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, भय, मैथुन और परिग्रह ये तीन संज्ञाएं होती हैं किन्तु यहां पर आहारसंज्ञा नहीं है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं।

नं. १३३ संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	११	३	४	४	३	३	द्र. ६ भा. ३	१	३	१	१	२
प्र.	सं. प.				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ आहा. २			मति. श्रुत. अव. मनः.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना.	शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. १३४ संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	द्र. ६ भा. ३	१	३	१	१	२
अप्र.	सं. प.			आहा. विना.	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव. मनः.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना.	शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

सामाइयसुद्धिसजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि छेदोवट्ठावण-संजमस्स वि वत्तव्वं ।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिकशुद्धिसंयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए। इसीप्रकार छेदोपस्थापना संयमके भी आलाप जानना चाहिए। किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना संयम ही कहना चाहिए।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये

नं. ३३१ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ प्र. अप्र. अपू. अनि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आ. २	३ अपग.	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ सामा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ ते. प. शु.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहाराहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण मणपज्जवणाण णत्थि, कारण आहारदुग मणपज्जवणाण परिहारसुद्धिसंजमो एदे जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघभंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमा च णत्थि। परिहारसुद्धिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो।

दो गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहांपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं। पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहांपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है; क्योंकि, आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं। ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत परिहारविशुद्धिसंयत और अप्रमत्तसंयत परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर आहारककाययोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंयम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयम इतने आलाप नहीं होते हैं। संयमस्थान पर एक परिहारविशुद्धिसंयम ही होता है। तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए।

---

1 प्रतिषु 'एदाओ' इति पाठः।

नं. २७६ परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ प्र अ	१ सं प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म ४ व ४ औ १	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

[सु]हुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ भंगो ।

[ज]हाक्खादसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, [छ पज्जत्ती]ओ छ अपज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, [पंचिंदियज]ादी, तसकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खाद[सुद्धिसंजम]ो, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; [भवसिद्धि]या, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, [आहारिणो] अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि [जुगवदुवज]ुत्ता वा ।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ भंगो । संजदासंजदाण-

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओघाला[प]ान ही जानना चाहिए।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, [सयोगि]केवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो [जीव]समास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और [एक] प्राण। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन[योग], औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, [अपग]तवेद अकषाय, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, [द्रव्य]से छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, वेदक[सम्य]क्त्वके बिना शेष दो सम्यक्त्व, क्षायिक तथा औपशमिक; संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे [रहि]त स्थान, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और [अन]ाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार

नं. १७७ यथाख्यात शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ उप. क्षी. स. अ.	२ सं.प. सं.अप.	६प. ६अ.	१० ४ २ १	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म.४ व.४ औ.२ का.१	० अपगतवेद	० अकषाय	५ मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	१ यथा.	४	द्र.६ भा.१ शु. अले.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु.उ.

मोघ-भंगो ।

असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

असंयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

नं. ३७८ असंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सा. स. अ.	१४	६प ६अ ५प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान ३	१ अस.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चउरिंदियजादि आदी बे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ३८१ चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	६ च. प. च. अ. असं. प. असं. अ. सं. प. सं. अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	४	२ च. पं.	१ त्र.	१५	३	४	७ (कुम. कुश्रु. विभं. म. श्रु. अव. मनः.)	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

वजुत्ता वा[३८२] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८३] ।

असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान; चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८२　　　　चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	३ च. प. असं. प. सं. प.	६ ५	१० ९ ८	४ क्षीणसं.	४	२ च. पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३८३　　　　चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अ. प्र.	३ च. अ. असं. अ. सं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७ ६	४	४	२ च. पं.	१ त्रस.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. म. श्रु. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	१ चक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

चक्खुदंसण-मग्गणम्मि सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति मूलोघ-भंगो, णवरि चक्खुदंसण त्ति भाणिदव्वं ।

अचक्खुदंसणाणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

---

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि दर्शन आलापमें 'चक्षुदर्शन' ऐसा कहना चाहिए ।

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण चार प्राण तीन प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

नं. ३८७   अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षीण.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५ ६ ४ ४ ३	४ क्षीणसं.	४	५	६	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ अच.	द्र. ६ भा. ६	२	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण

नं. ३८८ अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२	७	६	१०	४	४	५	६	११	३	४	७	७	१	द्र. ६	२	६	२	१	२
मि.	पर्या.	५	९	क्षीणसं.				म. ४	अपग.	अकषा.			अच.	भा. ६				आहा.	
से		४	८					व. ४											
क्षी.			७					औ. १											
			६					वै. १											
			४					आ. १											

पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहि छ

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान,

१ प्रतिषु 'चत्तारि गदीओ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ३८९   अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	७	६ अ.		४	४	५	६	४	३	४	५ कुम.	३	१	द्र. २	२	५	२	२	२
मि.	अ.	अ.						औ. मि.			कुश्रु.	असं.	अच.	का.	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका.
सा.		४ अ.	६					वै. मि.			मति.	सामा.		शु.	अ.	विना.	असं.	अना.	अना.
अवि.								आ. मि.			श्रुत.	छेदो.		भा. ६					
प्रम.			४ ३					कार्म.			अव.								

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

[2]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं. ३९०　　अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१० ७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	१ अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३९१　　अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	१ अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि अचक्खुदंसणं त्ति भाणिदव्वं।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अचक्षुदर्शन ही कहना चाहिए।

नं. ३९२   अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६अ	७	४	४	५	६	३	३	४	२	१	१	द्र. २	२	१	२	२	२
मि.	अप.	५	७					औ.मि.			कुम.	असं.	अच.	का.	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		४	६					वै.मि.			कुश्रु.			शु.	अ.		असं.	अना.	अना.
			५					कार्म.						भा. ६					
			४																
			३																

ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ३१३　　　　अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	२	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१	१	१५	३	४	४	७	१	द्र. ६ भा. ६	१	३	१	२	२
[illegible]	[illegible]			[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]

अणागारुवजुत्ता वा[^1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[^2]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०४ अवधिज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचें.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपगतवे.	४ अकषा.	३ मति. श्रुत. अव.	७	३ अव. [illegible]	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३०५ अवधिज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. का.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ [illegible]	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव ओहिणाण भगो। णवरि ओहिदसण त्ति भाणिदव्व।

केवलदसणस्स केवलणाण भगो।

एव दसणमग्गणा समत्ता।

लेस्साणुवादेण ओघालावो मूलोघ भगो। णवरि अजोगिगुणट्ठाणेण विणा तेरह गुणट्ठाणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिण सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदव्वा।

[1] किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ,

अवधिदर्शनी जीवोंके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थान पर अवधिदर्शन कहना चाहिए।

केवलदर्शनके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके विना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगिकेवलीजिन और सिद्धभगवान्की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं, वे नहीं कहना चाहिए।

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया; पाच पर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया; चार पर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पाच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों सज्ञाए,

न ३९६ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	१४	६प	१०,७	४	४	५	६	१३	३	४	६	१	३	द्र ६	२	६	२	२	१
मि		६अ	९,७					आ द्वि			अज्ञा	अस	के द	भा १	भ		स	आहा	साका
सा		५प	८,६					विना			३		विना	कृष्ण	अ		अस	अना	अना
स		५अ	७ ५								ज्ञान								
अ		४प	६,४								३								
		४अ	४,३																

चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[1] तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि; देवाणं पज्जत्त-काले असुह-ति-लेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां, यहांपर देवगति नहीं है, क्योंकि देवोंके पर्याप्तकालमें अशुभ तीन लेश्याओंका अभाव है। पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों

नं. १९७ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	७	६	१०	४	३	५	६	१०	३	४	६	१	३	द्र. ६ भा. १	२	६	२	१	२
मि.	पर्या.	५	९		न.			म. ४			[illegible]	असं.	[illegible]	कृ.		[illegible]		[illegible]	[illegible]
सा.		४	८		ति.			व. ४			[illegible]		[illegible]			[illegible]			[illegible]
स.			७		म.			औ. १			[illegible]								
अ.			६					वै. १			[illegible]								
			४																

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमा छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादि छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि द दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, ति सम्मत्त मिच्छत्त सासणसम्मत्त वेदगसम्मत्त च भवदि, छट्ठीदो पुढवीदो किण्हले सम्माइट्ठिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि। सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और वेदकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि छठी पृथिवीसे जो कृष्णलेश्यावाले अविरतसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्वके साथ कृष्णलेश्या पाई जाती है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २९८ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३	७	६अ.	७	४	४	५	६	३	३	४	५	१	३	द्र. २	२	३	२	२	२
मि.	अप.	५अ.	७					औ.मि.			कुम.	असं.	के.द.	का.	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
सा.		४अ.	६					वै.मि.			कुश्रु.		विना.	शु.	अ.	सा.	असं.	अना.	अना.
अवि.			५					का.			मति.			भा. १		क्षायो.			
			४								श्रुत.			कृ.					
			३								अव.								

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णले भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोप होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, रिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृ लेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोप और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४०३   कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				न. म. ति.	पंचे.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	भा. १ कृष्ण.	भ.	सा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ४०४   कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६अ.	७	४	३	१	१	३	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.				ति. म. दे.	पं.	त्र.	औ. मि. वै. मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	अ.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. १ कृष्ण.	भ.	सा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

किण्हलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

किण्हलेस्सा असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण

कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ४० कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणा, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४०६   कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	१०	४	३	१	१	१२	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	२	२
अ.	सं. प.	६अ	७		न.	पं.	त्र.	म. ४			मति	असं.	के. द.	भा. १	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.				ति.			व. ४			श्रुत		विना	कृष्ण		क्षा.		अना.	अना.
					म.			औ. २			अव.					क्षायो.			
								वै. १											
								का. १											

नं. ४०७   कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं. प.				न.	पं.	त्र.	म. ४			मति	असं.	के. द.	भा. १	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
					ति.			व. ४			श्रुत		विना	कृष्ण		क्षा.			अना.
					म.			औ. १			अव.					क्षायो.			
								वै. १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

णीललेस्साए भण्णमाणे ओघादेसालावा किण्हलेस्सा-भंगा। णवरि सव्वत्थ णीललेस्सा वत्तव्वा।

काउलेस्साए भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिक, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नीललेश्याके आलाप कहने पर—ओघ और आदेश आलाप कृष्णलेश्याके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि लेश्या आलाप कहते समय सर्वत्र नीललेश्या कहना चाहिए।

कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं,

नं. ४०८ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व,

नं. ४०९　　　　कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	१४	६प.	१० ७	४	३	५	६	१३	३	४	६	१	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
मि.		६अ.	९ ७					आ. द्वि.			३ अज्ञा.	असं.	के. द.	भा. १					साका.
सा.		५प.	८ ६					विना			३		विना	का.					अना.
सम्य.		५अ.	७ ५								ज्ञान.								
अवि.		४प.	६ ४																
		४अ.	४ ३																

काउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण [illegible] पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण [illegible]

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, [illegible]

नं. ४१८　　कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२

छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके

नं. ४१३　　कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	२ ९ ८ ७ ६ ४	४	२ न ति म	५	६	१ म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कापो	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४१४　　कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अ	६ अ ५ अ ४ अ	६				६	३ औमि वैमि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ कापो	२ भ अ	१ मि	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका अना

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

काउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनो-

नं. ४१९ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	सं.	आ.	उ.
१	२	६प.	१०	४	४	१	१	१३	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सासा.	सं.प.	६अ.	७			पं.	त्र.	आ.द्वि.			अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. १	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.							विना.					अच.	का.				अना.	अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

काउलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

काउलेस्सा असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदि

नं. ४७४ कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

[illegible]

पाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४१९ कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ सप सअ	६ प ६ अ	[illegible]	[illegible]	३ न. म.	[illegible]	[illegible]	१२ औ. मि. विना	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १ का.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ स.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४२० कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सं. प.	६	[illegible]	४	३ न. ति. म.	[illegible]	[illegible]	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १ का.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ स.	१ आहा.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

[२] तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णउंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, पढ

गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात संयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान,

नं. ४२३ तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ मि. से अप्र.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	७ केव. विना	५ अस. दश. सामा. छेदो. परि.	३ क. द. विना	द्र. ६ भा. १ ते.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४२४ तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. स्त्री.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ अस. सामा. छेदो.	३ क. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. १ ते.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पाणं, तिण्णि संजम[1], तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[41] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-

असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक

1 प्रतिषु 'असंजमो' इति पाठः ।

नं. ४२ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प.		४	४		१	११	३	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि.	सं. प.	६अ.	७		ति.	पं.	त्र.	म. ४			अज्ञा.	अस.	चक्षु.	भा. १	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.				म.			व. ४					अच.	ते.	अ.			अना.	अना.
					दे.			औ. १											
								वै. २											
								का. १											

त्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, णिरयगदी णत्थि, पंचिंदियजादि, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां हैं, किन्तु नरकगति नहीं है । पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये

नं. ४२६ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञान	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४२७ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ पु स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ ते	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

जोग, दो वेद, णउंसयवेदो णत्थि, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज

दो योग, पुरुष और स्त्री ये दो वेद होते हैं, किन्तु नपुंसकवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने

तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

[illegible]
[illegible]

जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा ।

ये दो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारो-पयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरक गतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

नं. ४३१ तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र. ६ भा. १	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.				ति. म. दे.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			३ ज्ञान अज्ञा. मिश्र.	असं.	चक्षु. अच.	ते.	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

तेउलेस्सा असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ४३२ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	१०	४	३	१	१	१३	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	२	२
अ.	सं.प. सं.अ.	६अ	७		ति. म. दे.	पं.	त्र.	आ.द्वि. विना			मति श्रुत अव.	असं.	के.द. विना	भा. १ ते.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तम्मि चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

तेउलेस्सा संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक

नं. ४३३ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४३४ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ ते.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

[१] तेउलेस्सा पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि

संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये

नं. ४३५ तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६ भा. १	१	३	१	१	२
देश.	सं. प.				ति. म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना.	ते.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ४३६ तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१	१	१	११	३	४	४	३	३	द्र. ६ भा. १	१	३	१	१	२
प्रम.	सं. प. सं. अ.				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ आ. २			मति. श्रुत. अव. मन.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना.	ते.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवस छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारि सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

पम्मलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ,

तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, आदिके तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों

नं. ४३७   तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	द्र. ६ भा. १	१	३	१	१	२
[illegible]	सं. प.			आहा. विना	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव. मनः.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना	ते.	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

पम्मलेस्सा मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग,

नं. ४४० पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	१	६अ	७	४	२	१	१	४	१	४	५	३	३	द्र. २ भा. १	२	५	१	२	२
मि. सा. अवि. प्रम.	सं. अ.				दे. म.	पं.	त्र.	औ.मि. वै.मि. आ.मि. का.	पु.		कुम. कुश्रु. मति श्रुत अव.	असं. सामा. छेदो.	के.द. विना.	का. शु. भा. प.	भ. अ.	मि. सा. क्षा. क्षायो. उप.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्क लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

"पम्मलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि,

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक

नं. ४४६

पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वैमि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ प.	१ भ.	१ सास.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४४७

पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ४४९ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

[illegible]
[illegible]

नं. ४५० पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

[illegible]
[illegible]

पम्मलेस्सा संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, उत्तं च पिंडियाए[1]—

> लेस्सा य दव्व भाव कम्म णोकम्ममिस्सयं दव्वं ।
> जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २२८ ॥

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

पम्मलेस्सा पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या होती है। पिंडिका नामक ग्रन्थमें कहा भी है —

लेश्या दो प्रकारकी है, द्रव्यलेश्या और भावलेश्या । नोकर्मवर्गणाओंसे मिश्रित कर्मवर्गणाओंको द्रव्यलेश्या कहते हैं। तथा जीवका कषाय और योगके निमित्तसे होनेवाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भावलेश्या कहलाती है ॥ २२८ ॥

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण,

---

१ आ प्रतौ ' पिंडियाए ' इति पाठः ।

नं. ४५१ पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
देश.	सं. प.				ति. म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना.	भा. १ प.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

"पम्मलेस्सा अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा-

नं. ४१२

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आ. २	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ पद्म.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४१३

पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ पद्म.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहा सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुक्कलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि अजोगि विणा तेरह गुणट्ठाणाणि, दो जीवस छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, च सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, प जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धि अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहा अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जु वजुत्ता वा।

रिकक्काययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्था और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भा पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोप और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अयोगिकेवली गुणस्थानके वि आदिके तेरह गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण तथा सयोगिकेवलीकी अपेक्षा चार प्राण और दो प्रा चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पं न्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चा कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छ लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक अ संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ४१३ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७ ४ २	४ क्षीणसं.	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१५	३ अपग.	४ अक.	८	७	४	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. युग.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद अवगदवेदो वि अत्थि,

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी होता है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तविरत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, पुरुषवेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा

शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1]।

[1] सुक्कलेस्सा मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद,

---

अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद,

नं. ४६ शुक्लेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. सयो. [illegible]	१ सं.अ.	६ अ.	७ २	४ क्षीणसं.	३ ति. म. देव	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	१ पुरुषवे.	४ अकषा.	६ विभं. मनः. विना	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. १ शु.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ [illegible]

नं. ४७ शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ,

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

नं. ४९८ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	३ न.वि.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सुक्कलेस्सा सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । कारणं, दव्वमिच्छाइट्ठि सासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं असुणिय-परमत्थाणं तिव्वलोहाणं संकिलेसेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील काउलेस्साणं एगदमा भवदि । सम्माइट्ठीणं पुण मणुस्सेसु चेव उप्पज्जमाणाणं मंदलोहाणं समुणिदपरमत्थाणं अरहंतभयवंतम्हि छिण्णं जाइ-जरा मरणम्हि दिण्णबुद्धीणं[1] तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ चिरंत

शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग होते हैं; किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है । इसका कारण यह है कि, तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले, परमार्थके अजानकार और तीव्र लोभकषायवाले ऐसे मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके मरते समय संक्लेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं नष्ट होकर कृष्ण, नील और कापोत लेश्याओंमेंसे यथासंभव कोई एक लेश्या हो जाती है। किन्तु जो मनुष्योंमें ही उत्पन्न होनेवाले हैं, मंद लोभकषायवाले हैं, परमार्थके जानकार हैं, और जिन्होंने जन्म, जरा और मरणके नष्ट करनेवाले अरहंत भगवन्तमें अपनी बुद्धिको लगाया है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके चिरंतन (पुरानी) तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं मरण करनेके

[1] प्रतिषु ' छिण्णबुद्धीण ' इति पाठः

नं. ४९९　　शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	३ देव	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णाओ जाव अंतोमुहुत्तं ताव ण णस्सदि। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ

अनन्तर अन्तर्मुहूर्त तक नष्ट नहीं होती है, इसलिए शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या,

नं. ४६० शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४६१ शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

सुक्कलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असजमो, दो दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया,

---

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भाव

नं. ६९९   शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६अ.	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं.अ.				दे.	पं.	त्र.	वै.मि. कार्म.	पु.		कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. १ शु.	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

सुक्कलेस्सा असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४६३　　शुक्लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४६४　　शुक्लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा' ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त,

---

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

---

नं. ४६१ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं.प.				ति.	पं.	त्र.	म. ४			मति.	असं.	के.द.	भा. १	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
					म.			व. ४			श्रुत.		विना.	शु.		क्षा.			अना.
					दे.			औ. १			अव.					क्षायो.			
								वै. १											

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सुक्कलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सुक्कलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुण-

नं. ४६६ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	२	१	१	३	१	४	३	१	३	द्र. १ भा. १	१	३	१	२	२
अवि.	सं.अ.	अ.			दे. म.	पं.	त्र.	औ.मि. वै.मि. कार्म.	पु.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के.द. विना.	का. शु.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. ४६७ शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	२	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६ भा. १	१	३	१	१	२
देश.	सं.प.				ति. म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के.द. विना.	शु.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसग
दियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण
संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया,
सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"सुक्कलेस्सा अपमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव
छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसका

स्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपय
दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों म
चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये
योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और प
विशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या
सिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी
अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत
स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके
शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन

नं. ४६८ शुक्लेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ शु	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	[illegible]

नं. ४६९ शुक्लेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र	१ सं प	६	१०	३ भय मै परि	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ शु	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो, तेसु सुक्कलेस्सा-वदिरित्तण्णलेस्साभावादो। अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चेव।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो। णवरि भवसिद्धिया त्ति वत्तव्वं।

अभवसिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

और औदारिकमिश्रकाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान ही होते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव है।

लेश्यारहित अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापोंके ही समान होते हैं।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहने पर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[842]।

णेव भवसिद्धिय-णेव अभवसिद्धियाणमोघ-भंगो।

एवं भवियमग्गणा समत्ता।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि, बे जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां छहों काय, आहारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाय योग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीत गुणस्थान भी है, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास

नं. ४७२   अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा "।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना चौदह योग अथवा तीनों मिश्र योग और कार्मणकाययोगके विना शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुद्घात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुद्घात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसप्रकार सयोगकेवलीके दो मार्गोंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिए।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय

नं. ४५४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प.	प्रा	सं	ग	इं	का.	यो	वे	क.	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
११ अवि. से अयो.	१ सं. प.	६	१० ४ २ १	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्र.	१४ ४ वि. विना अथवा ११म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	५	७	४	द्र. ६ भा. ६ अलेश्य.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तदा यु. उ.

अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ सिद्धगई वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा"।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ४३६ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
११ अवि. से अयो. व अतीतगु.	२ सं.प. सं.अ. अतीतजी.	६प ६अ अतीप.	१० ७ ४ २ १ अतीप्रा.	४ क्षीणसं.	४ सिद्धग.	१ पं. अनिं.	१ त्र. अकाय.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	७ अनु.	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	१ भ. अनु.	१ क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

जमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[480]।

आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८० क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

[illegible]
[illegible]

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

[illegible]
[illegible]

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

खइयसम्माइट्ठीणं पमत्तसंजदप्पहुडि सिद्धपज्जंताणं मूलोघ-भंगो। णवरि सम्मत्तं खइयसम्मत्तं चेव वत्तव्वं।

[२] वेदगसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं,

---

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवों तकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र एक क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम, आदिके

नं. ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	१	१	१	२
दे.	सं. प.				म. ति.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव.	देश.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ४८३ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	२	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१	१	१५	३	४	४	५	३	द्र. ६	१	१	१	२	२
अवि. से अप्र. तक.	सं. प. सं. अ.					पं.	त्र.				म. श्रु. अव. मनः.	अस. दे. सा. छे. परि.	के. द. विना.	भा. ६	भ.	क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, देवगदि-मणुसगदी। कद-करणिज्जं वेदगसम्माइट्ठिं पडुच्च णिरय तिरिक्खगईओ लब्भंति। पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

ज्ञान दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान असंयम देशसंयम सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां होती हैं क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु कृतकृत्य वेदकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे नरकगति और तिर्यचगति भी पाई जाती है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार

नं. ४८४ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	दं.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ अवि. से अप्र.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८५ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	३ अस. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४८६ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुष और नपुंसक ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान

नं. ४८७   वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४८८   वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औमि वैमि कार्म	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द २ का शु भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइट्ठि संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

वेदगसम्माइट्ठि पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण,

अज्ञान, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग

नं. [illegible] वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप

[illegible]
[illegible]

णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, गसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

वेदगसम्माइट्ठि अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव मासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, व जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, व्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं ४९१ वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र	१ सं प	६	१	३ भय मै परि	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"¹।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"²।

उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कपोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४९३ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
८ अवि. से उप.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षी. सं.	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३ अप.	४ उप.	४ मति. श्रुत. अव. मन.	६ परि. विना.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४९४ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

उवसमसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९५]।

[४९६]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस

उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, आदारिक

नं. ४९५ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	१०	४	४	१	१	१२	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	१	१	२	२
अवि.	सं.प.	६अ	७			पं.	त्र.	म. ४			मति.	असं.	के.द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.							व. ४			श्रुत.		विना.					अना.	अना.
								औ. १			अव.								
								वै. २											
								का. १											

नं. ४९६ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	१	१	१	२
अवि.	सं.प.					पं.	त्र.	म. ४			मति.	असं.	के.द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
								व. ४			श्रुत.		विना.						अना.
								औ. १			अव.								
								वै. १											

अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्क लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

उवसमसम्माइट्ठि संजदासंजदाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद चारों कषाय आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे तेज पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास छहों पर्याप्तियां दशों प्राण चारों संज्ञाएं तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय चारों मनोयोग चारों वचनयोग और

नं. ४९७ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र. २	१	१	१	२	२
अवि.	[illegible]	अ.			दे.	पं.	त्र.	वैमि. कार्म.	पु.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. वि.	का. शु. भा. ३ ते. प. शु.	भ.	औप.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१८]।

उवसमसम्माइट्ठि पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जवणाणेण सह उवसमसेढीदो ओयरिय पमत्तगुणं पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणं लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदस्स, तदुप्पत्ति संभवाभावादो । दो संजम, परिहारसंजमो णत्थि । कारणं, ण ताव मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि संजदा

औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टिके मनःपर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मनःपर्ययज्ञानके साथ उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवके मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतके मनःपर्ययज्ञानका उत्पत्ति संभव नहीं है। ज्ञान आलापके आगे सामायिक, और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं। किन्तु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीव तो परिहारविशुद्धिसंयमको प्राप्त होते नहीं हैं; क्योंकि, सम्यक्त्वको

नं. ५१८ उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

परिहारसंजमं पडिवज्जंति; अट्ठ उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे तदुप्पत्तिणिमित्तगुणाणं संभवा भावादो। णो उवसमसेढिं चढमाणा; तत्थ पुव्वमेवमतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिद-विहारादो। ण तत्तो ओदिण्णाण वि तस्स संभवो; चढंते उवसमसम्मत्तेण विहारस्सा-संभवादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तस-काओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम, तीर्थंकर-पादमूल वसति, प्रत्याख्यानपूर्व महार्णवपठन आदि गुणोंके होनेका संभवनाका अभाव है। और न उपशमश्रेणीपर चढ़नेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धि संयमका संभावना है, क्योंकि, उपशमश्रेणीपर चढ़नेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमी अपने गमनागमनादि विहारको उपसंहरित अर्थात् संकुचित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है, क्योंकि, श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमीका विहार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

नं. ४२९   उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	२	३	द ६	१	१	१	१	२
अप्र.	सं.प.				म.	पं.	त्र.	म. ४			मति.	सामा.	के.द.	भा. ३	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
								व. ४			श्रुत.	छेदो.	विना.	शुभ.					अना.
								औ. १			अव.								
											मन.								

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति ताव ओघ भंगो। णवरि सव्वत्थ उवसमसम्मत्तं भाणियव्वं।

मिच्छत्त सासणसम्मत्त सम्मामिच्छत्ताणं ओघ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि भंगो।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

पाधण्णपदे अवलंबिज्जमाणे सव्वाणुवादाणं मूलोघ भंगो होदि; तत्थ सव्वविधिप्प संभवादो। गुणणामे अवलंबिज्जमाणे ण होदि। पाधण्णपदे अणवलंबिज्जमाणे असंजमादीणं कधं गहणं? ण; वदिरेगमुहेण संजमादि परूवणट्ठं तप्परूवणादो। तेण दोण्णि वि वक्खाणाणि अविरुद्धाणि। एसत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र उपशमसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके आलाप क्रमशः मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके आलापोंके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

प्राधान्य पदके अवलंबन करनेपर सभी अनुयोगोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं, क्योंकि, मूल ओघालापमें विधि प्रतिषेधरूप सभी विकल्प संभव हैं। किन्तु गौणनाम पदके अवलंबन करनेपर सभी विकल्प संभव नहीं हैं, क्योंकि इस नामपदकी दृष्टिसे गुण नामोंके भंगोंके ही आलाप कहे जायेंगे दूसरोंके नहीं।

शंका — तो फिर प्राधान्यपदके अवलंबन नहीं करनेपर संयमादिके प्रतिपक्षी असंयमादिका ग्रहण कैसे किया जा सकता है?

समाधान — नहीं, क्योंकि, व्यतिरेकद्वारसे संयमादि विकल्पोंकी प्ररूपणाके लिए ही असंयमादि विपक्षी विकल्पोंकी प्ररूपणा की जाती है, तभी विवक्षित मार्गणाद्वारा समस्त जीवोंका मार्गण हो सकता है अन्यथा नहीं। इसलिए संयमादि अन्वयरूप और असंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यान अविरुद्ध हैं। यही अर्थ सभी मार्गणाओंके विषयमें कहना चाहिए।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

[१] तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ

त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं ५०१ संज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ मि स क्षी	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पं	१ त्र	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव विना	७	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं ५०२ संज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१२ मि स क्षी	१ सं प	६	१	४ क्षीणसं.	४	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव विना	७	३ क द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सण्णि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत, और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग

नं. ५०३　　　　संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	१	६अ	७	४	४	१	१	४	३	४	५	३	३	द्र. २ भा. ६	२	५	१	२	२
मि. सासा. अवि. प्रम.	सं. अ.					पं.	त्र.	औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.			कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	असं. सामा. छेदो.	के.द. विना.	का. शु.	भ. अ.	सम्य. विना.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[?]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[?]।

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०४ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५०५ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ स	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वे काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

(सण्णि) सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्या दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कपोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग

१ प्रतिषु नास्य कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्तीति शेयम्।

नं. ५०६

संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५०७

संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१ ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा.	१ सं	२ आहा अना	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान,

---

नं. ५०८   संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.					पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १			अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

(सण्णि-)सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०९ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ५१० संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

(सण्णि-) असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

—

संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक

नं. ५११ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६ प.	१०	४	४	१	१	१३	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं. प.	६ अ.	७			पं.	त्र.	आ. द्वि.			आदि	असं.	के. द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.							विना			के तीन		विना			क्षा.		अना.	अना.
																क्षायो.			

नं. ५१२ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं. प.					पं.	त्र.	म. ४			मति.	असं.	के. द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
								व. ४			श्रुत.		विना			क्षा.			अना.
								औ. १			अव.					क्षायो.			
								वै. १											

दव्व जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके संज्ञी जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापोंके समान होते हैं।

नं. ५१३   संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४		१		३	२	४	३	१	३	द्र. २ भा. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अ.				पं.	त्र.	औ. मि. वै. मि. कार्म.	पु. न.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

णेव सण्णि-णेव-असण्णीणं सजोगि अजोगि सिद्धाणं ओघ-भंगो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[1]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, चोद्दस जोग कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1] ।

सञ्ज्ञिक और असञ्ज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित सयोगिकेवली, अयोगिकेवली और सिद्ध भगवान्‌के आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं।

इसप्रकार संज्ञी मार्गणा समाप्त हुई।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; सयोगिकेवलीके चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चौदह योग होते हैं, क्योंकि, यहांपर कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

[1] प्रतिषु [illegible] नास्ति ।

नं. ५१७ आहारक जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३	१४	६प.	१० ७	४	४	५	६	१४	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	१	२
मि.		६अ.	९ ७	क्षीणसं.				का.यो. विना	अपगत.	अकषा.				भा. ६			अनु.	आहा.	साका.
से		५प.	८ ६																अना.
सयो.		५अ.	७ ५																युग.
		४प.	६ ४																
		४अ.	४, २																

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा (सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा '')।

आहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[1]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, बारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि

है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्र काययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं, किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों

१ कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति।

नं. ५१९　　　　आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अवि. प्रम. सयो.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणसं.	४	५	६	३ औ. मि. वै. मि. आ. मि.	३ अप.	४ अक.	६ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. १ का. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. अस. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२०

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५ ६ ४ ४ ३	४	४	५	६	११ म ४ व ४ औ २ वै १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२	१ मि.	२	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५२१

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२	१ मि.	२	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमास अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो अ ण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

"आहारि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण चार प्राण, तीन प्राण; चा संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययो ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, अ ज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासाद गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्या प्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चा

नं. ४२८ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६ अ	७	४	४	५	६	२	३	४	२	१	२	द्र. २	२	१	२	१	२
मि.	अप.	५ अ,	७					औ. मि.			कुम.	असं.	चक्षु.	का.	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		४ अ,	६					वै. मि.			कुश्रु.		अच.	शु.	अ.		असं.		अना.
			५											भा. ६					
			४, ३																

नं. ४२९ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६ प	१०	४	४	१	१	११	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.	६ अ	७			पं.	त्र.	म. ४			अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.							व. ४					अच.						अना.
								औ. २											
								वै. २											

आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण,

नं. ५२७ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ २ वै २	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ५२८ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारि सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न. ५२५　आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	२ औ मि वै मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

न. ५२६　आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण,

नं. ५२७ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. २ वै. २	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५२८ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

आहारि संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, औपशमिक सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्य

नं. ५२९ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	४	१	१	२	२	४	३	१	३	द्र. १	१	३	१	१	२
अवि.	सं. अ.	अ.				पं.	त्र.	औ. मि. वै. मि.	पु. न.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. भा. ६	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एत्थ पज्जत्तापज्जत्ता आलावा वत्तव्वा । एवं सण्णिस्स ।

आहारि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

आहारि-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस आहारक प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप भी कहना चाहिये। इसीप्रकार जहां पर संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास होवें वहां भी सामान्य आलापके अतिरिक्त दोनों प्रकारके आलाप और कहना चाहिए।

आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुण-

---

नं. ५३२　　आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
अप्र.	सं. प.			आहा. विना	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १			मति. श्रुत. अव. मन.	सामा. छेदो. परि.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सेस-चदुण्हमणियट्टीण ओघ भंगो ।

आहारि-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोहकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

आहारि-उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ण-

---

सिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके शेष चार भागोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके चार ज्ञान, सूक्ष्म साम्परायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग

नं. ५३१ आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	१	१	१	१	९	०	१	४	१	३	द्र. ६ भा. १	१	२	१	१	२
सूक्ष्म.	सं. प.			सूक्ष्म परि.	म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १	अपग.	सूक्ष्म लो.	मति. श्रुत. अव. मनः.	सूक्ष्म.	के. द. विना	शु.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिय
सम्मत्त, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जी
छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजा
काओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णि
असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,
सम्मत्त, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमा
छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाण, मण वचि उस्सासपाणा णत्थि, खीणसण्णा, मणुसग
पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणा

ार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन
व्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक,
ाकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों
गतियां पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, स्त्रीवेदके विना दो वेद चारों कषाय,
आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं,
भव्यसिद्धिक औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक अनाहारक साकारोपयोगी
और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान
क अपर्याप्त जीवसमास छहों अपर्याप्तियां आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं।
ार मनोबल वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा मनुष्यगति पंचे
ाति, त्रसकाय कार्मणकाययोग अपगतवेद अकषाय केवलज्ञान यथाख्यातविहारशुद्धि

नं. ५८

अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६अ	७	४	४	१	१	१	२	४	३	१	३	[illegible]	१	३	१	१	२
अवि.	[illegible]					पं.	त्र.	कार्म.	[illegible]		[illegible]	अ.	[illegible]	[illegible]	भ.	[illegible]	सं.	अना.	[illegible]

परिशिष्ट

(यहां उन्हीं शब्दोंका संग्रह किया गया है जिनकी निर्दिष्ट पृष्ठपर परिभाषा पाई जाती है ।)

१ पारिभाषिक शब्द-सूची

शब्द	पृष्ठ
अ	
अवपाय	३११
अघातिक	२६६,२७७
अग्रायणीय	११५
अचक्षुर्दर्शन	३८२
अचित्तमगल	२८
अज्ञान	३६३,३६४
अतीतपर्याप्ति	४१७
अतातमाप	४१९
अन्तदृष्टा	१०२
अन्तरात्मा	१२०
अर्थनय	८६
अर्थावग्रह	३५४
अधिराज	५७
अध्रुवावग्रह	३५७
अर्धमण्डलीक	५७
अनाहार	१ ३
अनादिसिद्धान्तपद	७६
अनिन्द्रिय	२६४
अनिवृत्ति	१८४
अनिवृत्तिबादरसाम्पराय	१८४
अनुत्तरौपपादिकदशा	१०३
अपगतवेद	३४२
अपर्याप्त	२६७ ४४४
अपर्याप्ति	२५६ २१७
...पकरण	१८०,१८१ १८४
...ायिक	२७३
...ातिघाक	११७
...त्तसयत	१७८
...चार	३३९
...लाप	११७
	३९४
...यान	११६
	१९२

शब्द	पृष्ठ
अयोगकेवली	१९२
अयोगी	२८०
अरतिवाक	११७
अरिहत	४२,४३
अर्हत्	४४
अलेश्य	३९०
अल्पबहुत्व (अनुयोग)	१५८
अवग्रह	३५४,३७९
अवधि	३५९
अवधिज्ञान	९३ ३१८
अवधिदर्शन	३८२
अवयवपद	७७
अवाय	३१४
असत्यमन	२८१
असत्यमोषमनोयोग	२८१
असद्भावस्थापना	२०
असयत	३७३
असयतसम्यग्दृष्टि	१७१
अस्तिनास्तिप्रवाद	११५
आ	
आकाशगता	११३
आक्षेपणी	१०५
आगमद्रव्यमगल	४१
आचाराग	९९
आचार्य	४८ ४९
आत्मप्रवाद	११८
आत्मा	१४८
आदानपद	७१
आनाप नपर्याप्ति	२११
आभिनिबोधिकज्ञान	९३ ३१९
आभ्यन्तर निर्वृत्ति	२३२
आहार	११२ २९२
आहारक	२९४
आहारककाययोग	२९२

आहारपर्याप्ति २ ४
आहारमिश्रकाययोग २०३,२०४
आहारसंज्ञा ४१४

इ

इन्द्रिय १३६,१३७,२३२,२६०
इन्द्रियपर्याप्ति २ ०
इषुगति २९९
इंगिनीमरण २४

ई

ईहा २ ४

उ

उत्तावग्रह ३०७
उत्तराध्ययन ९७
उत्पादपूर्व ११४
उत्पादानुच्छेद [परिशिष्ट भा १] २८
उदीरणोदय [परिशिष्ट भा २] १६
उपकरण २३६
उपक्रम ७२
उपधिवाक् ११७
उपयोग २३६,४१३
उपशम २११
उपशमसम्यग्दर्शन ३९१
उपशमसम्यग्दृष्टि १७१
उपशान्तकषाय १८८,१८९
उपाध्याय ५०
उपासकाध्ययन १०२

ए

एकेन्द्रिय २४८,२६४
एवंभूत ९०

औ

औदयिक १६१
औदारिककाययोग २८९,३१६
औदारिकमिश्रकाययोग २९०,३१६
औपशमिक १६१,१७२

क

कर्ता ११९
कर्मप्रवाद १२१
कर्ममंगल ३१
कल्प्यव्यवहार ९८
कल्प्याकल्प्य ९८
कल्याणनामधेय १२१
कषाय १४१
कापोतलेश्या ३८९
काय १३८,३०८
काययोग २७९,३०८
कार्मण २९१
कार्मणकाय २००
कार्मणकाययोग २९७
कालमंगल ३०
कालानुयोग १५८
क्रिया १८
क्रियाविशाल १२२
कृतिकर्म ९७
कृष्णलेश्या ३८८
केवलज्ञान ९५,१९१,३५८,३६०,३८५
केवलदर्शन ३८२
क्रोध ३५०
क्रोधकषाय ३४९
क्षपण २१८
क्षायिक १६१,१७२
क्षायिकसम्यक्त्व ३९५
क्षायिकसम्यग्दृष्टि १७१
क्षायोपशमिक १६१,१७२
क्षीणकषाय १८९
क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ १९०
क्षीणसंज्ञा ४१९
क्षेत्रमंगल २८
क्षेत्रज्ञ १२०
क्षेत्रानुयोग १५८

ग

गुण १७४
गुणनाम १८
गोमूत्रिकागति ३००
गौण्यपद ७४

घ

घ्राणनिर्वृत्ति २३१

मिथ्यादर्शनवाद ११७
मिथ्यादृष्टि १६२,२६२ २७४
मिश्रमंगल २८
मैथुनसंज्ञा ४१५
मोषमनोयोग २८०,२८१
मंग ३३
मंगल ३२,३३,३४
मन्त्रवाद ७

य

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत ३७१
यथाख्यातसंयत ३७३
यथातथानुपूर्वी ७३
याग १४०,२९९
यापि २०

र

रैवाक ११७
...जमानिवृत्ति २३५
राजा ५७
रूपगता ११३
रूपमदीचार ३३९
रूपसत्य ११७

ल

लब्धि २३६
लांगलिका २००
लेश्या १४९,१ ०,३८६,४३१
लोकबिन्दुसार १२२
लोभ ३ ०

व

वक्ता ११०
वचन ३०८
वन्दना ०७
वस्तु १७४
वाग्गुप्ति ११६
वाग्योग २७० ०८
वायुकायिक २७३
विक्षेपणी १०१
विक्रिया २९१
विग्रहगति २९९

विद्यानुवाद १२१
विपाकसूत्र १०७
विभंगज्ञान ३ ८
विष्णु ११९
वीर्यानुप्रवाद १११
वृत्ति १३७ १४८
वेद ११९ १४०,१४१
वेदक ३०८
वेदकसम्यग्दृष्टि १७१
वेदकसम्यक्त्व ३९१
वेदनाकृत्स्नप्राभृत १२१
वैक्रियिक २०१
वैक्रियिककाययोग २०१
वैक्रियिकमिश्रकाययोग २०१ २०२
व्यवहार ८४
व्याख्याप्रज्ञप्ति १०१,११०
व्यञ्जननय ८६
व्यञ्जनावग्रह ३११

श

शब्दनय ८७
शब्दमदीचार २३९
शरीरपर्याप्ति २५१
शरीरी १२०
शुक्ललेश्या ३९०
श्रुतज्ञान ९३ ३१७ ३१९
श्रुताज्ञान ३ ८
श्रोत्र २४७

स

संक्षिप्तमंगल
सत्ता
सत्यप्रवाद १२०
सत्यमन ११६
सत्यमनोयोग २८१
सत्यमोषमनोयोग २८० २८१
सदनुयोग २८०,२८१
सद्भावस्थापना ११८
समभिरूढ २०
समवसरण ८
११८

४३३	२	दसण	,,	,,	सण्णाओ	,,
४३६	३	अत्थि	,,	,,	णत्थि	,,
४३६	१०	-दयाण सद्दि	,,	,,	-दयो णस्सदि	,,
४३८	४	-माण-	,,	,,	-माया-	,,
४४३	२	णिव्वत्त-	,,	णिव्वत्त	,,	,,
४४४	५	भवति	हवति	भवति		भणति
४४४	७	भवति	हवति	भवति		,,
४४६	२	अत्थि	णत्थि	,		,,
४४७	३	लेघ-	णेव-	सेव-		लेर-
४४८	८	करणेत्ति	,,	,,	सण्णेत्ति	कण्हेति
४५३	३	णाण	,,	,,	,,	अण्णाण
४५८	३	पज्ज०	,,	अपज्जत्तीओ		,,
४५९	४	काउसुक्क-	,,	,,		काउ-
४६०	१	काउसुक्क-	,,	,,		काउ-
४६०	८	पज्ज०	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७०	२	तदिय—	,,	,,	पच तदिय—	,
४७०	३	इंदियाण	,,	,,		इंदयाण
४७१	१	पदो ओदो	,,	पदाओ दो		,,
४७१	४	पंचिंदिय-अपज्जत्ता				पंचिंदियतिरिक्ख अपज्जत्ता
४७१	८	अणाहारिणो	,,	,		आहारिणो
४७६	८	सत्त पाण	,,	,,	दस पाण सत्त पाण	,,
४७८	२	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७८	६	सम्मामिच्छाइट्ठीण	सम्माइट्ठीण ,,		सम्मामिच्छाइट्ठीण	,,
४८१	३	-उजमाण	-अमाणाण उजमाण			-उजमाण
४८०	७	पंचिंदियतिरिक्खाण	पंचिंदियति- रिक्खअपज्जत्ताणं	पंचिंदियतिरिक्ख०		पंचिंदिय-तिरिक्खाण
४८५	७	×	खइयसम्मत्त	खइयसम्माइट्ठी	खइयसम्मत्त	,
४८८	७	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो
४९२	७	णव पाण	,,	,,		णव पाण सत्त पाण
४९३	४	दव्वभावेहि	दव्वभावेण	दव्वभावेहि		,,
४९८	२	असण्णिणीओ	,,	,,	सण्णिणीओ	,,
४९८	७	-काउसुक्कलेस्साणि	-काउसुक्कलेस्साओ	-काउसुक्कले		काउलेस्साओ
५००	८	सत्त पाण	,,	,, सत्त पाण २		सत्त पाण सत्त पाण
५०८	५	अजोगी	अजोगो	,,		,,
५०२	३	असण्णिणो वि अत्थि	असण्णिणो अणुभया वा	असण्णिणो वि अत्थि		णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि

५०४	४	पञ्च णाण केवलणाणेण छ णाण	पञ्च णाण केवलणाणेण विणा छ णाण	मणपज्जयकेवल णाणेण विणा छ णाण		पच णाण केवलणाणेण छ णाण
५१०	९	पज्ज-	"	"	अपज्ज-	अपज्जत्तीओ
५११	६	-लेस्साओ	"	"		-लेस्सादि
५१२	४	सागार० होंति अणा० वा	"	सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५१२	५	सम्मत्तसजदप्पहुडि	"	"	पमत्तसजदप्पहुडि	"
५१३	७	वेदोवि	"	,		-वेदे वि
५१५	४	तासिं	तस्सेव	तासिं		"
५१५	५	पज्जत्तीओ	,	"		अपज्जत्तीओ
५१५	६	×	×	×	चत्तारि कसाय	"
५१८	८	सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा	सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा	सागार अणागारेहिं अणुभओ वा।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५२८	२	मणुसिणी-उवसंत	मणुसिणीसु-उवसंत	"		"
५३०	६	णेव सण्णिणीओ	"	"		णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ,
५३१	५	देवगदीए	देवगदीण	देवगदीए		देवगदीए
५३२	६	पद ण घडदे	पद घडदे	पद ण घडदे		"
५३३	१	णीलायण- णीलगुलिय-	णीलायण- णीलगुणिय-	णीलायण- णीलगुलिय-		णीला पुण णीलगुलिय-
५३३	३	पउयसवण्णा	"	,	पउमसवण्णा	"
५३३	६	सुचिन्तु	सुचित्तु	,		सुचिन्तु
५३३	७	लेस्साण	-लेस्साइ	लेस्साण		-लेस्साण
५३५	१	भावदो	,	,	भावदो	
५३९	,	दो गदि				
५४२	७	प ज्ज-				देवगदी
५४	२	आहारिणा अणाहारिणो				अपज्ज-
५ २		पज्जत्तीओ		,		आहारिणो
५५४	७	प ज्जत्तीओ		,		अपज्जत्तीओ
५५५	४	णाण		,	अण्णाण	अपज्जत्तीओ
५५	५	दव्वेण काउ सुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउ लेस्सा भावेण मज्झिमा तेउ लेस्साओ	दव्वेण काउसुक्क० मज्झिमा तेउले० भावेण ।		दव्वेण काउ-सुक्क मज्झिम-तेउलेस्सा भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा।

		कालोद-			कावोद-	,,
६५४	७	-केवलि	,,	,,	,,	केवलिस्स
६५८	४	अयोग-	,,	,,		आयु
६५९	७	समणा	सभणा	समणा	समत्तो	समणा
६६०	५	पवध-	,,	,,	वध-	,,
६६९	६	विरहाकालाव-	,	,,	विरहकालोव-	,,
६७२	८	तजहा णेदव्वा	तम्हा णेदव्वा	जजहा णेदव्वा	जहा मूलोघो णीदो त जहा णेदव्वा	जहा मूलोघो णादो तहा णेदव्वा
६८४	८	सण्णिणो	,,	,,	,,	सण्णिणो असण्णिणो
७००	१	अणिंदियत्त	अणियट्टियत्त	अणियट्टित्त पि अत्थि		अणिंदियत्त
७००	२	छ लेस्साओ	,,	,	अलेस्साओ	,,
७००	७	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
७१२	१०	मुण मए	,,	,,	माण-माया-	,,
७१३	३	×	१०४२१	×		×
७२६	७	-णाणाण वत्तव्वाण	,,	,,	-णाणाणि वत्तव्वाणि	,,
७२६	८	तिण्णि	,,	,,	तेण	,,
७२७	१	इयकेसु सत्तीसु	,,	,,	इयरेसु संतेसु	,,
७२७	२	-विवक्खियणाण-	,,	,,	,,	विवक्खियणाण-
७२७	७	-त पिच्छायद-	,,	,,	-तं पच्छायद-	-सप डायद-
७३०	४	मूलोघोव्व	मूलोघोव्व	मूलोघो		मूलोघो व्व
७३३	७	विवट्टिदो वट्टावण-	,,	,,	एव छेदोवट्टावण-	,,
७ ०	१	खीणसण्णाणिओ	,,	खीणकसाओ		,,
७०१	२	किण्ह-णील काउलेस्साओ	किण्णलेस्साओ	किण्ण णील०		किण्हलेस्सा
७ ४	२	मायेण विपर्य	मायेण छ लेस्साओ	,,		मायेण किण्हलेस्सा
७६३	७	पंचिंदियजादि	,,	,	एव जादीओ	,,
७३८	४	×	णिट्टियाए	×	णिण्याए	,,
७०४	६	तिव्व सद्दार्प	,,	,,	तिव्वलोहाण	,,
८०१	४	अजोगि-केवलि	जोगि-केवलि	अजोगिकेवलि	×	अजोगिकेवलि
८०१	५	अप्पलेस्साण	,,	,,		अलेस्साणं
८१६	८	वेदगसम्माइट्ठि पमुहि	,,	,,	वदगसम्माइट्ठि पमत्त-	,,

८२२	७	ओरालिय	"	ओयारिय	"	
८२२	८	तदुप्पत्तिहि	तदुप्पत्तीहि	"	तदुप्पत्ति	"
८२२	९	भया-	भया-	"	सभया-	"
८२३	१	पाच्छगद-	"	पछागद		पच्छागद-
८२३	२	पडियज्जति	"	"	पडियज्जति	"
८२३	३	उपसघाइद-	उपसद्यारिद-	"		"
८२४	३	तदो उदिण्णाणं	"	"	तत्तो ओदिण्णाण	"
८२५	९	-सेसपज्जाणे	"	"	सेसय आणे	"
		पसत्था	"	"	पसत्थो	"
		पसत्था			पसत्थो	
८२९	६	सासणसम्मा-	"	"		"
८३४	४	चत्तारि जोग सच्चजोगो	चत्तारि जोग असच्चमो सच्चजोगो	चत्तारि जोग सच्च जोगो		सण्णिसासणसम्मा- चत्तारि जोग असच्चमोसवचि जोगो

४ प्रतियोंमें छूटे हुए पाठ

पृ०	पंक्ति	प्रति	कहांसे	कहांतक
४१	३	अ		ओरालियकायजोगो
४६५	३	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
५०८	७	अ		अणागारुवजुत्ता वा।
५२४	७	आ	मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीण	अणागारुवजुत्ता वा।
५२९	१	आ	मणुसिणी पंचिंदिय-	केवलदंसण
५४३	६	आ	दव्वेण छ लेस्साओ	खइयसम्मत्तेण विणा
५४४	७	आ	×	अणागारुवजुत्ता वा।
५६०	७	क	तेसिं चेव पज्जत्ताणं	आलावो वत्तव्वो
५६३	१०	अ आ क	पयमित्थिपुरिस-	पम्मलेस्सा
५६६	३	अ	पज्जत्तकाले	का तत्थ
५७०	०	अ आ क	मिच्छाइट्ठीण- भायेण	काउलेस्सा
५७८	५	अ क		तसकाओ
५८६	३	अ आ क		सत्त पाण
५९२	५	अ आ	तसकाइया	विपर्क्षिदिया त्ति

६००	५	क	पइंदियजादि आदी	अवगदवेदो वि अत्थि,
६३०	५	अ आ क	तिण्णि अण्णाण	चत्तारि कसाय,
६३९	७	अ आ क	असच्चमोस-	णवरि
६४४	९	अ	कवाडगद-	चेव भवदि,
६५६	३	आ	ओरालियमिस्सकायजोगि	तसकाओ,
६६२	१	क	वेउव्वियकायजोगि-	अणागारुवजुत्ता वा।
६७८	१	अ	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
६८७	३	अ	तेसिं चेव अपज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
६९८	५	अ आ क	दो जीवसमासा	-समासो वि अत्थि
७०४	९	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
७०९	७	अ आ क	मणुसगदी	कोधकसाओ,
७१२	४	आ	कोधकसाय विदिय-	अणागारुवजुत्ता वा।
७१२	१०	अ	लोभकसायस्स	वत्तव्वो
७१४	१	अ आ क	सागार-	-दुवजुत्ता वा।
७१६	४	अ आ क		चत्तारि गदीओ
७१८	६	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७३६	३	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
७४०	१	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७५५	४	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७६८	४	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ
७६९	२	आ	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
७७९	३	अ आ	तेउलेस्सा-अप-	अणागारुवजुत्ता वा।
७८४	१	अ	सागारुव-	-रुवजुत्ता वा।
७८४	२	क	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
७८५	८	अ आ क	तिण्णि णाणाणि	असजमो,
८१६	८	अ	वेदकसम्माइट्ठि-पमत्त	अणागारुवजुत्ता वा।
८१७	३	अ	वेदकसम्माइट्ठि-अप्प-	अणागारुवजुत्ता वा।
			अणाहारि-असजद-	अणागारुवजुत्ता वा।